Holy Bible

Aionian Edition®

उर्दू बाइबिल, देवनागरी

Urdu Bible, Devanagari

Gospel Primer

फहरीस्त

तारुफ
पैदाइश 1-4
यूहन्ना 1-21
मुकाशफ़ा 1-4
66 Verses
रीडर्स गाईड
लगत
नक्शे
मुक़र्रर
मिसाल, Doré

Welcome to the *Gospel Primer*. Thank you for your interest in the *Holy Bible Aionian Edition* ®, found at AionianBible.org. The Aionian Bible project invites you to reconsider popular Christian understanding. It may seem utterly ridiculous to suggest that the most well-known verse in the history of Christianity, John 3:16, was improperly translated. And it may seem preposterous to propose that a destiny of Heaven or Hell is not the complete picture. Yet have we or our forefathers ever carried ignorance and errors along for centuries in the past? We have. Even so, the Aionian Bible project does not abandon tradition or Christian heritage. We have much to learn from the belief and practice of godly men and women throughout all ages. And this booklet is a primer to the good news of Jesus Christ, the savior of all mankind.

Holy Bible Aionian Edition ®

उर्दू बाइबिल, देवनागरी
Urdu Bible, Devanagari
Gospel Primer

Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0 International, 2018-2024
Source text: eBible.org
Source version: 10/1/2024
Source copyright: Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0
Bridge Connectivity Solutions, 2017

Formatted by Speedata Publisher 4.19.26 (Pro) on 10/14/2024
100% Free to Copy and Print
TOR Anonymously
https://AionianBible.org

Published by Nainoia Inc
https://Nainoia-Inc.signedon.net

We pray for a modern Creative Commons translation in every language
Translator resources at https://AionianBible.org/Third-Party-Publisher-Resources
Report content and format concerns to Nainoia Inc
Volunteer help is welcome and appreciated!

तारुफ

उर्दू at AionianBible.org/Preface

The *Holy Bible Aionian Edition* ® is the world's first Bible *un-translation*! What is an *un-translation*? Bibles are translated into each of our languages from the original Hebrew, Aramaic, and Koine Greek. Occasionally, the best word translation cannot be found and these words are transliterated letter by letter. Four well known transliterations are *Christ*, *baptism*, *angel*, and *apostle*. The meaning is then preserved more accurately through context and a dictionary. The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven additional Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies.

The first three words are *aiōn*, *aiōnios*, and *aïdios*, typically translated as *eternal* and also *world* or *eon*. The Aionian Bible is named after an alternative spelling of *aiōnios*. Consider that researchers question if *aiōn* and *aiōnios* actually mean *eternal*. Translating *aiōn* as *eternal* in Matthew 28:20 makes no sense, as all agree. The Greek word for *eternal* is *aïdios*, used in Romans 1:20 about God and in Jude 6 about demon imprisonment. Yet what about *aiōnios* in John 3:16? Certainly we do not question whether salvation is eternal! However, *aiōnios* means something much more wonderful than infinite time! Ancient Greeks used *aiōn* to mean *eon* or *age*. They also used the adjective *aiōnios* to mean *entirety*, such as *complete* or even *consummate*, but never infinite time. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs. So *aiōnios* is the perfect description of God's Word which has *everything* we need for life and godliness! And the *aiōnios* life promised in John 3:16 is not simply a ticket to eternal life in the future, but the invitation through faith to the *consummate* life beginning now!

The next seven words are *Sheol*, *Hadēs*, *Geenna*, *Tartaroō*, *Abyssos*, and *Limnē Pyr*. These words are often translated as *Hell*, the place of eternal punishment. However, *Hell* is ill-defined when compared with the Hebrew and Greek. For example, *Sheol* is the abode of deceased believers and unbelievers and should never be translated as *Hell*. *Hadēs* is a temporary place of punishment, Revelation 20:13-14. *Geenna* is the Valley of Hinnom, Jerusalem's refuse dump, a temporal judgment for sin. *Tartaroō* is a prison for demons, mentioned once in 2 Peter 2:4. *Abyssos* is a temporary prison for the Beast and Satan. Translators are also inconsistent because *Hell* is used by the King James Version 54 times, the New International Version 14 times, and the World English Bible zero times. Finally, *Limnē Pyr* is the Lake of Fire, yet Matthew 25:41 explains that these fires are prepared for the Devil and his angels. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The eleventh word, *eleēsē*, reveals the grand conclusion of grace in Romans 11:32. Take the time to understand these eleven words. The original translation is unaltered and a highlighted note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. To help parallel study and Strong's Concordance use, apocryphal text is removed and most variant verse numbering is mapped to the English standard. We thank our sources at eBible.org, Crosswire.org, unbound.Biola.edu, Bible4u.net, and NHEB.net. The Aionian Bible is copyrighted with creativecommons.org/licenses/by/4.0, allowing 100% freedom to copy and print, if respecting source copyrights. Check the Reader's Guide and read online at AionianBible.org, with Android, and TOR network. Why purple? King Jesus' Word is royal… and purple is the color of royalty!

चुनाँचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग — ए — 'अदन के मशरिक़ की तरफ़ करूबियों को और चारों तरफ़ घूमने वाली शो'लाज़न तलवार को रख्खा, कि वह ज़िन्दगी के दरख़्त की राह की हिफ़ाज़त करें।

पैदाइश 3:24

पैदाइश

1 ख़ुदा ने सबसे पहले ज़मीन — ओ — आसमान को पैदा किया।
2 और ज़मीन वीरान और सुनसान थी और गहराओ के ऊपर
अँधेरा था: और ख़ुदा की रूह पानी की सतह पर जुम्बिश करती थी।
3 और ख़ुदा ने कहा कि रोशनी हो जा, और रोशनी हो गई। 4 और
ख़ुदा ने देखा कि रोशनी अच्छी है, और ख़ुदा ने रोशनी को अँधेरे से
जुदा किया। 5 और ख़ुदा ने रोशनी को तो दिन कहा और अँधेरे को
रात। और शाम हुई और सुबह हुई तब पहला दिन हुआ। 6 और
ख़ुदा ने कहा कि पानियों के बीच फ़ज़ा हो ताकि पानी, पानी से जुदा
हो जाए। 7 फिर ख़ुदा ने फ़ज़ा को बनाया और फ़ज़ा के नीचे के
पानी को फ़ज़ा के ऊपर के पानी से जुदा किया; और ऐसा ही हुआ।
8 और ख़ुदा ने फ़ज़ा को आसमान कहा। और शाम हुई और सुबह
हुई — तब दूसरा दिन हुआ। 9 और ख़ुदा ने कहा कि आसमान के
नीचे का पानी एक जगह जमा हो कि ख़ुश्की नज़र आए, और ऐसा
ही हुआ। 10 और ख़ुदा ने ख़ुश्की को ज़मीन कहा और जो पानी
जमा हो गया था उसको समुन्दर; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है।
11 और ख़ुदा ने कहा कि ज़मीन घास और बीजदार बूटियों को, और
फलदार दरख़्तों को जो अपनी — अपनी क़िस्म के मुताबिक़ फलें
और जो ज़मीन पर अपने आप ही में बीज रख्खें उगाए और ऐसा ही
हुआ। 12 तब ज़मीन ने घास, और बूटियों को, जो अपनी —
अपनी क़िस्म के मुताबिक़ बीज रख्खें और फलदार दरख़्तों को
जिनके बीज उन की क़िस्म के मुताबिक़ उनमें हैं उगाया; और ख़ुदा
ने देखा कि अच्छा है। 13 और शाम हुई और सुबह हुई — तब
तीसरा दिन हुआ। 14 और ख़ुदा ने कहा कि फ़लक पर सितारे हों
कि दिन को रात से अलग करें; और वह निशान और ज़मानो और
दिनों और बरसों के फ़र्क़ के लिए हों। 15 और वह फ़लक पर
रोशनी के लिए हों कि ज़मीन पर रोशनी डालें, और ऐसा ही हुआ।
16 फिर ख़ुदा ने दो बड़े चमकदार सितारे बनाए; एक बड़ा चमकदार
सितारा, कि दिन पर हुक्म करे और एक छोटा चमकदार सितारा
कि रात पर हुक्म करे और उसने सितारों को भी बनाया। 17 और
ख़ुदा ने उनको फ़लक पर रख्खा कि ज़मीन पर रोशनी डालें, 18
और दिन पर और रात पर हुक्म करें, और उजाले को अन्धेरे से
जुदा करें; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है। 19 और शाम हुई और
सुबह हुई — तब चौथा दिन हुआ। 20 और ख़ुदा ने कहा कि पानी
जानदारों को कसरत से पैदा करे, और परिन्दे ज़मीन के ऊपर फ़ज़ा
में उड़ें। 21 और ख़ुदा ने बड़े बड़े दरियाई जानवरों को, और हर
क़िस्म के जानदार को जो पानी से बकसरत पैदा हुए थे, उनकी
क़िस्म के मुताबिक़ और हर क़िस्म के परिन्दों को उनकी क़िस्म
के मुताबिक़, पैदा किया; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है। 22
और ख़ुदा ने उनको यह कह कर बरकत दी कि फलो और बढ़ो
और इन समुन्दरों के पानी को भर दो, और परिन्दे ज़मीन पर बहुत
बढ़ जाएँ। 23 और शाम हुई और सुबह हुई — तब पाँचवाँ दिन
हुआ। 24 और ख़ुदा ने कहा कि ज़मीन जानदारों को, उनकी क़िस्म
के मुताबिक़, चौपाये और रेंगनेवाले जानदार और जंगली जानवर
उनकी क़िस्म के मुताबिक़ पैदा करे, और ऐसा ही हुआ। 25 और
ख़ुदा ने जंगली जानवरों और चौपायों को उनकी क़िस्म के मुताबिक़
और ज़मीन के रेंगने वाले जानदारों को उनकी क़िस्म के मुताबिक़
बनाया; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है। 26 फिर ख़ुदा ने कहा कि
हम इंसान को अपनी सूरत पर अपनी शबीह की तरह बनाएँ और वह
समुन्दर की मछलियों और आसमान के परिन्दों और चौपायों, और
तमाम ज़मीन और सब जानदारों पर जो ज़मीन पर रेंगते हैं इख़्तियार
रख्खें। 27 और ख़ुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर पैदा किया ख़ुदा
की सूरत पर उसको पैदा किया — नर — ओ — नारी उनको पैदा
किया। 28 और ख़ुदा ने उनको बरकत दी और कहा कि फलो और
बढ़ो और ज़मीन को भर दो और हुकूमत करो और समुन्दर की
मछलियों और हवा के परिन्दों और कुल जानवरों पर जो ज़मीन
पर चलते हैं इख़्तियार रख्खो। 29 और ख़ुदा ने कहा कि देखो, मैं
तमाम रू — ए — ज़मीन की कुल बीजदार सब्ज़ी और हर दरख़्त
जिसमें उसका बीजदार फल हो, तुम को देता हूँ; यह तुम्हारे खाने को
हों। 30 और ज़मीन के कुल जानवरों के लिए, और हवा के कुल
परिन्दों के लिए और उन सब के लिए जो ज़मीन पर रेंगने वाले हैं
जिनमें ज़िन्दगी का दम है, कुल हरी बूटियाँ खाने को देता हूँ, और
ऐसा ही हुआ। 31 और ख़ुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नज़र
की, और देखा कि बहुत अच्छा है, और शाम हुई और सुबह हुई तब
छठा दिन हुआ।

2 तब आसमान और ज़मीन और उनके कुल लश्कर का बनाना
ख़त्म हुआ। 2 और ख़ुदा ने अपने काम को, जिसे वह करता था
सातवें दिन ख़त्म किया, और अपने सारे काम से जिसे वह कर रहा
था, सातवें दिन फ़ारिग़ हुआ। 3 और ख़ुदा ने सातवें दिन को बरकत
दी, और उसे मुक़द्दस ठहराया; क्यूँकि उसमें ख़ुदा सारी कायनात से
जिसे उसने पैदा किया और बनाया फ़ारिग़ हुआ। 4 यह है आसमान
और ज़मीन की पैदाइश, जब वह पैदा हुए जिस दिन ख़ुदावन्द ख़ुदा
ने ज़मीन और आसमान को बनाया; 5 और ज़मीन पर अब तक खेत
का कोई पौधा न था और न मैदान की कोई सब्ज़ी अब तक उगी
थी, क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा ने ज़मीन पर पानी नहीं बरसाया था, और
न ज़मीन जोतने को कोई इंसान था। 6 बल्कि ज़मीन से कुहर उठती
थी, और तमाम रू — ए — ज़मीन को सेराब करती थी। 7 और
ख़ुदावन्द ख़ुदा ने ज़मीन की मिट्टी से इंसान को बनाया और उसके
नथनों में ज़िन्दगी का दम फूंका इंसान जीती जान हुआ। 8 और

ख़ुदावन्द ख़ुदा ने मशरिक़ की तरफ़ अदन में एक बाग़ लगाया और
इंसान को जिसे उसने बनाया था वहाँ रख्खा। 9 और ख़ुदावन्द ख़ुदा
ने हर दरख़्त को जो देखने में ख़ुशनुमा और खाने के लिए अच्छा था
ज़मीन से उगाया और बाग़ के बीच में ज़िन्दगी का दरख़्त और भले
और बुरे की पहचान का दरख़्त भी लगाया। 10 और अदन से एक
दरिया बाग़ के सेराब करने को निकला और वहाँ से चार नदियों में
तक़सीम हुआ। 11 पहली का नाम फ़ैसून है जो हवीला की सारी
ज़मीन को जहाँ सोना होता है घेरे हुए है। 12 और इस ज़मीन का
सोना चोखा है। और वहाँ मोती और संग-ए-सुलेमानी भी हैं। 13
और दूसरी नदी का नाम जैहून है, जो कूश की सारी ज़मीन को घेरे
हुए है। 14 और तीसरी नदी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़
को जाती है। और चौथी नदी का नाम फ़रात है। 15 और ख़ुदावन्द
ख़ुदा ने आदम को लेकर बाग़ — ए — 'अदन में रखखा के उसकी
बाग़वानी और निगहबानी करे। 16 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम को
हुक्म दिया और कहा कि तू बाग़ के हर दरख़्त का फल बे रोक टोक
खा सकता है। 17 लेकिन भले और बुरे की पहचान के दरख़्त का
कभी न खाना क्यूँकि जिस रोज़ तूने उसमें से खायेगा तू मर जायेगा।
18 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने कहा कि आदम का अकेला रहना अच्छा
नहीं मैं उसके लिए एक मददगार उसकी तरह बनाऊँगा। 19 और
ख़ुदावन्द ख़ुदा ने सब जंगली जानवर और हवा के सब परिन्दे मिट्टी
से बनाए और उनको आदम के पास लाया कि देखे कि वह उनके
क्या नाम रखता है और आदम ने जिस जानवर को जो कहा वही
उसका नाम ठहरा। 20 और आदम ने सब चौपायों और हवा के
परिन्दों और सब जंगली जानवरों के नाम रख्खे लेकिन आदम के
लिए कोई मददगार उसकी तरह न मिला। 21 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने
आदम पर गहरी नींद भेजी और वह सो गया और उसने उसकी
पसलियों में से एक को निकाल लिया और उसकी जगह गोश्त भर
दिया। 22 और ख़ुदावन्द ख़ुदा उस पसली से जो उसने आदम में से
निकाली थी एक 'औरत बना कर उसे आदम के पास लाया। 23
और आदम ने कहा कि यह तो अब मेरी हड्डियों में से हड्डी, और मेरे
गोश्त में से गोश्त है; इसलिए वह 'औरत कहलाएगी क्यूँकि वह मर्द
से निकाली गई। 24 इसलिए आदमी अपने माँ बाप को छोड़ेगा और
अपनी बीवी से मिला रहेगा और वह एक तन होंगे। 25 और आदम
और उसकी बीवी दोनों नंगे थे और शरमाते न थे।

3 और साँप सब जंगली जानवरों से, जिनको ख़ुदावन्द ख़ुदा ने
बनाया था चालाक था, और उसने 'औरत से कहा क्या वाक़'ई
ख़ुदा ने कहा है, कि बाग़ के किसी दरख़्त का फल तुम न खाना? 2
'औरत ने साँप से कहा कि बाग़ के दरख़्तों का फल तो हम खाते हैं।
3 लेकिन जो दरख़्त बाग़ के बीच में है उसके फल के बारे में ख़ुदा ने
कहा है कि तुम न तो उसे खाना और न छूना वरना मर जाओगे।
4 तब साँप ने 'औरत से कहा कि तुम हरगिज़ न मरोगे! 5 बल्कि
ख़ुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल
जाएँगी, और तुम ख़ुदा की तरह भले और बुरे के जानने वाले बन
जाओगे। 6 'औरत ने जो देखा कि वह दरख़्त खाने के लिए अच्छा
और आँखों को ख़ुशनुमा मा'लूम होता है और अक्ल बख़्शने के
लिए ख़ूब है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर
को भी दिया और उसने खाया। 7 तब दोनों की आँखें खुल गई और
उनको मा'लूम हुआ कि वह नंगे हैं और उन्होंने अंजीर के पत्तों को
सी कर अपने लिए लूंगियाँ बनाई। 8 और उन्होंने ख़ुदावन्द ख़ुदा
की आवाज़ जो ठंडे वक़्त बाग़ में फिरता था सुनी और आदम और
उसकी बीवी ने अपने आप को ख़ुदावन्द ख़ुदा के सामने से बाग़ के
दरख़तों में छिपाया। 9 तब ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम को पुकारा
और उससे कहा कि तू कहाँ है? 10 उसने कहा, मैंने बाग़ में तेरी
आवाज़ सुनी और मैं डरा क्यूँकि मैं नंगा था और मैंने अपने आप को
छिपाया। 11 उसने कहा, तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने
उस दरख़्त का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझ को हुक्म दिया था
कि उसे न खाना? 12 आदम ने कहा कि जिस 'औरत को तूने मेरे
साथ किया है उसने मुझे उस दरख़्त का फल दिया और मैंने खाया।
13 तब ख़ुदावन्द ख़ुदा ने, 'औरत से कहा कि तूने यह क्या किया?
'औरत ने कहा कि साँप ने मुझ को बहकाया तो मैंने खाया। 14 और
ख़ुदावन्द ख़ुदा ने साँप से कहा, इसलिए कि तूने यह किया तू सब
चौपायों और जंगली जानवरों में ला'नती ठहरा; तू अपने पेट के
बल चलेगा, और अपनी उम्र भर खाक चाटेगा। 15 और मैं तेरे
और 'औरत के बीच और तेरी नसल और औरत की नसल के बीच
'अदावत डालूँगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उसकी एड़ी पर
काटेगा। 16 फिर उसने 'औरत से कहा कि मैं तेरे दर्द — ए — हम्ल
को बहुत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रग़बत
अपने शौहर की तरफ़ होगी और वह तुझ पर हुकूमत करेगा। 17
और आदम से उसने कहा चूँकि तूने अपनी बीवी की बात मानी और
उस दरख़्त का फल खाया जिस के बारे मैंने तुझे हुक्म दिया था कि
उसे न खाना इसलिए ज़मीन तेरी वजह से ला'नती हुई। मशक़्क़त के
साथ तू अपनी उम्र भर उसकी पैदावार खाएगा 18 और वह तेरे लिए
काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी और तू खेत की सब्ज़ी खाएगा। 19 तू
अपने मुँह के पसीने की रोटी खाएगा जब तक कि ज़मीन में तू फिर
लौट न जाए इसलिए कि तू उससे निकाला गया है क्यूँकि तू ख़ाक है
और ख़ाक में फिर लौट जाएगा। 20 और आदम ने अपनी बीवी का
नाम हव्वा रख्खा, इसलिए कि वह सब ज़िन्दों की माँ है। 21 और
ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए चमड़े के कुर्ते
बना कर उनको पहनाए। 22 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने कहा, देखो
इंसान भले और बुरे की पहचान में हम में से एक की तरह हो गया:

अब कहीं ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाए और ज़िन्दगी के
दरख़्त से भी कुछ लेकर खाए और हमेशा ज़िन्दा रहे। 23 इसलिए
ख़ुदावन्द ख़ुदा ने उसको बाग — ए — 'अदन से बाहर कर दिया,
ताकि वह उस ज़मीन की जिसमें से वह लिया गया था, खेती करे।
24 चुनाँचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग — ए — 'अदन
के मशरिक़ की तरफ़ करूबियों को और चारों तरफ़ घूमने वाली
शो'लाज़न तलवार को रख्खा, कि वह ज़िन्दगी के दरख़्त की राह
की हिफ़ाज़त करें।

4 और आदम अपनी बीवी हव्वा के पास गया, और वह हामिला
हुई और उसके क़ाइन पैदा हुआ। तब उसने कहा, मुझे ख़ुदावन्द
से एक फ़र्ज़न्द मिला। 2 फिर क़ाइन का भाई हाबिल पैदा हुआ;
और हाबिल भेड़ बकरियों का चरवाहा और क़ाइन किसान था।
3 कुछ दिन के बाद ऐसा हुआ कि क़ाइन अपने खेत के फल का
हदिया ख़ुदावन्द के लिए लाया। 4 और हाबिल भी अपनी भेड़
बकरियों के कुछ पहलौठे बच्चों का और कुछ उनकी चर्बी का
हदिया लाया। और ख़ुदावन्द ने हाबिल को और उसके हदिये को
क़ुबूल किया, 5 लेकिन क़ाइन को और उसके हदिये को क़ुबूल न
किया। इसलिए क़ाइन बहुत ग़ुस्सा हुआ और उसका मुँह बिगड़ा। 6
और ख़ुदावन्द ने क़ाइन से कहा, तू क्यूँ ग़ुस्सा हुआ? और तेरा मुँह
क्यूँ बिगड़ा हुआ है? 7 अगर तू भला करे तो क्या तू मक़्बूल न
होगा? और अगर तू भला न करे तो गुनाह दरवाज़े पर दुबका बैठा है
और तेरा मुश्ताक़ है, लेकिन तू उस पर ग़ालिब आ। 8 और क़ाइन ने
अपने भाई हाबिल को कुछ कहा और जब वह दोनों खेत में थे तो
ऐसा हुआ कि क़ाइन ने अपने भाई हाबिल पर हमला किया और
उसे क़त्ल कर डाला। 9 तब ख़ुदावन्द ने क़ाइन से कहा कि तेरा
भाई हाबिल कहाँ है? उसने कहा, मुझे मा'लूम नहीं; क्या मैं अपने
भाई का मुहाफ़िज़ हूँ? 10 फिर उसने कहा कि तूने यह क्या किया?
तेरे भाई का ख़ून ज़मीन से मुझ को पुकारता है। 11 और अब तू
ज़मीन की तरफ़ से ला'नती हुआ, जिसने अपना मुँह पसारा कि
तेरे हाथ से तेरे भाई का ख़ून ले। 12 जब तू ज़मीन को जोतेगा, तो
वह अब तुझे अपनी पैदावार न देगी और ज़मीन पर तू ख़ानाख़राब
और आवारा होगा। 13 तब क़ाइन ने ख़ुदावन्द से कहा कि मेरी
सज़ा बर्दाश्त से बाहर है। 14 देख, आज तूने मुझे रू — ए —
ज़मीन से निकाल दिया है, और मैं तेरे सामने से ग़ायब हो जाऊँगा;
और ज़मीन पर खानाख़राब और आवारा रहूँगा, और ऐसा होगा कि
जो कोई मुझे पाएगा क़त्ल कर डालेगा। 15 तब ख़ुदावन्द ने उसे
कहा, नहीं, बल्कि जो क़ाइन को क़त्ल करे उससे सात गुना बदला
लिया जाएगा। और ख़ुदावन्द ने क़ाइन के लिए एक निशान ठहराया
कि कोई उसे पा कर मार न डाले। 16 इसलिए, क़ाइन ख़ुदावन्द
के सामने से निकल गया और अदन के मशरिक़ की तरफ़ नूद के
इलाक़े में जा बसा। 17 और क़ाइन अपनी बीवी के पास गया और
वह हामिला हुई और उसके हनूक पैदा हुआ; और उसने एक शहर
बसाया और उसका नाम अपने बेटे के नाम पर हनूक रख्खा। 18
और हनूक से ईराद पैदा हुआ, और ईराद से महूयाएल पैदा हुआ,
और महूयाएल से मतूसाएल पैदा हुआ, और मतूसाएल से लमक
पैदा हुआ। 19 और लमक दो औरतें ब्याह लाया: एक का नाम
अदा और दूसरी का नाम ज़िल्ला था। 20 और अदा के याबल पैदा
हुआ: वह उनका बाप था जो ख़ेमों में रहते और जानवर पालते
हैं। 21 और उसके भाई का नाम यूबल था: वह बीन और बांसली
बजाने वालों का बाप था। 22 और ज़िल्ला के भी तूबलक़ाइन पैदा
हुआ: जो पीतल और लोहे के सब तेज़ हथियारों का बनाने वाला
था; और नामा तूबलक़ाइन की बहन थी। 23 और लमक ने अपनी
बीवियों से कहा कि ऐ अदा और ज़िल्ला मेरी बात सुनो; ऐ लमक
की बीवियो, मेरी बात पर कान लगाओ: मैंने एक आदमी को जिसने
मुझे ज़ख़्मी किया, मार डाला। और एक जवान को जिसने मेरे चोट
लगाई, क़त्ल कर डाला। 24 अगर क़ाइन का बदला सात गुना
लिया जाएगा, तो लमक का सत्तर और सात गुना। 25 और आदम
फिर अपनी बीवी के पास गया और उसके एक और बेटा हुआ और
उसका नाम सेत रख्खा: और वह कहने लगी कि ख़ुदा ने हाबिल के
बदले जिसको क़ाइन ने क़त्ल किया, मुझे दूसरा फ़र्ज़न्द दिया। 26
और सेत के यहाँ भी एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम उसने अनूस
रख्खा; उस वक़्त से लोग यहोवा का नाम लेकर दुआ करने लगे।

ईसा ने कहा, "ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्यूँकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।"
उन्हों ने पर्ची डाल कर उस के कपड़े आपस में बाँट लिए।
लूक़ा 23:34

यूहन्ना

1 इब्तिदा में कलाम था, और कलाम ख़ुदा के साथ था, और कलाम ही ख़ुदा था। 2 यही शुरू में ख़ुदा के साथ था। 3 सब चीज़ें उसके वसीले से पैदा हुईं, और जो कुछ पैदा हुआ है उसमें से कोई चीज़ भी उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। 4 उसमें ज़िन्दगी थी और वो ज़िन्दगी आदमियों का नूर थी। 5 और नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उसे क़ुबूल न किया। 6 एक आदमी युहन्ना नाम आ मौजूद हुआ, जो ख़ुदा की तरफ़ से भेजा गया था; 7 ये गवाही के लिए आया कि नूर की गवाही दे, ताकि सब उसके वसीले से ईमान लाएँ। 8 वो ख़ुद तो नूर न था, मगर नूर की गवाही देने आया था। 9 हक़ीक़ी नूर जो हर एक आदमी को रौशन करता है, दुनियाँ में आने को था। 10 वो दुनियाँ में था, और दुनियाँ उसके वसीले से पैदा हुई, और दुनियाँ ने उसे न पहचाना।। 11 वो अपने घर आया और और उसके अपनों ने उसे क़ुबूल न किया। 12 लेकिन जितनों ने उसे क़ुबूल किया, उसने उन्हें ख़ुदा के फ़र्ज़न्द बनने का हक़ बख़्शा, या'नी उन्हें जो उसके नाम पर ईमान लाते हैं। 13 वो न ख़ून से, न जिस्म की ख़्वाहिश से, न इंसान के इरादे से, बल्कि ख़ुदा से पैदा हुए। 14 और कलाम मुजस्सिम हुआ फ़ज़ल और सच्चाई से भरकर हमारे दरमियान रहा, और हम ने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल। 15 युहन्ना ने उसके बारे में गवाही दी, और पुकार कर कहा है, "ये वही है, जिसका मैंने ज़िक्र किया कि जो मेरे बाद आता है, वो मुझ से मुक़द्दम ठहरा क्यूँकि वो मुझ से पहले था।" 16 क्यूँकि उसकी भरपूरी में से हम सब ने पाया, या'नी फ़ज़ल पर फ़ज़ल। 17 इसलिए कि शरी'अत तो मूसा के ज़रिए दी गई, मगर फ़ज़ल और सच्चाई ईसा मसीह के ज़रिए पहुँची। 18 ख़ुदा को किसी ने कभी नहीं देखा, इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है उसी ने ज़ाहिर किया। 19 और युहन्ना की गवाही ये है, कि जब यहूदी अगुवो ने येरूशलेम से काहिन और लावी ये पूछने को उसके पास भेजे, "तू कौन है?" 20 तो उसने इक़रार किया, और इन्कार न किया बल्कि, इक़रार किया, "मैं तो मसीह नहीं हूँ।" 21 उन्होंने उससे पूछा, "फिर तू कौन है? क्या तू एलियाह है?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" "क्या तू वो नबी है?" उसने जवाब दिया, कि "नहीं।" 22 पस उन्होंने उससे कहा, "फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को जवाब दें कि, तू अपने हक़ में क्या कहता है?" 23 मैं "जैसा यसायाह नबी ने कहा, वीराने में एक पुकारने वाले की आवाज़ हूँ, 'तुम ख़ुदा वन्द की राह को सीधा करो'।" 24 ये फ़रीसियों की तरफ़ से भेजे गए थे। 25 उन्होंने उससे ये सवाल किया, "अगर तू न मसीह है, न एलियाह, न वो नबी, तो फिर बपतिस्मा क्यूँ देता है?" 26 युहन्ना ने जवाब में उनसे कहा, "मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ, तुम्हारे बीच एक शख़्स खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। 27 या'नी मेरे बाद का आनेवाला, जिसकी जूती का फ़ीता मैं खोलने के लायक़ नहीं।" 28 ये बातें यरदन के पार बैत'अन्नियाह में वाक़े' हुईं, जहाँ युहन्ना बपतिस्मा देता था। 29 दूसरे दिन उसने ईसा 'को अपनी तरफ़ आते देखकर कहा, "देखो, ये ख़ुदा का बर्रा है जो दुनियाँ का गुनाह उठा ले जाता है! 30 ये वही है जिसके बारे मैंने कहा था, 'एक शख़्स मेरे बाद आता है, जो मुझ से मुक़द्दम ठहरा है, क्यूँकि वो मुझ से पहले था।' 31 और मैं तो उसे पहचानता न था, मगर इसलिए पानी से बपतिस्मा देता हुआ आया कि वो इस्राईल पर ज़ाहिर हो जाए।" 32 और युहन्ना ने ये गवाही दी: "मैंने रूह को कबूतर की तरह आसमान से उतरते देखा है, और वो उस पर ठहर गया। 33 मैं तो उसे पहचानता न था, मगर जिसने मुझे पानी से बपतिस्मा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा, 'जिस पर तू रूह को उतरते और ठहरते देखे, वही रूह — उल — क़ुद्दूस से बपतिस्मा देनेवाला है। 34 चुनाँचे मैंने देखा, और गवाही दी है कि ये ख़ुदा का बेटा है।" 35 दूसरे दिन फिर युहन्ना और उसके शागिर्दों में से दो शख़्स खड़े थे, 36 उसने ईसा पर जो जा रहा था निगाह करके कहा, "देखो, ये ख़ुदा का बर्रा है!" 37 वो दोनों शागिर्द उसको ये कहते सुनकर ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने फिरकर और उन्हें पीछे आते देखकर उनसे कहा, "तुम क्या ढूँडते हो?" उन्होंने उससे कहा, "ऐ रब्बी (या'नी ऐ उस्ताद), तू कहाँ रहता है?" 39 उसने उनसे कहा, "चलो, देख लोगे।" पस उन्होंने आकर उसके रहने की जगह देखी और उस रोज़ उसके साथ रहे, और ये चार बजे के क़रीब था। 40 उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुनकर ईसा के पीछे हो लिए थे, एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। 41 उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा, "हम को ख़्रिस्तुस, या'नी मसीह मिल गया।" 42 वो उसे ईसा के पास लाया ईसा ने उस पर निगाह करके कहा, "तू यूहन्ना का बेटा शमौन है; तू कैफ़ा या'नी पतरस कहलाएगा।" 43 दूसरे दिन ईसा ने गलील में जाना चाहा, और फ़िलिप्पुस से मिलकर कहा, "मेरे पीछे हो ले।" 44 फ़िलिप्पुस, अन्द्रियास और पतरस के शहर, बैतसैदा का रहने वाला था। 45 फ़िलिप्पुस से नतनएल से मिलकर उससे कहा, जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरेत में और नबियों ने किया है, वो हम को मिल गया; वो यूसुफ़ का बेटा ईसा नासरी है।" 46 नतनएल ने उससे कहा, "क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?" फ़िलिप्पुस ने कहा, "चलकर देख ले।" 47 ईसा ने नतनएल को अपनी तरफ़ आते देखकर उसके हक़ में कहा, "देखो, ये फ़िल हक़ीक़त इस्राईली है! इस में मक्र नहीं।" 48 नतनएल ने उससे कहा, "तू मुझे कहाँ से जानता है?" ईसा ने उसके जवाब में कहा, "इससे पहले के फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के दरख़्त

के नीचे था, मैंने तुझे देखा।” 49 नतनएल ने उसको जवाब दिया,
“ऐ रब्बी, तू ख़ुदा का बेटा है! तू बादशाह का बादशाह है!” 50 ईसा
ने जवाब में उससे कहा, “मैंने जो तुझ से कहा, 'तुझ को अंजीर के
दरख़्त के नीचे देखा, 'क्या। तू इसीलिए ईमान लाया है? तू इनसे भी
बड़े — बड़े मोजिज़े देखेगा।“ 51 फिर उससे कहा, “मैं तुम से सच
कहता हूँ, कि आसमान को खुला और ख़ुदा के फ़रिश्तों को ऊपर
जाते और इब्न — ए — आदम पर उतरते देखोगे।”

2 फिर तीसरे दिन काना — ए — गलील में एक शादी हुई और
ईसा की माँ वहाँ थी। 2 ईसा और उसके शागिर्दों की भी उस
शादी में दा'वत थी। 3 और जब मय ख़त्म हो चुकी, तो ईसा की
माँ ने उससे कहा, “उनके पास मय नहीं रही।” 4 ईसा ने उससे
कहा, “ऐ माँ मुझे तुझ से क्या काम है? अभी मेरा वक़्त नहीं आया
है।” 5 उसकी माँ ने ख़ादिमों से कहा, “जो कुछ ये तुम से कहे वो
करो।” 6 वहाँ यहूदियों की पाकी के दस्तूर के मुवाफ़िक़ पत्थर के
छे: मटके रख्खे थे, और उनमें दो — दो, तीन — तीन मन की
गुंजाइश थी। 7 ईसा ने उनसे कहा, “मटकों में पानी भर दो।” पस
उन्होंने उनको पूरा भर दिया। 8 फिर उसने उन से कहा, “अब
निकाल कर मीर मजलिस के पास ले जाओ।” पस वो ले गए। 9
जब मजलिस के सरदार ने वो पानी चखा, जो मय बन गया था और
जानता न था कि ये कहाँ से आई है (मगर ख़ादिम जिन्होंने पानी भरा
था जानते थे), तो मजलिस के सरदार ने दुल्हा को बुलाकर उससे
कहा, 10 “हर शख़्स पहले अच्छी मय पेश करता है और नाक़िस
उस वक़्त जब पीकर छक गए, मगर तूने अच्छी मय अब तक रख
छोड़ी है।” 11 ये पहला मोजिज़ा ईसा ने क़ाना — ए — गलील में
दिखाकर, अपना जलाल ज़ाहिर किया और उसके शागिर्द उस पर
ईमान लाए। 12 इसके बाद वो और उसकी माँ और भाई और उसके
शागिर्द कफ़रनहूम को गए और वहाँ चन्द रोज़ रहे। 13 यहूदियों की
'ईद — ए — फ़सह नज़दीक थी, और ईसा येरूशलेम को गया। 14
उसने हैकल में बैल और भेड़ और कबूतर बेचने वालों को, और
सार्राफ़ों को बैठे पाया; 15 फिर ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बना कर
सब को बैत — उल — मुक़द्दस से निकाल दिया, उसने भेड़ों और
गाय — बैलों को बाहर निकाल कर हाँक दिया, पैसे बदलने वालों
के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेंजें उलट दीं। 16 और कबूतर
फ़रोशों से कहा, “इनको यहाँ से ले जाओ! मेरे आसमानी बाप के
घर को तिजारत का घर न बनाओ।“ 17 उसके शागिर्दों को याद
आया कि लिखा है, तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।” 18 पस
कुछ यहूदी अगुवों ने जवाब में उनसे कहा, “तू जो इन कामों को
करता है, हमें कौन सा निशान दिखाता है?” 19 ईसा ने जवाब में
उससे कहा, “इस हैकल को ढा दो, तो मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर
दूँगा।“ 20 यहूदी अगुवों ने कहा, छियालीस बरस में ये बना है,
और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?” 21 मगर उसने अपने
बदन के मक़्दिस के बारे में कहा था। 22 “पस जब वो मुर्दों में से
जी उठा तो उसके शागिर्दों को याद आया कि उसने ये कहा था; और
उन्होंने किताब — ए — मुक़द्दस और उस क़ौल का जो ईसा ने
कहा था, यक़ीन किया।” 23 जब वो येरूशलेम में फ़सह के वक़्त
'ईद में था, तो बहुत से लोग उन मोजिज़ों को देखकर जो वो दिखाता
था उसके नाम पर ईमान लाए। 24 लेकिन ईसा अपनी निस्बत उस
पर 'ऐतबार न करता था, इसलिए कि वो सबको जानता था। 25 और
इसकी ज़रूरत न रखता था कि कोई इंसान के हक़ में गवाही दे,
क्यूँकि वो आप जानता था कि इंसान के दिल में क्या क्या है।

3 फ़रीसियों में से एक शख़्स निकुदेमुस नाम यहूदियों का एक
सरदार था। 2 उसने रात को ईसा के पास आकर उससे कहा,
“ऐ रब्बी! हम जानते हैं कि तू ख़ुदा की तरफ़ से उस्ताद होकर आया
है, क्यूँकि जो मोजिज़े तू दिखाता है कोई शख़्स नहीं दिखा सकता,
जब तक ख़ुदा उसके साथ न हो।” 3 ईसा ने जवाब में उससे कहा,
“मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक कोई नए सिरे से पैदा न हो,
वो ख़ुदा की बादशाही को देख नहीं सकता।” 4 नीकुदेमुस ने उससे
कहा, “आदमी जब बूढ़ा हो गया, तो क्यूँकर पैदा हो सकता है?
क्या वो दोबारा अपनी माँ के पेट में दाख़िल होकर पैदा हो सकता
है?” 5 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, जब तक
कोई आदमी पानी और रूह से पैदा न हो, वो ख़ुदा की बादशाही में
दाख़िल नहीं हो सकता। 6 जो जिस्म से पैदा हुआ है जिस्म है, और
जो रूह से पैदा हुआ है रूह है। 7 ता'अज्जुब न कर कि मैंने तुझ से
कहा, 'तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है। 8 हवा जिधर चाहती है
चलती है और तू उसकी आवाज़ सुनता है, मगर नहीं कि वो कहाँ से
आती और कहाँ को जाती है। जो कोई रूह से पैदा हुआ ऐसा ही
है।” 9 नीकुदेमुस ने जवाब में उससे कहा, “ये बातें क्यूँकर हो
सकती हैं?” 10 ईसा ने जवाब में उससे कहा, “बनी — इस्राईल का
उस्ताद होकर क्या तू इन बातों को नहीं जानता? 11 मैं तुझ से सच
कहता हूँ कि जो हम जानते हैं वो कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है
उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही क़ुबूल नहीं करते। 12
जब मैंने तुम से ज़मीन की बातें कहीं और तुम ने यक़ीन नहीं किया,
तो अगर मैं तुम से आसमान की बातें कहूँ तो क्यूँकर यक़ीन करोगे?
13 आसमान पर कोई नहीं चढ़ा, सिवा उसके जो आसमान से उतरा
या'नी इब्न — ए — आदम जो आसमान में है। 14 और जिस तरह
मूसा ने पीतल के साँपको वीराने में ऊँचे पर चढ़ाया, उसी तरह ज़रूर
है कि इब्न — ए — आदम भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; 15 ताकि जो
कोई ईमान लाए उसमें हमेशा की ज़िन्दगी पाए।” **(aiōnios g166)**
16 “क्यूँकि ख़ुदा ने दुनियाँ से ऐसी मुहब्बत रख्खी कि उसने अपना
इक्लौता बेटा बख़्श दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक

न हो, बल्कि हमेशा की ज़िन्दगी पाए। (aiōnios g166) 17 क्यूँकि
ख़ुदा ने बेटे को दुनियाँ में इसलिए नहीं भेजा कि दुनियाँ पर सज़ा का
हुक्म करे, बल्कि इसलिए कि दुनियाँ उसके वसीले से नजात पाए।
18 जो उस पर ईमान लाता है उस पर सज़ा का हुक्म नहीं होता, जो
उस पर ईमान नहीं लाता उस पर सज़ा का हुक्म हो चुका; इसलिए
कि वो ख़ुदा के इकलौते बेटे के नाम पर ईमान नहीं लाया। 19
और सज़ा के हुक्म की वजह ये है कि नूर दुनियाँ में आया है, और
आदमियों ने तारीकी को नूर से ज़्यादा पसन्द किया इसलिए कि
उनके काम बुरे थे। 20 क्यूँकि जो कोई बदी करता है वो नूर से
दुश्मनी रखता है और नूर के पास नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके
कामों पर मलामत की जाए। 21 मगर जो सचाई पर 'अमल करता
है वो नूर के पास आता है, ताकि उसके काम ज़ाहिर हों कि वो ख़ुदा
में किए गए हैं।” 22 इन बातों के बाद ईसा और शागिर्द यहूदिया के
मुल्क में आए, और वो वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।
23 और युहन्ना भी 'एनोन में बपतिस्मा देता था जो यरदन नदी के
पासथा, क्यूँकि वहाँ पानी बहुत था और लोग आकर बपतिस्मा लेते
थे। 24 (क्यूँकि यहून्ना उस वक़्त तक क़ैदख़ाने में डाला न गया था)
25 पस युहन्ना के शागिर्दों की किसी यहूदी के साथ पाकीज़गी के
बारे में बहस हुई। 26 उन्होंने युहन्ना के पास आकर कहा, “ऐ
रब्बी! जो शख़्स यरदन के पार तेरे साथ था, जिसकी तूने गवाही दी
है; देख, वो बपतिस्मा देता है और सब उसके पास आते हैं।” 27
युहन्ना ने जवाब में कहा, इंसान कुछ नहीं पा सकता, जब तक
उसको आसमान से न दिया जाए। 28 तुम ख़ुद मेरे गवाह हो कि मैंने
कहा, 'मैं मसीह नहीं, मगर उसके आगे भेजा गया हूँ। 29 जिसकी
दुल्हन है वो दुल्हा है, मगर दुल्हा का दोस्त जो खड़ा हुआ उसकी
सुनता है, दुल्हा की आवाज़ से बहुत ख़ुश होता है; पस मेरी ये ख़ुशी
पूरी हो गई। 30 ज़रूर है कि वो बढ़े और मैं घटूँ। 31 “जो ऊपर
से आता है वो सबसे ऊपर है। जो ज़मीन से है वो ज़मीन ही से है
और ज़मीन ही की कहता है 'जो आसमान से आता है वो सबसे
ऊपर है। 32 जो कुछ उस ने ख़ुद देखा और सुना है उसी की गवाही
देता है। तो भी कोई उस की गवाही क़ुबूल नहीं करता। 33 जिसने
उसकी गवाही क़ुबूल की उसने इस बात पर मुहर कर दी, कि ख़ुदा
सच्चा है। 34 क्यूँकि जिसे ख़ुदा ने भेजा वो ख़ुदा की बातें कहता है,
इसलिए कि वो रूह नाप नाप कर नहीं देता। 35 बाप बेटे से मुहब्बत
रखता है और उसने सब चीज़ें उसके हाथ में दे दी है। 36 जो बेटे पर
ईमान लाता है हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है; लेकिन जो बेटे की
नहीं मानता 'ज़िन्दगी को न देखगा बल्कि उसपर ख़ुदा का ग़ज़ब
रहता है।” (aiōnios g166)

4 फिर जब ख़ुदावन्द को मा'लूम हुआ, कि फ़रीसियों ने सुना है
कि ईसा युहन्ना से ज़्यादा शागिर्द बनाता है और बपतिस्मा देता
है, 2 (अगरचे ईसा आप नहीं बल्कि उसके शागिर्द बपतिस्मा देते
थे), 3 तो वो यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया। 4
और उसको सामरिया से होकर जाना ज़रूर था। 5 पस वो सामरिया
के एक शहर तक आया जो सूख़ार कहलाता है, वो उस कितै के
नज़दीक है जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दिया था; 6 और
याक़ूब का कुआँ वहीं था। चुनाँचे ईसा सफ़र से थका — माँदा
होकर उस कुँए पर यूँ ही बैठ गया। ये छठे घंटे के क़रीब था। 7
सामरिया की एक 'औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, “मुझे
पानी पिला” 8 क्यूँकि उसके शागिर्द शहर में खाना ख़रीदने को
गए थे। 9 उस सामरी 'औरत ने उससे कहा, “तू यहूदी होकर मुझ
सामरी 'औरत से पानी क्यूँ माँगता है?” (क्यूँकि यहूदी सामरियों से
किसी तरह का बर्ताव नहीं रखते।) 10 ईसा ने जवाब में उससे कहा,
“अगर तू ख़ुदा की बख़्शिश को जानती, और ये भी जानती कि वो
कौन है जो तुझ से कहता है, 'मुझे पानी पिला, 'तो तू उससे माँगती
और वो तुझे ज़िन्दगी का पानी देता।” 11 'औरत ने उससे कहा, “ऐ
ख़ुदावन्द! तेरे पास पानी भरने को तो कुछ है नहीं और कुआँ गहरा
है, फिर वो ज़िन्दगी का पानी तेरे पास कहाँ से आया? 12 क्या तू
हमारे बाप याक़ूब से बड़ा है जिसने हम को ये कुआँ दिया, और ख़ुद
उसने और उसके बेटों ने और उसके जानवरों ने उसमें से पिया?”
13 ईसा ने जवाब में उससे कहा, “जो कोई इस पानी में से पीता है वो
फिर प्यासा होगा, 14 मगर जो कोई उस पानी में से पिएगा जो मैं उसे
दूँगा, वो अबद तक प्यासा न होगा! बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा, वो
उसमें एक चश्मा बन जाएगा जो हमेशा की ज़िन्दगी के लिए जारी
रहेगा।” (aiōn g165, aiōnios g166) 15 औरत ने उस से कहा, “ऐ
ख़ुदावन्द! वो पानी मुझ को दे ताकि मैं न प्यासी हूँ, न पानी भरने को
यहाँ तक आऊँ।” 16 ईसा ने उससे कहा, “जा, अपने शौहर को
यहाँ बुला ला।” 17 'औरत ने जवाब में उससे कहा, “मैं बे शौहर
हूँ।” ईसा ने उससे कहा, “तुने ख़ूब कहा, 'मैं बे शौहर हूँ, 18 क्यूँकि
तू पाँच शौहर कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वो तेरा शौहर
नहीं; ये तूने सच कहा।” 19 औरत ने उससे कहा, “ऐ ख़ुदावन्द!
मुझे मालूम होता है कि तू नबी है। 20 हमारे बाप — दादा ने इस
पहाड़ पर इबादत की, और तुम कहते हो कि वो जगह जहाँ पर
इबादत करना चाहिए येरूशलेम में है।” 21 ईसा ने उससे कहा, “ऐ
बहन, मेरी बात का यक़ीन कर, कि वो वक़्त आता है कि तुम न तो
इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे और न येरूशलेम में। 22 तुम
जिसे नहीं जानते उसकी इबादत करते हो; और हम जिसे जानते हैं
उसकी इबादत करते हैं; क्यूँकि नजात यहूदियों में से है। 23 मगर वो
वक़्त आता है बल्कि अब ही है, कि सच्चे इबादतघर ख़ुदा बाप की
इबादत रूह और सच्चाई से करेंगे, क्यूँकि ख़ुदा बाप अपने लिए ऐसे
ही इबादतघर ढूँडता है। 24 ख़ुदा रूह है, और ज़रूर है कि उसके

इबादतघर रूह और सच्चाई से इबादत करें।” 25 'औरत ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख़्रिस्तुस कहलाता है आने वाला है, जब वो आएगा तो हमें सब बातें बता देगा।” 26 ईसा ने उससे कहा, “मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।” 27 इतने में उसके शागिर्द आ गए और ताअ'ज्जुब करने लगे कि वो 'औरत से बातें कर रहा है, तोभी किसी ने न कहा, “तू क्या चाहता है?” या, “उससे किस लिए बातें करता है।” 28 पस 'औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक आदमी को देखो, जिसने मेरे सब काम मुझे बता दिए। क्या मुम्किन है कि मसीह यही है?” 30 वो शहर से निकल कर उसके पास आने लगे। 31 इतने में उसके शागिर्द उससे ये दरख़्वास्त करने लगे, “ऐ रब्बी! कुछ खा ले।” 32 लेकिन उसने कहा, “मेरे पास खाने के लिए ऐसा खाना है जिसे तुम नहीं जानते।” 33 पस शागिर्दों ने आपस में कहा, “क्या कोई उसके लिए कुछ खाने को लाया है?” 34 ईसा ने उनसे कहा, “मेरा खाना, ये है, कि अपने भेजनेवाले की मर्ज़ी के मुताबिक़ 'अमल करूँ और उसका काम पूरा करूँ।। 35 क्या तुम कहते नहीं, 'फ़सल के आने में अभी चार महीने बाक़ी हैं'? देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर नज़र करो कि फ़सल पक गई है। 36 और काटनेवाला मज़दूरी पाता और हमेशा की ज़िन्दगी के लिए फल जमा करता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर ख़ुशी करें। (aiōnios g166) 37 क्यूँकि इस पर ये मिसाल ठीक आती है, 'बोनेवाला और काटनेवाला और।' 38 मैंने तुम्हें वो खेत काटने के लिए भेजा जिस पर तुम ने मेहनत नहीं की, औरों ने मेहनत की और तुम उनकी मेहनत के फल में शरीक हुए।” 39 और उस शहर के बहुत से सामरी उस 'औरत के कहने से, जिसने गवाही दी, उसने मेरे सब काम मुझे बता दिए, उस पर ईमान लाए। 40 पस जब वो सामरी उसके पास आए, तो उससे दरख़्वास्त करने लगे कि हमारे पास रह। चुनाँचे वो दो रोज़ वहाँ रहा। 41 और उसके कलाम के ज़रिए से और भी बहुत सारे ईमान लाए 42 और उस औरत से कहा “अब हम तेरे कहने ही से ईमान नहीं लाते क्यूँकि हम ने ख़ुद सुन लिया और जानते हैं कि ये हक़ीक़त में दुनियाँ का मुन्जी है।” 43 फिर उन दो दिनों के बाद वो वहाँ से होकर गलील को गया। 44 क्यूँकि ईसा ने ख़ुद गवाही दी कि नबी अपने वतन में इज़्ज़त नहीं पाता। 45 पस जब वो गलील में आया तो ग़लतियों ने उसे क़ुबूल किया, इसलिए कि जितने काम उसने येरूशलेम में 'ईद के वक़्त किए थे, उन्होंने उनको देखा था क्यूँकि वो भी 'ईद में गए थे। 46 पस फिर वो क़ाना — ए — गलील में आया, जहाँ उसने पानी को मय बनाया था, और बादशाह का एक मुलाज़िम था जिसका बेटा कफ़रनहूम में बीमार था। 47 वो ये सुनकर कि ईसा यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उससे दरख़्वास्त करने लगा, कि चल कर मेरे बेटे को शिफ़ा बख़्श क्यूँकि वो मरने को था। 48 ईसा ने उससे कहा, “जब तक तुम निशान और 'अजीब काम न देखो, हरगिज़ ईमान न लाओगे।” 49 बादशाह के मुलाज़िम ने उससे कहा, “ऐ ख़ुदावन्द! मेरे बच्चे के मरने से पहले चल।” 50 ईसा ने उससे कहा, “जा; तेरा बेटा ज़िन्दा है।” उस शख़्स ने उस बात का यक़ीन किया जो ईसा ने उससे कही और चला गया। 51 वो रास्ते ही में था कि उसके नौकर उसे मिले और कहने लगे, “तेरा बेटा ज़िन्दा है।” 52 उसने उनसे पूछा, “उसे किस वक़्त से आराम होने लगा था?” उन्होंने कहा, “कल एक बजे उसका बुख़ार उतर गया।” 53 पस बाप जान गया कि वही वक़्त था जब ईसा ने उससे कहा, “तेरा बेटा ज़िन्दा है।” और वो ख़ुद और उसका सारा घराना ईमान लाया। 54 ये दूसरा करिश्मा है जो ईसा ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

5 इन बातों के बाद यहूदियों की एक 'ईद हुई और ईसा येरूशलेम को गया। 2 येरूशलेम में भेड़ दरवाज़े के पास एक हौज़ है जो 'इब्रानी में बैत हस्दा कहलाता है, और उसके पाँच बरामदेह हैं। 3 इनमें बहुत से बीमार और अन्धे और लंगड़े और कमज़ोर लोग जो पानी के हिलने के इंतज़ार में पड़े थे। 4 [क्यूँकि वक़्त पर ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता हौज़ पर उतर कर पानी हिलाया करता था। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता सो शिफ़ा पाता, उसकी जो कुछ बीमारी क्यूँ न हो।] 5 वहाँ एक शख़्स था जो अठतीस बरस से बीमारी में मुब्तिला था। 6 उसको 'ईसा ने पड़ा देखा और ये जानकर कि वो बड़ी मुद्दत से इस हालत में है, उससे कहा, “क्या तू तन्दरुस्त होना चाहता है?” 7 उस बीमार ने उसे जवाब दिया, “ऐ ख़ुदावन्द! मेरे पास कोई आदमी नहीं कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे हौज़ में उतार दे, बल्कि मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहले उतर पड़ता है।” 8 'ईसा ने उससे कहा, “उठ, और अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” 9 वो शख़्स फ़ौरन तन्दरुस्त हो गया, और अपनी चारपाई उठाकर चलने फिरने लगा। 10 वो दिन सबत का था। पस यहूदी अगुवे उससे जिसने शिफ़ा पाई थी कहने लगे, “आज सबत का दिन है, तुझे चारपाई उठाना जायज़ नहीं।” 11 उसने उन्हें जवाब दिया, जिसने मुझे तन्दरुस्त किया, उसी ने मुझे फ़रमाया, “अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” 12 उन्होंने उससे पूछा, “वो कौन शख़्स है जिसने तुझ से कहा, 'चारपाई उठाकर चल फिर'?” 13 लेकिन जो शिफ़ा पा गया था वो न जानता था कि वो कौन है, क्यूँकि भीड़ की वजह से 'ईसा वहाँ से टल गया था। 14 इन बातों के बाद वो ईसा को हैकल में मिला; उसने उससे कहा, “देख, तू तन्दरुस्त हो गया है! फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तुझपर इससे भी ज़्यादा आफ़त आए।” 15 उस आदमी ने जाकर यहूदियों को ख़बर दी कि जिसने मुझे तन्दरुस्त किया वो ईसा है। 16 इसलिए यहूदी ईसा को

सताने लगे, क्यूँकि वो ऐसे काम सबत के दिन करता था। 17 लेकिन
ईसा ने उनसे कहा, “मेरा आसमानी बाप अब तक काम करता है,
और मैं भी काम करता हूँ।” 18 इस वजह से यहूदी और भी ज़्यादा
उसे क़त्ल करने की कोशिश करने लगे, कि वो न फ़क़त सबत का
हुक्म तोड़ता, बल्कि ख़ुदा को ख़ास अपना बाप कह कर अपने
आपको ख़ुदा के बराबर बनाता था 19 पस ईसा ने उनसे कहा, “मैं
तुम से सच कहता हूँ कि बेटा आप से कुछ नहीं कर सकता, सिवा
उसके जो बाप को करते देखता है; क्यूँकि जिन कामों को वो करता
है, उन्हें बेटा भी उसी तरह करता है। 20 इसलिए कि बाप बेटे को
'अज़ीज़ रखता है, और जितने काम ख़ुद करता है उसे दिखाता है;
बल्कि इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम ता'ज्जुब करो।
21 क्यूँकि जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता और ज़िन्दा करता है,
उसी तरह बेटा भी जिन्हें चाहता है ज़िन्दा करता है। 22 क्यूँकि बाप
किसी की 'अदालत भी नहीं करता, बल्कि उसने 'अदालत का सारा
काम बेटे के सुपुर्द किया है; 23 ताकि सब लोग बेटे की 'इज़्ज़त
करें जिस तरह बाप की 'इज़्ज़त करते हैं। जो बेटे की 'इज़्ज़त नहीं
करता, वो बाप की जिसने उसे भेजा 'इज़्ज़त नहीं करता। 24 मैं तुम
से सच कहता हूँ कि जो मेरा कलाम सुनता और मेरे भेजने वाले का
यक़ीन करता है, हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है और उस पर सज़ा का
हुक्म नहीं होता बल्कि वो मौत से निकलकर ज़िन्दगी में दाख़िल हो
गया है।” **(aiōnios g166)** 25 “मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि वो
वक़्त आता है बल्कि अभी है, कि मुर्दे ख़ुदा के बेटे की आवाज़
सुनेंगे और जो सुनेंगे वो जिएँगे। 26 क्यूँकि जिस तरह बाप अपने
आप में ज़िन्दगी रखता है, उसी तरह उसने बेटे को भी ये बख़्शा
कि अपने आप में ज़िन्दगी रख्खे। 27 बल्कि उसे 'अदालत करने
का भी इख़्तियार बख़्शा, इसलिए कि वो आदमज़ाद है। 28 इससे
ता'अज्जुब न करो; क्यूँकि वो वक़्त आता है कि जितने क़ब्रों में हैं
उसकी आवाज़ सुनकर निकलेंगे, 29 जिन्होंने नेकी की है ज़िन्दगी
की क़यामत, के वास्ते, और जिन्होंने बदी की है सज़ा की क़यामत
के वास्ते।” 30 “मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा
सुनता हूँ 'अदालत करता हूँ और मेरी 'अदालत रास्त है, क्यूँकि मैं
अपनी मर्ज़ी नहीं बल्कि अपने भेजने वाले की मर्ज़ी चाहता हूँ। 31
अगर मैं ख़ुद अपनी गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। 32 एक
और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि मेरी गवाही जो
वो देता है सच्ची है। 33 तुम ने युहन्ना के पास पयाम भेजा, और
उसने सच्चाई की गवाही दी है। 34 लेकिन मैं अपनी निस्बत इंसान
की गवाही मंज़ूर नहीं करता, तोभी मैं ये बातें इसलिए कहता हूँ कि
तुम नजात पाओ। 35 वो जलता और चमकता हुआ चराग़ था, और
तुम को कुछ 'अर्से तक उसकी रौशनी में ख़ुश रहना मंज़ूर हुआ। 36
लेकिन मेरे पास जो गवाही है वो युहन्ना की गवाही से बड़ी है,
क्यूँकि जो काम बाप ने मुझे पूरे करने को दिए, या'नी यही काम जो
मैं करता हूँ, वो मेरे गवाह हैं कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 और बाप
जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है। तुम ने न कभी उसकी
आवाज़ सुनी है और न उसकी सूरत देखी; 38 और उस के कलाम
को अपने दिलों में क़ाईम नहीं रखते, क्यूँकि जिसे उसने भेजा है
उसका यक़ीन नहीं करते। 39 तुम किताब — ए — मुक़द्दस में ढूँडते
हो, क्यूँकि समझते हो कि उसमें हमेशा की ज़िन्दगी तुम्हें मिलती है,
और ये वो है जो मेरी गवाही देती है; **(aiōnios g166)** 40 फिर भी तुम
ज़िन्दगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। 41 मैं आदमियों
से 'इज़्ज़त नहीं चाहता। 42 लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुम में
ख़ुदा की मुहब्बत नहीं। 43 मैं अपने आसमानी बाप के नाम से आया
हूँ और तुम मुझे क़ुबूल नहीं करते, अगर कोई और अपने ही नाम से
आए तो उसे क़ुबूल कर लोगे। 44 तुम जो एक दूसरे से 'इज़्ज़त
चाहते हो और वो 'इज़्ज़त जो ख़ुदा — ए — वाहिद की तरफ़ से
होती है नहीं चाहते, क्यूँकर ईमान ला सकते हो? 45 ये न समझो
कि मैं बाप से तुम्हारी शिकायत करूँगा; तुम्हारी शिकायत करनेवाला
तो है, या'नी मूसा जिस पर तुम ने उम्मीद लगा रख्खी है। 46 क्यूँकि
अगर तुम मूसा का यक़ीन करते तो मेरा भी यक़ीन करते, इसलिए
कि उसने मेरे हक़ में लिखा है। 47 लेकिन जब तुम उसके लिखे हुए
का यक़ीन नहीं करते, तो मेरी बात का क्यूँकर यक़ीन करोगे?”

6 इन बातों के बाद 'ईसा गलील की झील या'नी तिबरियास की
झील के पार गया। 2 और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्यूँकि
जो मोजिज़े वो बीमारों पर करता था उनको वो देखते थे। 3 ईसा
पहाड़ पर चढ़ गया और अपने शागिर्दों के साथ वहाँ बैठा। 4 और
यहूदियों की 'ईद — ए — फ़सह नज़दीक थी। 5 पस जब 'ईसा ने
अपनी आँखें उठाकर देखा कि मेरे पास बड़ी भीड़ आ रही है, तो
फ़िलिप्पुस से कहा, “हम इनके खाने के लिए कहाँ से रोटियाँ ख़रीद
लें?” 6 मगर उसने उसे आज़माने के लिए ये कहा, क्यूँकि वो आप
जानता था कि मैं क्या करूँगा। 7 फ़िलिप्पुस ने उसे जवाब दिया,
“दो सौ दिन मज़दूरी की रोटियाँ इनके लिए काफ़ी न होंगी, कि हर
एक को थोड़ी सी मिल जाए।” 8 उसके शागिर्दों में से एक ने,
या'नी शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने, उससे कहा, 9 “यहाँ
एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ
हैं, मगर ये इतने लोगों में क्या हैं?” 10 ईसा ने कहा, “लोगों को
बिठाओ।” और उस जगह बहुत घास थी। पस वो मर्द जो तक़रीबन
पाँच हज़ार थे बैठ गए। 11 ईसा ने वो रोटियाँ ली और शुक्र करके
उन्हें जो बैठे थे बाँट दीं, और इसी तरह मछलियों में से जिस क़दर
चाहते थे बाँट दिया। 12 जब वो सेर हो चुके तो उसने अपने शागिर्दों
से कहा, “बचे हुए बे इस्तेमाल खाने को जमा करो, ताकि कुछ
ज़ाया न हो।” 13 चुनाँचे उन्होंने जमा किया, और जौ की पाँच

रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे बारह टोकरियाँ
भरीं 14 पस जो मोजिज़ा उसने दिखाया, "वो लोग उसे देखकर
कहने लगे, जो नबी दुनियाँ में आने वाला था हक़ीक़त में यही है।"
15 पस ईसा ये मा'लूम करके कि वो आकर मुझे बादशाह बनाने के
लिए पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया। 16 फिर
जब शाम हुई तो उसके शागिर्द झील के किनारे गए, 17 और नाव में
बैठकर झील के पार कफ़रनहूम को चले जाते थे। उस वक़्त अन्धेरा
हो गया था, और 'ईसा अभी तक उनके पास न आया था। 18 और
आँधी की वजह से झील में मौजें उठने लगीं। 19 पस जब वो खेते
— खेते तीन — चार मील के क़रीब निकल गए, तो उन्होंने 'ईसा
को झील पर चलते और नाव के नज़दीक आते देखा और डर गए।
20 मगर उसने उनसे कहा, "मैं हूँ, डरो मत।" 21 पस वो उसे नाव में
चढ़ा लेने को राज़ी हुए, और फ़ौरन वो नाव उस जगह जा पहुँची
जहाँ वो जाते थे। 22 दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी
थी, ये देखा कि यहाँ एक के सिवा और कोई छोटी नाव न थी; और
'ईसा अपने शागिर्दों के साथ नाव पर सवार न हुआ था, बल्कि सिर्फ़
उसके शागिर्द चले गए थे। 23 (लेकिन कुछ छोटी नावें तिबरियास
से उस जगह के नज़दीक आईं, जहाँ उन्होंने ख़ुदावन्द के शुक्र करने
के बाद रोटी खाई थी।) 24 पस जब भीड़ ने देखा कि यहाँ न 'ईसा
है न उसके शागिर्द, तो वो ख़ुद छोटी नावों में बैठकर 'ईसा की
तलाश में कफ़रनहूम को आए। 25 और झील के पार उससे मिलकर
कहा, "ऐ रब्बी! तू यहाँ कब आया?" 26 ईसा ने उनके जवाब में
कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँडते कि
मोजिज़े देखे, बल्कि इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर सेर हुए। 27
फ़ानी ख़ुराक के लिए मेहनत न करो, बल्कि उस ख़ुराक के लिए
जो हमेशा की ज़िन्दगी तक बाक़ी रहती है जिसे इब्न — ए —
आदम तुम्हें देगा; क्यूँकि बाप या'नी ख़ुदा ने उसी पर मुहर की है।"
(aiōnios g166) 28 पस उन्होंने उससे कहा, "हम क्या करें ताकि
ख़ुदा के काम अन्जाम दें?" 29 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, "ख़ुदा
का काम ये है कि जिसे उसने भेजा है उस पर ईमान लाओ।" 30
पस उन्होंने उससे कहा, "फिर तू कौन सा निशान दिखाता है, ताकि
हम देखकर तेरा यक़ीन करें? तू कौन सा काम करता है? 31 हमारे
बाप — दादा ने वीराने में मन्ना खाया, चुनाँचे लिखा है, 'उसने उन्हें
खाने के लिए आसमान से रोटी दी।" 32 ईसा ने उनसे कहा, "मैं
तुम से सच सच कहता हूँ, कि मूसा ने तो वो रोटी आसमान से तुम्हें
न दी, लेकिन मेरा बाप तुम्हें आसमान से हक़ीक़ी रोटी देता है। 33
क्यूँकि ख़ुदा की रोटी वो है जो आसमान से उतरकर दुनियाँ को
ज़िन्दगी बख़्शती है।" 34 उन्होंने उससे कहा, ऐ ख़ुदावन्द! ये रोटी
हम को हमेशा दिया कर।" 35 ईसा ने उनसे कहा, "ज़िन्दगी की
रोटी मैं हूँ; जो मेरे पास आए वो हरगिज़ भूखा न होगा, और जो मुझ
पर ईमान लाए वो कभी प्यासा ना होगा। 36 लेकिन मैंने तुम से कहा
कि तुम ने मुझे देख लिया है फिर भी ईमान नहीं लाते। 37 जो कुछ
बाप मुझे देता है मेरे पास आ जाएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा
उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। 38 क्यूँकि मैं आसमान से इसलिए
नहीं उतरा हूँ कि अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ 'अमल करूँ, बल्कि
इसलिए कि अपने भेजनेवाले की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ 'अमल करूँ।
39 और मेरे भेजनेवाले की मर्ज़ी ये है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया
है मैं उसमें से कुछ खो न दूँ, बल्कि उसे आख़िरी दिन फिर ज़िन्दा
करूँ। 40 क्यूँकि मेरे बाप की मर्ज़ी ये है, कि जो कोई बेटे को देखे
और उस पर ईमान लाए, और हमेशा की ज़िन्दगी पाए और मैं उसे
आख़िरी दिन फिर ज़िन्दा करूँ।" (aiōnios g166) 41 पस यहूदी उस
पर बुदबुदाने लगे, इसलिए कि उसने कहा, था, "जो रोटी आसमान
से उतरी वो मैं हूँ।" 42 और उन्होंने कहा, क्या ये युसूफ़ का बेटा
'ईसा नहीं, जिसके बाप और माँ को हम जानते हैं? अब ये क्यूँकर
कहता है कि "मैं आसमान से उतरा हूँ?" 43 ईसा ने जवाब में उनसे
कहा, "आपस में न बुदबदाओ। 44 कोई मेरे पास नहीं आ सकता
जब तक कि बाप जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले, और मैं
उसे आख़िरी दिन फिर ज़िन्दा करूँगा। 45 नबियों के सहीफ़ों में ये
लिखा है: 'वो सब ख़ुदा से ता'लीम पाए हुए लोग होंगे।' जिस किसी
ने बाप से सुना और सीखा है वो मेरे पास आता है — 46 ये नहीं कि
किसी ने बाप को देखा है, मगर जो ख़ुदा की तरफ़ से है उसी ने
बाप को देखा है। 47 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो ईमान लाता
है हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है। (aiōnios g166) 48 ज़िन्दगी की
रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बाप — दादा ने वीराने मैं मन्ना खाया और
मर गए। 50 ये वो रोटी है कि जो आसमान से उतरती है, ताकि
आदमी उसमें से खाए और न मरे। 51 मैं हूँ वो ज़िन्दगी की रोटी जो
आसमान से उतरी। अगर कोई इस रोटी में से खाए तो हमेशा तक
ज़िन्दा रहेगा, बल्कि जो रोटी मैं दुनियाँ की ज़िन्दगी के लिए दूँगा
वो मेरा गोश्त है।" (aiōn g165) 52 पस यहूदी ये कहकर आपस
में झगड़ने लगे, "ये शख़्स आपना गोश्त हमें क्यूँकर खाने को दे
सकता है?" 53 ईसा ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि
जब तक तुम इब्न — ए — आदम का गोश्त न खाओ और उसका
का ख़ून न पियो, तुम में ज़िन्दगी नहीं। 54 जो मेरा गोश्त खाता
और मेरा ख़ून पीता है, हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है; और मैं उसे
आख़िरी दिन फिर ज़िन्दा करूँगा। (aiōnios g166) 55 क्यूँकि मेरा
गोश्त हक़ीक़त में खाने की चीज़ और मेरा ख़ून हक़ीक़त में पीनी की
चीज़ है। 56 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा ख़ून पीता है, वो मुझ में
क़ाईम रहता है और मैं उसमें। 57 जिस तरह ज़िन्दा बाप ने मुझे
भेजा, और मैं बाप के ज़रिए से ज़िन्दा हूँ, इसी तरह वो भी जो मुझे
खाएगा मेरे ज़रिए से ज़िन्दा रहेगा। 58 जो रोटी आसमान से उतरी

यही है, बाप — दादा की तरह नहीं कि खाया और मर गए; जो
ये रोटी खाएगा वो हमेशा तक ज़िन्दा रहेगा।” (aiōn g165) **59** ये
बातें उसने कफ़रनहूम के एक 'इबादतख़ाने में ता'लीम देते वक़्त
कहीं। **60** इसलिए उसके शागिर्दों में से बहुतों ने सुनकर कहा, “ये
कलाम नागवार है, इसे कौन सुन सकता है?” **61** ईसा ने अपने जी
में जानकर कि मेरे शागिर्द आपस में इस बात पर बुदबुदाते हैं, उनसे
कहा, “क्या तुम इस बात से ठोकर खाते हो? **62** अगर तुम इब्न —
ए — आदम को ऊपर जाते देखोगे, जहाँ वो पहले था तो क्या होगा?
63 ज़िन्दा करने वाली तो रूह है, जिस्म से कुछ फ़ाइदा नहीं; जो
बातें मैंने तुम से कहीं हैं, वो रूह हैं और ज़िन्दगी भी हैं। **64** मगर तुम
में से कुछ ऐसे हैं जो ईमान नहीं लाए।” क्यूँकि ईसा शुरू' से जानता
था कि जो ईमान नहीं लाते वो कौन हैं, और कौन मुझे पकड़वाएगा।
65 फिर उसने कहा, “इसी लिए मैंने तुम से कहा था कि मेरे पास
कोई नहीं आ सकता जब तक बाप की तरफ़ से उसे ये तौफ़ीक़ न दी
जाए।” **66** इस पर उसके शागिर्दों में से बहुत से लोग उल्टे फिर गए
और इसके बाद उसके साथ न रहे। **67** पस ईसा ने उन बारह से
कहा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?” **68** शमौन पतरस ने
उसे जवाब दिया, “ऐ ख़ुदावन्द! हम किसके पास जाएँ? हमेशा की
ज़िन्दगी की बातें तो तेरे ही पास हैं? (aiōnios g166) **69** और हम
ईमान लाए और जान गए हैं कि, ख़ुदा का क़ुद्दूस तू ही है।” **70** ईसा
ने उन्हें जवाब दिया, “क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुन लिया? और
तुम में से एक शख़्स शैतान है।” **71** उसने ये शमौन इस्करियोती के
बेटे यहुदाह की निस्बत कहा, क्यूँकि यही जो उन बारह में से था उसे
पकड़वाने को था।

7 इन बातों के बाद 'ईसा गलील में फिरता रहा क्यूँकि यहूदिया में
फिरना न चाहता था, इसलिए कि यहूदी अगुवे उसके क़त्ल की
कोशिश में थे **2** और यहूदियों की 'ईद — ए — खियाम नज़दीक
थी। **3** पस उसके भाइयों ने उससे कहा, “यहाँ से रवाना होकर
यहूदिया को चला जा, ताकि जो काम तू करता है उन्हें तेरे शागिर्द भी
देखें। **4** क्यूँकि ऐसा कोई नहीं जो मशहूर होना चाहे और छिपकर
काम करे। अगर तू ये काम करता है, तो अपने आपको दुनियाँ पर
ज़ाहिर कर।” **5** क्यूँकि उसके भाई भी उस पर ईमान न लाए थे। **6**
पस ईसा ने उनसे कहा, “मेरा तो अभी वक़्त नहीं आया, मगर तुम्हारे
लिए सब वक़्त है। **7** दुनियाँ तुम से 'दुश्मनी नहीं रख सकती लेकिन
मुझ से रखती है, क्यूँकि मैं उस पर गवाही देता हूँ कि उसके काम
बुरे हैं। **8** तुम 'ईद में जाओ; मैं अभी इस 'ईद में नहीं जाता, क्यूँकि
अभी तक मेरा वक़्त पूरा नहीं हुआ।” **9** ये बातें उनसे कहकर वो
गलील ही में रहा। **10** लेकिन जब उसके भाई 'ईद में चले गए उस
वक़्त वो भी गया, खुले तौर पर नहीं बल्कि पोशीदा। **11** पस यहूदी
उसे 'ईद में ये कहकर ढूँडने लगे, “वो कहाँ है?” **12** और लोगों में
उसके बारे में चुपके — चुपके बहुत सी गुफ़्तगू हुई; कुछ कहते थे,
वो नेक है। “और कुछ कहते थे, नहीं बल्कि वो लोगों को गुमराह
करता है।” **13** तो भी यहूदियों के डर से कोई शख़्स उसके बारे
में साफ़ साफ़ न कहता था। **14** जब 'ईद के आधे दिन गुज़र गए,
तो 'ईसा हैकल में जाकर ता'लीम देने लगा। **15** पस यहूदियों ने
ता'ज्जुब करके कहा, “इसको बग़ैर पढ़े क्यूँकर 'इल्म आ गया?”
16 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “मेरी ता'लीम मेरी नहीं, बल्कि मेरे
भेजने वाले की है। **17** अगर कोई उसकी मर्ज़ी पर चलना चाहे, तो
इस ता'लीम की वजह से जान जाएगा कि ख़ुदा की तरफ़ से है या मैं
अपनी तरफ़ से कहता हूँ। **18** जो अपनी तरफ़ से कुछ कहता है, वो
अपनी 'इज़्ज़त चाहता है; लेकिन जो अपने भेजनेवाले की 'इज़्ज़त
चाहता है, वो सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं। **19** क्या मूसा ने
तुम्हें शरी'अत नहीं दी? तोभी तुम में शरी'अत पर कोई 'अमल नहीं
करता। तुम क्यूँ मेरे क़त्ल की कोशिश में हो?” **20** लोगों ने जवाब
दिया, “तुझ में तो बदरूह है! कौन तेरे क़त्ल की कोशिश में है?” **21**
ईसा ने जवाब में उससे कहा, “मैंने एक काम किया, और तुम सब
ताअ'ज्जुब करते हो। **22** इस बारे में मूसा ने तुम्हें ख़तने का हुक्म
दिया है (हालाँकि वो मूसा की तरफ़ से नहीं, बल्कि बाप — दादा से
चला आया है), और तुम सबत के दिन आदमी का ख़तना करते हो।
23 जब सबत को आदमी का ख़तना किया जाता है ताकि मूसा की
शरी'अत का हुक्म न टूटे; तो क्या मुझ से इसलिए नाराज़ हो कि
मैंने सबत के दिन एक आदमी को बिल्कुल तन्दरुस्त कर दिया?
24 ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करो, बल्कि इन्साफ़ से फ़ैसला
करो।” **25** तब कुछ येरूशलेमी कहने लगे, “क्या ये वही नहीं
जिसके क़त्ल की कोशिश हो रही है? **26** लेकिन देखो, ये साफ़ —
साफ़ कहता है और वो इससे कुछ नहीं कहते। क्या हो सकता है कि
सरदारों से सच जान लिया कि मसीह यही है? **27** इसको तो हम
जानते हैं कि कहाँ का है, मगर मसीह जब आएगा तो कोई न जानेगा
कि वो कहाँ का है।” **28** पस ईसा ने हैकल में ता'लीम देते वक़्त
पुकार कर कहा, “तुम मुझे भी जानते हो, और ये भी जानते हो कि
मैं कहाँ का हूँ; और मैं आप से नहीं आया, मगर जिसने मुझे भेजा है
वो सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते। **29** मैं उसे जानता हूँ, इसलिए
कि मैं उसकी तरफ़ से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।” **30** पस वो उसे
पकड़ने की कोशिश करने लगे, लेकिन इसलिए कि उसका वक़्त
अभी न आया था, किसी ने उस पर हाथ न डाला। **31** मगर भीड़ में
से बहुत सारे उस पर ईमान लाए, और कहने लगे, “मसीह जब
आएगा, तो क्या इनसे ज़्यादा मोजिज़े दिखाएगा?” जो इसने दिखाए।
32 फ़रीसियों ने लोगों को सुना कि उसके बारे में चुपके — चुपके ये
बातें करते हैं, पस सरदार काहिनों और फ़रीसियों ने उसे पकड़ने को
प्यादे भेजे। **33** ईसा ने कहा, “मैं और थोड़े दिनों तक तुम्हारे पास

हूँ, फिर अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा। 34 तुम मुझे ढूँडोगे
मगर न पाओगे, और जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते।” 35 हमारे
यहूदियों ने आपस में कहा, ये कहाँ जाएगा कि हम इसे न पाएँगे?
क्या उनके पास जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास
जाएगा जो यूनानियों में अक्सर रहते हैं, और यूनानियों को ता'लीम
देगा? 36 ये क्या बात है जो उसने कही, “तुम मुझे तलाश करोगे
मगर न पाओगे, 'और, 'जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते'?” 37 फिर
ईद के आख़िरी दिन जो ख़ास दिन है, ईसा खड़ा हुआ और पुकार
कर कहा, “अगर कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिए। 38 जो
मुझ पर ईमान लाएगा उसके अन्दर से, जैसा कि किताब — ए —
मुक़द्दस में आया है, ज़िन्दगी के पानी की नदियाँ जारी होंगी।” 39
उसने ये बात उस रूह के बारे में कही, जिसे वो पाने को थे जो उस
पर ईमान लाए; क्यूँकि रूह अब तक नाज़िल न हुई थी, इसलिए कि
ईसा अभी अपने जलाल को न पहुँचा था। 40 पस भीड़ में से कुछ
ने ये बातें सुनकर कहा, “बेशक यही वो नबी है।” 41 औरों ने
कहा, ये मसीह है। “और कुछ ने कहा, क्यूँ? क्या मसीह गलील से
आएगा? 42 क्या किताब — ए — मुक़द्दस में से नहीं आया, कि
मसीह दाऊद की नस्ल और बैतलहम के गाँव से आएगा, जहाँ का
दाऊद था?” 43 पस लोगों में उसके बारे में इख़्तिलाफ़ हुआ। 44
और उनमें से कुछ उसको पकड़ना चाहते थे, मगर किसी ने उस पर
हाथ न डाला। 45 पस प्यादे सरदार काहिनों और फ़रीसियों के पास
आए; और उन्होंने उनसे कहा, “तुम उसे क्यूँ न लाए?” 46 प्यादों
ने जवाब दिया कि, “इंसान ने कभी ऐसा कलाम नहीं किया।” 47
फ़रीसियों ने उन्हें जवाब दिया, “क्या तुम भी गुमराह हो गए? 48
भला इख़्तियार वालों या फ़रीसियों मैं से भी कोई उस पर ईमान
लाया? 49 मगर ये 'आम लोग जो शरी'अत से वाक़िफ़ नहीं ला'नती
हैं।” 50 नीकुदेमुस ने, जो पहले उसके पास आया था, उनसे कहा,
51 “क्या हमारी शरी'अत किसी शख़्स को मुजरिम ठहराती है, जब
तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वो क्या करता है?” 52
उन्होंने उसके जवाब में कहा, “क्या तू भी गलील का है? तलाश
कर और देख, कि गलील में से कोई नबी नाज़िल नहीं होने का।”
53 [फिर उनमें से हर एक अपने घर चला गया।

8 तब ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर गया। 2 दूसरे दिन सुबह सवेरे ही
वो फिर हैकल में आया, और सब लोग उसके पास आए और
वो बैठकर उन्हें ता'लीम देने लगा। 3 और फ़क़ीह और फ़रीसी
एक 'औरत को लाए जो ज़िना में पकड़ी गई थी, और उसे बीच में
खड़ा करके ईसा से कहा, 4 “ऐ उस्ताद! ये 'औरत ज़िना के 'ऐन
वक़्त पकड़ी गई है। 5 तौरेत में मूसा ने हम को हुक्म दिया है, कि
ऐसी 'औरतों पर पथराव करें। पस तू इस 'औरत के बारे में क्या
कहता है?” 6 उन्होंने उसे आज़माने के लिए ये कहा, ताकि उस
पर इल्ज़ाम लगाने की कोई वजह निकालें। मगर ईसा झुक कर
उंगली से ज़मीन पर लिखने लगा। 7 जब वो उससे सवाल करते
ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, “जो तुम में बेगुनाह हो,
वही पहले उसको पत्थर मारे।” 8 और फिर झुक कर ज़मीन पर
उंगली से लिखने लगा। 9 वो ये सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक
एक — एक करके निकल गए, और ईसा अकेला रह गया और
'औरत वहीं बीच में रह गई। 10 ईसा ने सीधे होकर उससे कहा, “ऐ
'औरत, ये लोग कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर सज़ा का हुक्म
नहीं लगाया?” 11 उसने कहा, “ऐ ख़ुदावन्द! किसी ने नहीं।”
ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर सज़ा का हुक्म नहीं लगाता; जा,
फिर गुनाह न करना]” 12 ईसा ने फिर उनसे मुख़ातिब होकर कहा,
“दुनियाँ का नूर मैं हूँ; जो मेरी पैरवी करेगा वो अन्धेरे में न चलेगा,
बल्कि ज़िन्दगी का नूर पाएगा।” 13 फ़रीसियों ने उससे कहा, “तू
अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही सच्ची नहीं।” 14 ईसा ने
जवाब में उनसे कहा, “अगरचे मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तो भी
मेरी गवाही सच्ची है; क्यूँकि मुझे मा'लूम है कि मैं कहाँ से आता हूँ
या कहाँ को जाता हूँ। 15 तुम जिस्म के मुताबिक़ फ़ैसला करते हो,
मैं किसी का फ़ैसला नहीं करता। 16 और अगर मैं फ़ैसला करूँ भी
तो मेरा फ़ैसला सच है; क्यूँकि मैं अकेला नहीं, बल्कि मैं हूँ और
मेरा बाप है जिसने मुझे भेजा है। 17 और तुम्हारी तौरेत में भी लिखा
है, कि दो आदमियों की गवाही मिलकर सच्ची होती है। 18 एक मैं
ख़ुद अपनी गवाही देता हूँ, और एक बाप जिसने मुझे भेजा मेरी
गवाही देता है।” 19 उन्होंने उससे कहा, “तेरा बाप कहाँ है?” ईसा
ने जवाब दिया, “न तुम मुझे जानते हो न मेरे बाप को, अगर मुझे
जानते तो मेरे बाप को भी जानते।” 20 उसने हैकल में ता'लीम देते
वक़्त ये बातें बैत — उल — माल में कहीं; और किसी ने इसको न
पकड़ा, क्यूँकि अभी तक उसका वक़्त न आया था। 21 उसने फिर
उनसे कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँडोगे और अपने गुनाह
में मरोगे।” 22 पस यहूदियों ने कहा, क्या वो अपने आपको मार
डालेगा, जो कहता है, “जहाँ मैं जाता हूँ, तुम नहीं आ सकते'?” 23
उसने उनसे कहा, “तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूँ, तुम दुनियाँ के हो
मैं दुनियाँ का नहीं हूँ। 24 इसलिए मैंने तुम से ये कहा, कि अपने
गुनाहों में मरोगे; क्यूँकि अगर तुम ईमान न लाओगे कि मैं वही हूँ,
तो अपने गुनाहों में मरोगे।” 25 उन्होंने उस से कहा, तू कौन है?
ईसा ने उनसे कहा, “वही हूँ जो शुरू' से तुम से कहता आया हूँ। 26
मुझे तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहना है और फ़ैसला करना है; लेकिन
जिसने मुझे भेजा वो सच्चा है, और जो मैंने उससे सुना वही दुनियाँ
से कहता हूँ।” 27 वो न समझे कि हम से बाप के बारे में कहता है।
28 पस ईसा ने कहा, “जब तुम इब्न — ए — आदम को ऊँचे पर
चढ़ाओगे तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपनी तरफ़ से कुछ नहीं

करता, बल्कि जिस तरह बाप ने मुझे सिखाया उसी तरह ये बातें
कहता हूँ। 29 और जिसने मुझे भेजा वो मेरे साथ है; उसने मुझे
अकेला नहीं छोड़ा, क्यूँकि मैं हमेशा वही काम करता हूँ जो उसे
पसन्द आते हैं।" 30 जब ईसा ये बातें कह रहा था तो बहुत से लोग
उस पर ईमान लाए। 31 पस ईसा ने उन यहूदियों से कहा, जिन्होंने
उसका यक़ीन किया था, "अगर तुम कलाम पर क़ाईम रहोगे, तो
हक़ीक़त में मेरे शागिर्द ठहरोगे। 32 और सच्चाई को जानोगे और
सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी।" 33 उन्होंने उसे जवाब दिया, "हम
तो अब्रहाम की नस्ल से हैं, और कभी किसी की ग़ुलामी में नहीं
रहे। तू क्यूँकर कहता है कि तुम आज़ाद किए जाओगे?" 34 ईसा ने
उन्हें जवाब दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई गुनाह
करता है गुनाह का ग़ुलाम है। 35 और ग़ुलाम हमेशा तक घर में नहीं
रहता, बेटा हमेशा रहता है। (aiōn g165) 36 पस अगर बेटा तुम्हें
आज़ाद करेगा, तो तुम वाक़'ई आज़ाद होगे। 37 मैं जानता हूँ तुम
अब्रहाम की नस्ल से हो, तभी मेरे क़त्ल की कोशिश में हो क्यूँकि
मेरा कलाम तुम्हारे दिल में जगह नहीं पाता। 38 मैंने जो अपने बाप
के यहाँ देखा है वो कहता हूँ, और तुम ने जो अपने बाप से सुना
वो करते हो।" 39 उन्होंने जवाब में उससे कहा, हमारा बाप तो
अब्रहाम है। ईसा ने उनसे कहा, "अगर तुम अब्रहाम के फ़र्ज़न्द
होते तो अब्रहाम के से काम करते। 40 लेकिन अब तुम मुझ जैसे
शख़्स को क़त्ल की कोशिश में हो, जिसने तुम्हें वही हक़ बात बताई
जो ख़ुदा से सुनी; अब्रहाम ने तो ये नहीं किया था। 41 तुम अपने
बाप के से काम करते हो।" उन्होंने उससे कहा, "हम हराम से
पैदा नहीं हुए। हमारा एक बाप है या'नी ख़ुदा।" 42 ईसा ने उनसे
कहा, "अगर ख़ुदा तुम्हारा होता, तो तुम मुझ से मुहब्बत रखते;
इसलिए कि मैं ख़ुदा में से निकला और आया हूँ, क्यूँकि मैं आप से
नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा। 43 तुम मेरी बातें क्यूँ नहीं
समझते? इसलिए कि मेरा कलाम सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने
बाप इब्लीस से हो और अपने बाप की ख़्वाहिशों को पूरा करना
चाहते हो। वो शुरू' ही से ख़ूनी है और सच्चाई पर क़ाइम नहीं रहा,
क्यूँकि उस में सच्चाई नहीं है। जब वो झूठ बोलता है तो अपनी ही
सी कहता है, क्यूँकि वो झूठा है बल्कि झूठ का बाप है। 45 लेकिन
मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिए तुम मेरा यक़ीन नहीं करते। 46 तुम
में से कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है? अगर मैं सच बोलता हूँ,
तो मेरा यक़ीन क्यूँ नहीं करते? 47 जो ख़ुदा से होता है वो ख़ुदा की
बातें सुनता है; तुम इसलिए नहीं सुनते कि ख़ुदा से नहीं हो।" 48
यहूदियों ने जवाब में उससे कहा, "क्या हम सच नहीं कहते, कि तू
सामरी है और तुझ में बदरूह है।" 49 ईसा ने जवाब दिया, "मुझ में
बदरूह नहीं; मगर मैं अपने बाप की इज़्ज़त करता हूँ, और तुम मेरी
बे'इज़्ज़ती करते हो। 50 लेकिन मैं अपनी तारीफ़ नहीं चाहता; हाँ,
एक है जो उसे चाहता और फ़ैसला करता है। 51 मैं तुम से सच
कहता हूँ कि अगर कोई इंसान मेरे कलाम पर 'अमल करेगा, तो
हमेशा तक कभी मौत को न देखेगा।" (aiōn g165) 52 यहूदियों ने
उससे कहा, "अब हम ने जान लिया कि तुझ में बदरूह है! अब्रहाम
मर गया और नबी मर गए, मगर तू कहता है, 'अगर कोई मेरे कलाम
पर 'अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत का मज़ा न चखेगा।
(aiōn g165) 53 हमारे बुज़ुर्ग अब्रहाम जो मर गए, क्या तू उससे बड़ा
है? और नबी भी मर गए। तू अपने आपको क्या ठहराता है?" 54
ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं आप अपनी बड़ाई करूँ, तो मेरी
बड़ाई कुछ नहीं; लेकिन मेरी बड़ाई मेरा बाप करता है, जिसे तुम
कहते हो कि हमारा ख़ुदा है। 55 तुम ने उसे नहीं जाना, लेकिन मैं
उसे जानता हूँ; और अगर कहूँ कि उसे नहीं जानता, तो तुम्हारी तरह
झूठा बनूँगा। मगर मैं उसे जानता और उसके कलाम पर 'अमल
करता हूँ। 56 तुम्हारा बाप अब्रहाम मेरा दिन देखने की उम्मीद पर
बहुत ख़ुश था, चुनाँचे उसने देखा और ख़ुश हुआ।" 57 यहूदियों ने
उससे कहा, "तेरी उम्र तो अभी पचास बरस की नहीं, फिर क्या तूने
अब्रहाम को देखा है?" 58 ईसा ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच
कहता हूँ, कि पहले उससे कि अब्रहाम पैदा हुआ मैं हूँ।" 59 पस
उन्होंने उसे मारने को पत्थर उठाए, मगर ईसा छिपकर हैकल से
निकल गया।

9 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइशी अंधा
था। 2 उस के शागिर्दों ने उस से पूछा, "उस्ताद, यह आदमी
अंधा क्यूँ पैदा हुआ? क्या इस का कोई गुनाह है या इस के वालिदैन
का?" 3 ईसा ने जवाब दिया, "न इस का कोई गुनाह है और न इस
के वालिदैन का। यह इस लिए हुआ कि इस की ज़िन्दगी में ख़ुदा का
काम ज़ाहिर हो जाए। 4 अभी दिन है। ज़रूरी है कि हम जितनी देर
तक दिन है उस का काम करते रहें जिस ने मुझे भेजा है। क्यूँकि रात
आने वाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन
जितनी देर तक मैं दुनियाँ में हूँ उतनी देर तक मैं दुनियाँ का नूर हूँ।"
6 यह कह कर उस ने ज़मीन पर थूक कर मिट्टी सानी और उस की
आँखों पर लगा दी। 7 उस ने उस से कहा, "जा, शिलोख़ के हौज़
में नहा ले।" (शिलोख़ का मतलब 'भेजा हुआ' है)। अंधे ने जा कर
नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था। 8 उस के
साथी और वह जिन्हों ने पहले उसे भीख माँगते देखा था पूछने लगे,
"क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?" 9 बाज़ ने
कहा, "हाँ, वही है।" औरों ने इन्कार किया, "नहीं, यह सिर्फ़
उस का हमशक्ल है।" लेकिन आदमी ने ख़ुद इस्रार किया, "मैं
वही हूँ।" 10 उन्हों ने उस से सवाल किया, "तेरी आँखें किस
तरह सही हुईं?" 11 उस ने जवाब दिया, "वह आदमी जो ईसा
कहलाता है उस ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उस

ने मुझे कहा, 'शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहाले।' मैं वहाँ गया
और नहाते ही मेरी आँखें सही हो गई। 12 उन्हों ने पूछा, वह कहाँ
है? उसने कहा, मैं नहीं जानता'' 13 तब वह सही हुए अंधे को
फ़रीसियों के पास ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सान कर उस
की आँखों को सही किया था वह सबत का दिन था। 15 इस लिए
फ़रीसियों ने भी उस से पूछ — ताछ की कि उसे किस तरह आँख
की रौशनी मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, "उस ने मेरी आँखों
पर मिट्टी लगा दी, फिर मैं ने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।"
16 फ़रीसियों में से कुछ ने कहा, "यह शख़्स ख़ुदा की तरफ़ से नहीं
है, क्यूँकि सबत के दिन काम करता है।" 17 फिर वह दुबारा उस
आदमी से मुख़ातिब हुए जो पहले अंधा था, "तू ख़ुद उस के बारे में
क्या कहता है? उस ने तो तेरी ही आँखों को सही किया है।" 18
यहूदी अगुवों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह सच में अंधा था
और फिर सही हो गया है। इस लिए उन्हों ने उस के वालिदैन को
बुलाया। 19 उन्हों ने उन से पूछा, "क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही
जिस के बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह
किस तरह देख सकता है?" 20 उस के वालिदैन ने जवाब दिया,
"हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त
अंधा था। 21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख
सकता है या कि किस ने इस की आँखों को सही किया है। इस से
ख़ुद पता करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता
है।" 22 उस के वालिदैन ने यह इस लिए कहा कि वह यहूदियों
से डरते थे। क्यूँकि वह फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को
मसीह क़रार दे उसे यहूदी जमाअत से निकाल दिया जाए। 23 यही
वजह थी कि उस के वालिदैन ने कहा था, "यह बालिग़ है, इस
से ख़ुद पूछ लें।" 24 एक बार फिर उन्हों ने सही हुए अंधे को
बुलाया, "ख़ुदा को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी
गुनाहगार है।" 25 आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि
वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं
अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!" 26 फिर उन्हों ने उस से
सवाल किया, उस ने तेरे साथ क्या किया? "उस ने किस तरह तेरी
आँखों को सही कर दिया?" 27 उस ने जवाब दिया, "मैं पहले भी
आप को बता चुका हूँ और आप ने सुना नहीं। क्या आप भी उस के
शागिर्द बनना चाहते हैं?" 28 इस पर उन्हों ने उसे बुरा — भला
कहा, "तू ही उस का शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। 29 हम
तो जानते हैं कि ख़ुदा ने मूसा से बात की है, लेकिन इस के बारे में
हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।" 30 आदमी ने
जवाब दिया, "अजीब बात है, उस ने मेरी आँखों को शिफ़ा दी है
और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31 हम जानते हैं
कि ख़ुदा गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो
उस का ख़ौफ़ मानता और उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलता है। 32
शुरू ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की
आँखों को सही कर दिया हो। (aiōn g165) 33 अगर यह आदमी
ख़ुदा की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।" 34 जवाब में
उन्हों ने उसे बताया, "तू जो गुनाह की हालत में पैदा हुआ है क्या तू
हमारा उस्ताद बनना चाहता है?" यह कह कर उन्हों ने उसे जमाअत
में से निकाल दिया। 35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल
दिया गया है तो वह उस को मिला और पूछा, "क्या तू इब्न — ए
— आदम पर ईमान रखता है?" 36 उस ने कहा, "ख़ुदावन्द, वह
कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।" 37 ईसा ने
जवाब दिया, "तू ने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझ से बात कर
रहा है।" 38 उस ने कहा, "ख़ुदावन्द, मैं ईमान रखता हूँ" और उसे
सज्दा किया। 39 ईसा ने कहा, "मैं अदालत करने के लिए इस
दुनियाँ में आया हूँ, इस लिए कि अंधे देखें और देखने वाले अंधे हो
जाएँ।" 40 कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुन कर पूछने
लगे, "अच्छा, हम भी अंधे हैं?" 41 ईसा ने उन से कहा, "अगर
तुम अंधे होते तो तुम गुनाहगार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम
दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इस लिए तुम्हारा गुनाह क़ाइम
रहता है।"

10 "मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में
दाख़िल नहीं होता बल्कि किसी ओर से कूद कर अन्दर घुस
आता है वह चोर और डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाज़े से दाख़िल
होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौकीदार उस के लिए दरवाज़ा
खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर
एक भेड़ का नाम ले कर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। 4
अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उन के आगे आगे
चलने लगता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्यूँकि
वह उस की आवाज़ पहचानती हैं। 5 लेकिन वह किसी अजनबी के
पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उस से भाग जाएँगी, क्यूँकि वह उस की
आवाज़ नहीं पहचानतीं।" 6 ईसा ने उन्हें यह मिसाल पेश की,
लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है। 7 इस लिए
ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, "मैं तुम को सच बताता हूँ कि
भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं हूँ। 8 जितने भी मुझ से पहले आए वह
चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उन की न सुनी। 9 मैं ही दरवाज़ा
हूँ। जो भी मेरे ज़रिए अन्दर आए उसे नजात मिलेगी। वह आता
जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा। 10 चोर तो सिर्फ़ चोरी करने,
ज़बह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इस लिए आया हूँ
कि वह ज़िन्दगी पाएँ, बल्कि कस्रत की ज़िन्दगी पाएँ। 11 अच्छा
चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान
देता है। 12 मज़दूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्यूँकि

भेड़ें उस की अपनी नहीं होतीं। इस लिए जूँ ही कोई भेड़िया आता
है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़ कर भाग जाता है। नतीजे
में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाक़ियों को इधर उधर कर
देता है। 13 वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िक्र
नहीं करता। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ
और वह मुझे जानती हैं, 15 बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे
जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी
जान देता हूँ। 16 मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। ज़रूरी
है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही
गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा। 17 मेरा बाप मुझे इस लिए
मुहब्बत करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ।
18 कोई मेरी जान मुझ से छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी
मर्ज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़्तियार है और उसे वापस लेने
का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।" 19
इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फ़ूट पड़ गई। 20 बहुतों ने कहा,
"यह बदरूह के क़ब्ज़े में है, यह दीवाना है। इस की क्यूँ सुनें!" 21
लेकिन औरों ने कहा, "यह ऐसी बातें नहीं हैं जो इंसान बदरूह के
क़ब्ज़े में हो। क्या बदरूह अँधों की आँखें सही कर सकती हैं?" 22
सर्दियों का मौसम था और ईसा बैत — उल — मुक़द्दस की ख़ास
'ईद तज्दीद के दौरान येरूशलेम में था। 23 वह बैत — उल —
मुक़द्दस के उस बरामदेह में टहेल रहा था जिस का नाम सुलैमान का
बरामदह था। 24 यहूदी उसे घेर कर कहने लगे, आप हमें कब तक
उलझन में रखेंगे? "अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।"
25 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को बता चुका हूँ, लेकिन तुम को
यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह
मेरे गवाह हैं। 26 लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्यूँकि तुम मेरी भेड़ें
नहीं हो। 27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और
वह मेरे पीछे चलती हैं। 28 मैं उन्हें हमेशा की ज़िन्दगी देता हूँ, इस
लिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न
लेगा, **(aiōn g165, aiōnios g166)** 29 क्यूँकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे
सपुर्द किया है और वही सब से बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से
छीन नहीं सकता। 30 मैं और बाप एक हैं।" 31 यह सुन कर यहूदी
दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा पर पथराव करें। 32 उस ने उन
से कहा, "मैं ने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई ख़ुदाई करिश्मे दिखाए
हैं। तुम मुझे इन में से किस करिश्मे की वजह से पथराव कर रहे
हो?" 33 यहूदियों ने जवाब दिया, "हम तुम पर किसी अच्छे काम
की वजह से पथराव नहीं कर रहे बल्कि कुफ़्र बकने की वजह से।
तुम जो सिर्फ़ इंसान हो ख़ुदा होने का दावा करते हो।" 34 ईसा
ने कहा, "क्या यह तुम्हारी शरी'अत में नहीं लिखा है कि 'ख़ुदा
ने फ़रमाया, तुम ख़ुदा हो'? 35 उन्हें 'ख़ुदा' कहा गया जिन तक
यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलाम — ए —
मुक़द्दस को रद्द नहीं किया जा सकता। 36 तो फिर तुम कुफ़्र बकने
की बात क्यूँ करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं ख़ुदा का फ़र्ज़न्द हूँ?
आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे ख़ास करके दुनियाँ में भेजा है। 37 अगर मैं
अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। 38 लेकिन अगर
उस के काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम से कम
उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ
जाओगे कि बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ।" 39 एक बार फिर
उन्हों ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उन के हाथ से
निकल गया। 40 फिर ईसा दुबारा दरिया — ए — यर्दन के पार उस
जगह चला गया जहाँ युहन्ना शुरू में बपतिस्मा दिया करता था।
वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत से लोग उस के पास आते रहे।
उन्हों ने कहा, "युहन्ना ने कभी कोई ख़ुदाई करिश्मा न दिखाया,
लेकिन जो कुछ उस ने इस के बारे में बयान किया, वह बिल्कुल
सही निकला।" 42 और वहाँ बहुत से लोग ईसा पर ईमान लाए।

11 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिस का नाम
लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत
— अनियाह में रहता था। 2 यह वही मरियम थी जिस ने बाद में
ख़ुदावन्द पर ख़ुश्बू डाल कर उस के पैर अपने बालों से ख़ुश्क किए
थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनाँचे बहनों ने ईसा को
ख़बर दी, "ख़ुदावन्द, जिसे आप मुहब्बत करते हैं वह बीमार है।"
4 जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उस ने कहा, "इस बीमारी का
अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह ख़ुदा के जलाल के वास्ते हुआ है,
ताकि इस से ख़ुदा के फ़र्ज़न्द को जलाल मिले।" 5 ईसा मर्था,
मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। 6 तो भी वह लाज़र के
बारे में ख़बर मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा। 7 फिर उस
ने अपने शागिर्दों से बात की, "आओ, हम दुबारा यहूदिया चले
जाएँ।" 8 शागिर्दों ने एतराज़ किया, "उस्ताद, अभी अभी वहाँ के
यहूदी आप पर पथराव करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप
वापस जाना चाहते हैं?" 9 ईसा ने जवाब दिया, "क्या दिन में रोशनी
के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता फिरता है
वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्यूँकि वह इस दुनियाँ की
रोशनी के ज़रिए देख सकता है। 10 लेकिन जो रात के वक़्त चलता
है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्यूँकि उस के पास रोशनी नहीं
है।" 11 फिर उस ने कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन
मैं जा कर उसे जगा दूँगा।" 12 शागिर्दों ने कहा, "ख़ुदावन्द, अगर
वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।" 13 उन का ख़याल था कि ईसा
लाज़र की दुनियावी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में
वह उस की मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। 14 इस लिए उस ने
उन्हें साफ़ बता दिया, "लाज़र की मौत हो गई है 15 और तुम्हारी

ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उस के मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्यूँकि
अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उस के पास जाएँ।” 16 तोमा ने
जिस का लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो,
हम भी वहाँ जा कर उस के साथ मर जाएँ।” 17 वहाँ पहुँच कर ईसा
को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। 18
बैत — अनियाह का येरूशलेम से फ़ासिला तीन क़िलोमीटर से कम
था, 19 और बहुत से यहूदी मर्था और मरियम को उन के भाई के
बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे। 20 यह सुन कर कि ईसा
आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21
मर्था ने कहा, “ख़ुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।
22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी ख़ुदा आप को जो भी माँगोगे
देगा।” 23 ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।” 24 मर्था
ने जवाब दिया, जी, “मुझे मालूम है कि वह क़यामत के दिन जी
उठेगा, जब सब जी उठेंगे।” 25 ईसा ने उसे बताया, “क़यामत और
ज़िन्दगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िन्दा रहेगा, चाहे वह
मर भी जाए। 26 और जो ज़िन्दा है और मुझ पर ईमान रखता है वह
कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?” (aiōn
g165) 27 मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, मैं ईमान रखती हूँ कि
आप ख़ुदा के फ़र्ज़न्द मसीह हैं, जिसे दुनियाँ में आना था।” 28 यह
कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया,
“उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” 29 यह सुनते ही मरियम
उठ कर ईसा के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह
ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से हुई थी। 31 जो यहूदी घर
में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि
वह जल्दी से उठ कर निकल गई है तो वह उस के पीछे हो लिए।
क्यूँकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई
की क़ब्र पर जा रही है। 32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे
देखते ही वह उस के पैरों में गिर गई और कहने लगी, “ख़ुदावन्द,
अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।” 33 जब ईसा ने मरियम
और उस के लोगों को रोते देखा तो उसे दुःख हुआ। और उसने
ताअ'ज्जुब होकर 34 उस ने पूछा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?”
उन्होंने जवाब दिया, “आएँ ख़ुदावन्द, और देख लें।” 35 ईसा “रो
पड़ा। 36 यहूदियों ने कहा, देखो, वह उसे कितना प्यारा था।” 37
लेकिन उन में से कुछ ने कहा, इस आदमी ने अंधे को सही किया।
“क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?” 38 फिर ईसा
दुबारा बहुत ही मायूस हो कर क़ब्र पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिस
के मुँह पर पत्थर रखा गया था। 39 ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा
दो।” लेकिन मर्हूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, “ख़ुदावन्द,
बदबू आएगी, क्यूँकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।” 40 ईसा ने
उस से कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो
ख़ुदा का जलाल देखेगी?” 41 चुनाँचे उन्होंने पत्थर को हटा दिया।
फिर ईसा ने अपनी नज़र उठा कर कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता
हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। 42 मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी
सुनता है। लेकिन मैं ने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की,
ताकि वह ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा ज़ोर से
पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!” 44 और मुर्दा निकल आया।
अभी तक उस के हाथ और पाँओ पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उस
का चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उन से कहा, “इस
के कफ़न को खोल कर इसे जाने दो।” 45 उन यहूदियों में से जो
मरियम के पास आए थे बहुत से ईसा पर ईमान लाए जब उन्हों ने
वह देखा जो उस ने किया। 46 लेकिन कुछ फ़रीसियों के पास गए
और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब राहनुमा इमामों
और फ़रीसियों ने यहूदियों ने सदरे अदालत का जलसा बुलाया।
उन्हों ने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत
से ख़ुदाई करिश्मे दिखा रहा है। 48 अगर हम उसे यूँही छोड़ें तो
आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी हाकिम आ
कर हमारे बैत — उल — मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर
देंगे।” 49 उन में से एक काइफ़ा था जो उस साल इमाम — ए —
आज़म था। उस ने कहा, “आप कुछ नहीं समझते 50 और इस का
ख़याल भी नहीं करते कि इस से पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए
बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” 51 उस ने
यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमाम — ए —
आज़म की हैसियत से ही उस ने यह पेशीनगोई की कि ईसा यहूदी
क़ौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़ इस के लिए बल्कि ख़ुदा के
बिखरे हुए फ़र्ज़न्दों को जमा करके एक करने के लिए भी। 53 उस
दिन से उन्हों ने ईसा को क़त्ल करने का इरादा कर लिया। 54 इस
लिए उस ने अब से एलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा,
बल्कि उस जगह को छोड़ कर रेगिस्तान के क़रीब एक इलाक़े में
गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़्राईम में रहने
लगा। 55 फिर यहूदियों की ईद — ए — फ़सह क़रीब आ गई।
देहात से बहुत से लोग अपने आप को पाक करवाने के लिए ईद से
पहले पहले येरूशलेम पहुँचे। 56 वहाँ वह ईसा का पता करते और
हैकल में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या ख़याल है? क्या वह
ईद पर नहीं आएगा?” 57 लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने
हुक्म दिया था, अगर किसी को मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो
वह ख़बर दे ताकि हम उसे गिरफ़्तार कर लें।

12 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत —
अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर
था जिसे ईसा ने मुर्दों में से ज़िन्दा किया था। 2 वहाँ उस के लिए
एक ख़ास खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की ख़िदमत कर

रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में
शरीक था। 3 फिर मरियम ने आधा लीटर ख़ालिस जटामासी का
बेशक़ीमती इत्र ले कर ईसा के पैरों पर डाल दिया और उन्हें अपने
बालों से पोंछ कर ख़ुश्क किया। ख़ुश्बू पूरे घर में फैल गई। 4
लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने एतराज़ किया (बाद में
उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया) उस ने कहा, 5 “इस
इत्र की क़ीमत लगभग एक साल की मज़दूरी के बराबर थी। इसे क्यूँ
नहीं बेचा गया ताकि इस के पैसे ग़रीबों को दिए जाते?” 6 उस ने
यह बात इस लिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की फ़िक्र थी। असल में
वह चोर था। वह शागिर्दों का ख़ज़ांची था और जमाशुदा पैसों में से
ले लिया करता था। 7 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उस ने
मेरी दफ़नाने की तय्यारी के लिए यह किया है। 8 ग़रीब तो हमेशा
तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।” 9 इतने
में यहूदियों की बड़ी तहदाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न
सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उस ने
मुर्दों में से ज़िन्दा किया था। 10 इस लिए राहनुमा इमामों ने लाज़र
को भी क़त्ल करने का इरादा बनाया। 11 क्यूँकि उस की वजह से
बहुत से यहूदी उन में से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे। 12
अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा
येरूशलेम आ रहा है। एक बड़ा मजमा 13 खजूर की डालियाँ पकड़े
शहर से निकल कर उस से मिलने आया। चलते चलते वह चिल्ला
कर नहरे लगा रहे थे, “होशाना! मुबारक है वह जो रब्ब के नाम से
आता है! इस्राईल का बादशाह मुबारक है!” 14 ईसा को कहीं से
एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह
कलाम — ए — मुक़द्दस में लिखा है, 15 “ऐ सिय्यून की बेटी, मत
डर! देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।” 16 उस
वक़्त उस के शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में
जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने
उस के साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलाम —
ए — मुक़द्दस में इस का ज़िक्र भी है। 17 जो मजमा उस वक़्त ईसा
के साथ था जब उस ने लाज़र को मुर्दों में से ज़िन्दा किया था, वह
दूसरों को इस के बारे में बताता रहा था। 18 इसी वजह से इतने लोग
ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्हों ने उस के इस ख़ुदाई करिश्मे
के बारे में सुना था। 19 यह देख कर फ़रीसी आपस में कहने लगे,
“आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनियाँ उस
के पीछे हो ली है।” 20 कुछ यूनानी भी उन में थे जो फ़सह की
ईद के मौक़े पर इबादत करने के लिए आए हुए थे। 21 अब वह
फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत — सैदा से था। उन्हों
ने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।” 22 फ़िलिप्पुस ने
अन्द्रियास को यह बात बताई और फिर वह मिल कर ईसा के पास
गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई। 23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया,
“अब वक़्त आ गया है कि इब्न — ए — आदम को जलाल मिले।
24 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जब तक गन्दुम का दाना ज़मीन में
गिर कर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर
जाता है तो बहुत सा फल लाता है। 25 जो अपनी जान को प्यार
करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनियाँ में अपनी जान से
दुश्मनी रखता है वह उसे हमेशा तक बचाए रखेगा। (aiōnios g166)
26 अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले,
क्यूँकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत
करे मेरा बाप उस की इज़्ज़त करेगा। 27 “अब मेरा दिल घबराता
है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए
रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप, अपने नाम को
जलाल दे।” पस आसमान से आवाज़ आई कि मैंने उस को जलाल
दिया है और भी दूँगा 29 मजमा के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्हों ने
यह सुन कर कहा, बादल गरज रहे हैं। औरों ने ख़याल पेश किया,
“कोई फ़रिश्ते ने उस से बातें की” 30 ईसा ने उन्हें बताया, “यह
आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनियाँ की
अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनियाँ पे हुकूमत करने
वालों को निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर
चढ़ाए जाने के बाद सब को अपने पास बुला लूँगा।” 33 इन बातों
से उस ने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।
34 मजमा बोल उठा, कलाम — ए — मुक़द्दस से हम ने सुना है कि
मसीह हमेशा तक क़ाईम रहेगा। तो फिर आप की यह कैसी बात है
कि “इब्न — ए — आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है?” आख़िर
इब्न — ए — आदम है कौन? (aiōn g165) 35 ईसा ने जवाब दिया,
“रोशनी थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगी। जितनी देर वह मौजूद है
इस रोशनी में चलते रहो ताकि अँधेरा तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे
में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। 36 रोशनी
तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि
तुम ख़ुदा के फ़र्ज़न्द बन जाओ।” 37 अगरचे ईसा ने यह तमाम
ख़ुदाई करिश्मे उन के सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न
लाए। 38 यूँ यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, “ऐ रब्ब, कौन
हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया? और रब्ब की क़ुद्रत किस पर ज़ाहिर
हुई?” 39 चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने
कहीं और फ़रमाया है, 40 “ख़ुदा ने उन की आँखों को अंधा किया
और उन के दिल को बेहिस्स कर दिया है, नही तो वो अपनी आँखो
से देखेंगे और अपने दिल से समझेंगे, और मेरी तरफ रजु करें, और
मै उन्हे शिफ़ा दूं।” 41 यसायाह ने यह इस लिए फ़रमाया क्यूँकि उस
ने ईसा का जलाल देख कर उस के बारे में बात की। 42 तो भी बहुत
से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उन में कुछ राहनुमा भी शामिल थे।

लेकिन वह इस का खुला इक़रार नहीं करते थे, क्यूँकि वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमाअत से निकाल देंगे। 43 असल में वह ख़ुदा की इज़्ज़त के बजाए इंसान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे। 44 फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिस ने मुझे भेजा है। 45 और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिस ने मुझे भेजा है। 46 मैं रोशनी की तरह से इस दुनियाँ में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह अंधेरे में न रहे। 47 जो मेरी बातें सुन कर उन पर अमल नहीं करता मैं उसका इन्साफ़ नहीं करूँगा, क्यूँकि मैं दुनियाँ का इन्साफ़ करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए। 48 तो भी एक है जो उस का इन्साफ़ करता है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें क़ुबूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क़यामत के दिन उस का इन्साफ़ करेगा। 49 क्यूँकि जो कुछ मैं ने बयान किया है वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजने वाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। 50 और मैं जानता हूँ कि उस का हुक्म हमेशा की ज़िन्दगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही है जो बाप ने मुझे बताया है।” (aiōnios g166)

13 फ़सह की ईद अब शुरू होने वाली थी। ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया है कि मुझे इस दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास जाना है। अगरचे उस ने हमेशा दुनियाँ में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उस ने आख़िरी हद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया। 2 फिर शाम का खाना तय्यार हुआ। उस वक़्त इब्लीस शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे हवाले कर दिया है और कि मैं ख़ुदा से निकल आया और अब उस के पास वापस जा रहा हूँ। 4 चुनाँचे उस ने दस्तरख़्वान से उठ कर अपना चोग़ा उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया। 5 फिर वह बासन में पानी डाल कर शागिर्दों के पैर धोने और बँधे हुए तौलिया से पोंछ कर ख़ुश्क करने लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उस ने कहा, “ख़ुदावन्द, आप मेरे पैर धोना चाहते हैं?” 7 ईसा ने जवाब दिया, “इस वक़्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।” 8 पतरस ने एतराज़ किया, “मैं कभी भी आप को मेरे पैर धोने नहीं दूँगा!” ईसा ने जवाब दिया “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरी कोई शराकत नहीं।” (aiōn g165) 9 यह सुन कर पतरस ने कहा, “तो फिर ख़ुदावन्द, न सिर्फ़ मेरे पैर बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!” 10 ईसा ने जवाब दिया, “जिस शख़्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पैरो को धोने की ज़रूरत होती है, क्यूँकि वह पूरे तौर पर पाक — साफ़ है। तुम पाक — साफ़ हो, लेकिन सब के सब नहीं।” 11 (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इस लिए उस ने कहा कि सब के सब पाक — साफ़ नहीं हैं)। 12 उन सब के पैरो को धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास पहन कर बैठ गया। उस ने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या किया है? 13 तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘ख़ुदावन्द’ कह कर मुख़ातिब करते हो और यह सही है, क्यूँकि मैं यही कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे ख़ुदावन्द और उस्ताद ने तुम्हारे पैर धोए। इस लिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पैर धोया करो। 15 मैंने तुम को एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैं ने तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं तुम को सच बताता हूँ कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़म्बर अपने भेजने वाले से। 17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, तभी तुम मुबारिक होगे। 18 मैं तुम सब की बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलाम — ए — मुक़द्दस की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, जो मेरी रोटी खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई है। 19 मैं तुम को इस से पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो शख़्स उसे क़ुबूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे क़ुबूल करता है। और जो मुझे क़ुबूल करता है वह उसे क़ुबूल करता है जिस ने मुझे भेजा है।” 21 इन अल्फ़ाज़ के बाद ईसा बेहद दुखी हुआ और कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम में से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।” 22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देख कर सोचने लगे कि ईसा किस की बात कर रहा है। 23 एक शागिर्द जिसे ईसा मुहब्बत करता था उस के बिल्कुल क़रीब बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उस से पूछे कि वह किस की बात कर रहा है। 25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुका कर पूछा, “ख़ुदावन्द, वह कौन है?” 26 ईसा ने जवाब दिया, “जिसे मैं रोटी का निवाला शोर्बे में डुबो कर दूँ, वही है।” फिर निवाले को डुबो कर उस ने शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे दिया। 27 जैसे ही यहूदाह ने यह निवाला ले लिया इब्लीस उस में बस गया। ईसा ने उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।” 28 लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यूँ कहा। 29 कुछ का ख़याल था कि चूँकि यहूदाह ख़ज़ांची था इस लिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए ज़रूरी चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में कुछ बाँट दे। 30 चुनाँचे ईसा से यह निवाला लेते ही यहूदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था। 31 यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, “अब इब्न — ए — आदम ने जलाल पाया और ख़ुदा ने उस में जलाल पाया है। 32 हाँ, चूँकि ख़ुदा को उस में जलाल मिल गया है इस लिए ख़ुदा अपने में फ़र्ज़न्द को जलाल देगा। और वह यह

जलाल फ़ौरन देगा। 33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास
ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों को बता
चुका हूँ वह अब तुम को भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम
नहीं आ सकते। 34 मैं तुम को एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक
दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैं ने तुम से मुहब्बत रखी उसी
तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक दूसरे से
मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।” 36 पतरस
ने पूछा, ख़ुदावन्द, “आप कहाँ जा रहे हैं?” ईसा ने जवाब दिया
“जहाँ में जाता हूँ अब तो तू मेरे पीछे आ नहीं सकता लेकिन बाद में
तू मेरे पीछे आ जाएगा।” 37 पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावन्द, मैं
आप के पीछे अभी क्यूँ नहीं जा सकता? मैं आप के लिए अपनी
जान तक देने को तय्यार हूँ।” 38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू
मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग़
के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मर्तबा मुझे जानने से इन्कार कर
चुका होगा।”

14 “तुम्हारा दिल न घबराए। तुम ख़ुदा पर ईमान रखते हो, मुझ
पर भी ईमान रखो। 2 मेरे आसमानी बाप के घर में बेशुमार
मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुम को बताता कि मैं तुम्हारे
लिए जगह तय्यार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 3 और अगर मैं
जा कर तुम्हारे लिए जगह तय्यार करूँ तो वापस आ कर तुम को
अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो।” 4 “और
जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।” 5 तोमा बोल उठा,
“ख़ुदावन्द, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम
उस की राह किस तरह जानें?” 6 ईसा ने जवाब दिया, “राह हक़
और ज़िन्दगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ
सकता। 7 अगर तुम ने मुझे जान लिया है तो इस का मतलब है कि
तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब तुम उसे जानते हो और तुम
ने उस को देख लिया है।” 8 फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ ख़ुदावन्द, बाप
को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।” 9 ईसा ने जवाब
दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इस के
बावजूद तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा उस ने बाप को देखा
है। तो फिर तू क्यूँकर कहता है, बाप को हमें दिखाएँ? 10 क्या तू
ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है? जो बातें में
तुम को बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझ में रहने वाले बाप की
तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का यक़ीन
करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है। या कम से कम उन कामों
की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं।” 12 “मैं तुम को सच
बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही करेगा जो मैं करता हूँ।
न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन से भी बड़े काम करेगा, क्यूँकि मैं बाप के
पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि
बाप को बेटे में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझ
से चाहो वह मैं करूँगा।” 15 “अगर तुम मुझे मुहब्बत करते हो
तो मेरे हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे। 16 और मैं बाप से
गुज़ारिश करूँगा तो वह तुम को एक और मददगार देगा जो हमेशा
तक तुम्हारे साथ रहेगा (aiōn g165) 17 यानी सच्चाई की रूह, जिसे
दुनियाँ पा नहीं सकती, क्यूँकि वह न तो उसे देखती न जानती है।
लेकिन तुम उसे जानते हो, क्यूँकि वह तुम्हारे साथ रहती है और
आइन्दा तुम्हारे अन्दर रहेगी।” 18 “मैं तुम को यतीम छोड़ कर
नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के
बाद दुनियाँ मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं
ज़िन्दा हूँ इस लिए तुम भी ज़िन्दा रहोगे। 20 जब वह दिन आएगा तो
तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम में।
21 जिस के पास मेरे हुक्म हैं और जो उन के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता
है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने
आप को उस पर ज़ाहिर करूँगा।” 22 यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती
नहीं) ने पूछा, “ख़ुदावन्द, क्या वजह है कि आप अपने आप को
सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनियाँ पर नहीं?” 23 ईसा ने जवाब
दिया, “अगर कोई मुझे मुहब्बत करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख़्स को मुहब्बत करेगा और हम
उस के पास आ कर उस के साथ रहा करेंगे। 24 जो मुझ से मुहब्बत
नहीं करता, वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता।
और जो कलाम तुम मुझ से सुनते हो, वह मेरा अपना कलाम नहीं है
बल्कि बाप का है जिस ने मुझे भेजा है।” 25 “यह सब कुछ मैं ने
तुम्हारे साथ रहते हुए तुम को बताया है। 26 लेकिन बाद में रूह —
ए पाक, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा, तुम को सब कुछ सिखाएगा।
यह मददगार तुम को हर बात की याद दिलाएगा जो मैं ने तुम को
बताई है।” 27 “मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही
सलामती तुम को दे देता हूँ। और मैं इसे यूँ नहीं देता जिस तरह
दुनियाँ देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। 28 तुम ने मुझ से
सुन लिया है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा। अगर
तुम मुझ से मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर ख़ुश होते कि मैं बाप
के पास जा रहा हूँ, क्यूँकि बाप मुझ से बड़ा है। 29 मैं ने तुम को
पहले से बता दिया है, कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान
लाओ। 30 अब से मैं तुम से ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्यूँकि इस
दुनियाँ का बादशाह आ रहा है। उसे मुझ पर कोई क़ाबू नहीं है, 31
लेकिन दुनियाँ यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही
कुछ करता हूँ जिस का हुक्म वह मुझे देता है।”

15 “अंगूर का हक़ीक़ी दरख़्त मैं हूँ और मेरा बाप बाग़बान है।
2 वह मेरी हर डाल को जो फल नहीं लाती काट कर फैंक

देता है। लेकिन जो डाली फल लाती है उस की वह काँट — छाँट
करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के वजह से जो मैं ने
तुम को सुनाया है तुम तो पाक — साफ़ हो चुके हो। 4 मुझ में क़ाईम
रहो तो मैं भी तुम में क़ाईम रहूँगा। जो डाल दरख़्त से कट गई है वह
फल नहीं ला सकती। बिल्कुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझ में
क़ाईम नहीं रहो तो फल नहीं ला सकते। 5 मैं ही अंगूर का दरख़्त
हूँ, और तुम उस की डालियाँ हो। जो मुझ में क़ाईम रहता है और मैं
उस में वह बहुत सा फल लाता है, क्यूँकि मुझ से अलग हो कर तुम
कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझ में क़ाईम नहीं रहता और न मैं उस
में उसे सूखी डाल की तरह बाहर फैंक दिया जाता है। और लोग उन
का ढेर लगा कर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं।
7 अगर तुम मुझ में क़ाईम रहो और मैं तुम में तो जो जी चाहे माँगो,
वह तुम को दिया जाएगा। 8 जब तुम बहुत सा फल लाते और यूँ मेरे
शागिर्द साबित होते हो तो इस से मेरे बाप को जलाल मिलता है। 9
जिस तरह बाप ने मुझ से मुहब्बत रखी है उसी तरह मैं ने तुम से भी
मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क़ाईम रहो। 10 जब तुम मेरे
हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हो तो तुम मुझ में क़ाईम रहते हो।
मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक़ चलता हूँ और
यूँ उस की मुहब्बत में क़ाईम रहता हूँ। 11 मैं ने तुम को यह इस लिए
बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुम में हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भर
कर छलक उठे।" 12 "मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार
करो जैसे मैं ने तुम को प्यार किया है। 13 इस से बड़ी मुहब्बत है
नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे
दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुम को बताता हूँ। 15 अब
से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्यूँकि ग़ुलाम नहीं जानता कि
उस का मालिक क्या करता है। इस के बजाए मैं ने कहा है कि तुम
दोस्त हो, क्यूँकि मैं ने तुम को सब कुछ बताया है जो मैं ने अपने बाप
से सुना है। 16 तुम ने मुझे नहीं चुना बल्कि मैं ने तुम को चुन लिया
है। मैं ने तुम को मुक़र्रर किया कि जा कर फल लाओ, ऐसा फल जो
क़ाईम रहे। फिर बाप तुम को वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम से
माँगोगे। 17 मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।" 18
अगर दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उस ने
तुम से पहले मुझ से दुश्मनी रखी है। 19 अगर तुम दुनियाँ के होते तो
दुनियाँ तुम को अपना समझ कर प्यार करती। लेकिन तुम दुनियाँ के
नहीं हो। मैं ने तुम को दुनियाँ से अलग करके चुन लिया है। इस
लिए दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखती है। 20 वह बात याद करो जो मैं ने
तुम को बताई कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर
उन्हों ने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और अगर उन्हों ने मेरे
कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी
अमल करेंगे। 21 लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम
की वजह से करेंगे, क्यूँकी वह उसे नहीं जानते जिस ने मुझे भेजा
है। 22 अगर मैं आया न होता और उन से बात न की होती तो वह
क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन के गुनाह का कोई भी उज़्र
बाक़ी नहीं रहा। 23 जो मुझ से दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी
दुश्मनी रखता है। 24 अगर मैं ने उन के दरमियान ऐसा काम न
किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह क़ुसूरवार न ठहरते।
लेकिन अब उन्हों ने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझ से और मेरे
बाप से दुश्मनी रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलाम —
ए — मुक़द्दस की यह नबुव्वत पूरी हो जाए कि 'उन्होंने कहा है 26
जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़ से तुम्हारे पास
भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो
बाप में से निकलता है। 27 तुम को भी मेरे बारे में गवाही देना है,
क्यूँकी तुम शुरू से ही मेरे साथ रहे हो।"

16 "मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि तुम गुमराह न
हो जाओ। 2 वह तुम को यहूदी जमाअतों से निकाल देंगे,
बल्कि वह वक़्त भी आने वाला है कि जो भी तुम को मार डालेगा
वह समझेगा, मैंने ख़ुदा की ख़िदमत की है। 3 वह इस क़िस्म की
हरकतें इस लिए करेंगे कि उन्हों ने न बाप को जाना है, न मुझे। 4
(जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची
है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उस की
गवाही का मक़्सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ)" 5 "लेकिन
अब मैं उस के पास जा रहा हूँ जिस ने मुझे भेजा है। तो भी तुम में से
कोई मुझ से नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' 6 इस के बजाए
तुम्हारे दिल उदास हैं कि मैं ने तुम को ऐसी बातें बताई हैं। 7 लेकिन
मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है कि मैं जा
रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा।
लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और जब
वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनियाँ की
ग़लती को बेनिक़ाब करके यह ज़ाहिर करेगा: 9 गुनाह के बारे में यह
कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाज़ी के बारे में यह कि
मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, 11 और
अदालत के बारे में यह कि इस दुनियाँ के हाकिम की अदालत हो
चुकी है।" 12 "मुझे तुम को बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त
तुम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। 13 जब सच्चाई का रूह आएगा
तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी
मर्ज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह ख़ुद
सुनेगा। वही तुम को भी। मुस्तक़बिल के बारे में बताएगा 14 और
वह इस में मुझे जलाल देगा कि वह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो
उसे मुझ से मिला होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इस
लिए मैं ने कहा, रूह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से

मिला होगा।” 16 “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर
थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।” 17 उस के कुछ
शागिर्द आपस में बात करने लगे, ईसा के यह कहने से क्या मुराद है
कि “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के
बाद मुझे दुबारा देख लोगे? और इस का क्या मतलब है, मैं बाप
के पास जा रहा हूँ?” 18 और वह सोचते रहे, “यह किस क़िस्म
की‘थोड़ी देर’ है जिस का ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उन की बात
नहीं समझते।” 19 ईसा ने जान लिया कि वह मुझ से इस के बारे में
सवाल करना चाहते हैं। इस लिए उस ने कहा, “क्या तुम एक दूसरे
से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि ‘थोड़ी देर के
बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख
लोगे?’ 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम रो रो कर मातम करोगे
जबकि दुनियाँ ख़ुश होगी। तुम ग़म करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म ख़ुशी
में बदल जाएगा। 21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होने वाला
होता है तो उसे ग़म और तकलीफ़ होती है क्यूँकि उस का वक़्त आ
गया है। लेकिन जूँ ही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ ख़ुशी के मारे कि
एक इंसान दुनियाँ में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है।
22 यही तुम्हारी हालत है। क्यूँकी अब तुम उदास हो, लेकिन मैं तुम
से दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुम को ख़ुशी होगी, ऐसी ख़ुशी जो तुम
से कोई छीन न लेगा। 23 उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे। मैं
तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह
तुम को देगा। 24 अब तक तुम ने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो
तो तुम को मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।” 25 “मैं ने
तुम को यह मिसालों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब
मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त मैं मिसालों में बात नहीं करूँगा
बल्कि तुम को बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम
मेरा नाम ले कर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही
तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़्वास्त करूँगा। 27 क्यूँकी बाप ख़ुद तुम
को प्यार करता है, इस लिए कि तुम ने मुझे प्यार किया है और ईमान
लाए हो कि मैं ख़ुदा में से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप में से निकल
कर दुनियाँ में आया हूँ, और अब मैं दुनियाँ को छोड़ कर बाप के
पास वापस जाता हूँ।” 29 इस पर उस के शागिर्दों ने कहा, “अब
आप मिसालों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं। 30 अब
हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इस की
ज़रूरत नहीं कि कोई आप की पूछ — ताछ करे। इस लिए हम
ईमान रखते हैं कि आप ख़ुदा में से निकल कर आए हैं।” 31 ईसा ने
जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो? 32 देखो, वह वक़्त आ रहा
है बल्कि आ चुका है जब तुम तितर — बितर हो जाओगे। मुझे
अकेला छोड़ कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला
नहीं हूँगा क्यूँकि बाप मेरे साथ है। 33 मैं ने तुम को इस लिए यह
बात बताई ताकि तुम मुझ में सलामती पाओ। दुनियाँ में तुम मुसीबत
में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनियाँ पर ग़ालिब आया
हूँ।”

17 यह कह कर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई
और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने बेटे को
जलाल दे ताकि बेटा तुझे जलाल दे। 2 क्यूँकि तू ने उसे तमाम इंसान
ों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सब को हमेशा की ज़िन्दगी
दे जो तू ने उसे दिया हैं। (aiōnios g166) 3 और हमेशा की ज़िन्दगी
यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है और ईसा
मसीह को भी जान लें जिसे तू ने भेजा है। (aiōnios g166) 4 मैं ने
तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम को पूरा किया जिस की
ज़िम्मेदारी तू ने मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे,
ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनियाँ की पैदाइश से पहले तेरे साथ
रखता था।” 6 “मैं ने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तू
ने दुनियाँ से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तू ने उन्हें मुझे
दिया और उन्हों ने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी है। 7
अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तू ने मुझे दिया है वह तेरी
तरफ़ से है। 8 क्यूँकि जो बातें तू ने मुझे दीं मैं ने उन्हें दी हैं। नतीजे
में उन्हों ने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं
तुझ में से निकल कर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तू
ने मुझे भेजा है। 9 मैं उन के लिए दुआ करता हूँ, दुनियाँ के लिए
नहीं बल्कि उन के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्यूँकि वह तेरे ही
हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे
मुझे उन में जलाल मिला है। 11 अब से मैं दुनियाँ में नहीं हूँगा।
लेकिन यह दुनियाँ में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस
बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख, उस नाम में जो तू ने मुझे दिया
है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। 12 जितनी देर मैं उन के साथ
रहा मैं ने उन्हें तेरे नाम में महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तू ने मुझे
दिया था। मैं ने यूँ उन की निगहबानी की कि उन में से एक भी
हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़र्ज़न्द के। यूँ कलाम की
पेशीनगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं
दुनियाँ में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उन के दिल मेरी ख़ुशी
से भर कर छलक उठें। 14 मैं ने उन्हें तेरा कलाम दिया है और
दुनियाँ ने उन से दुश्मनी रखी, क्यूँकि यह दुनियाँ के नहीं हैं, जिस
तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें
दुनियाँ से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इब्लीस से महफ़ूज़ रखे। 16
वह दुनियाँ के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ। 17 उन्हें
सच्चाई के वसीले से मख़्सूस — ओ — मुक़द्दस कर। तेरा कलाम
ही सच्चाई है। 18 जिस तरह तू ने मुझे दुनियाँ में भेजा है उसी तरह
मैं ने भी उन्हें दुनियाँ में भेजा है। 19 उन की ख़ातिर मैं अपने आप

को मख़्सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख़्सूस
— ओ — मुक़द्दस किया जाए।” 20 “मेरी दुआ न सिर्फ़ इन ही के
लिए है, बल्कि उन सब के लिए भी जो इन का पैग़ाम सुन कर मुझ
पर ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझ में
है और मैं तुझ में हूँ उसी तरह वह भी हम में हों ताकि दुनियाँ यक़ीन
करे कि तू ने मुझे भेजा है। 22 मैं ने उन्हें वह जलाल दिया है जो तू ने
मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, 23 मैं उन में
और तू मुझ में। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनियाँ जान ले
कि तू ने मुझे भेजा और कि तू ने उन से मुहब्बत रखी है जिस तरह
मुझ से रखी है। 24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तू ने मुझे दिए हैं वह
भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह
जलाल जो तू ने इस लिए मुझे दिया है कि तू ने मुझे दुनियाँ को बनाने
से पहले प्यार किया है। 25 ऐ रास्तबाज़, दुनियाँ तुझे नहीं जानती,
लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तू ने मुझे
भेजा है। 26 मैं ने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर
करता रहूँगा ताकि तेरी मुझ से मुहब्बत उन में हो और मैं उन में हूँ।”

18
यह कह कर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादी
— ए — क़िद्रोन को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ।
2 यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह
से वाक़िफ़ था, क्यूँकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता
था। 3 राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों
का दस्ता और बैत — उल — मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे।
अब यह मशा'लें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। 4 ईसा
को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उस ने निकल कर
उन से पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?” 5 उन्हों ने जवाब दिया,
“ईसा नासरी को।” ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।” यहूदाह जो
उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उन के साथ खड़ा
था। 6 जब ईसा ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हट कर
ज़मीन पर गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उन से सवाल किया,
“तुम किस को ढूँड रहे हो?” 8 उस ने कहा, “मैं तुम को बता चुका
हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इन को जाने दो।” 9 यूँ
उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन में से जो तू ने मुझे दिए हैं एक
को भी नहीं खोया।” 10 शमौन पतरस के पास तलवार थी। अब
उस ने उसे मियान से निकाल कर इमाम — ए — आज़म के ग़ुलाम
का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम मलख़ुस था) 11 लेकिन
ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह
प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?” 12 फिर फ़ौजी दस्ते, उन
के अफ़्सर और बैत — उल — मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा
को गिरफ़्तार करके बाँध लिया। 13 पहले वह उसे हन्ना के पास
ले गए। हन्ना उस साल के इमाम — ए — आज़म काइफ़ा का
ससुर था। 14 काइफ़ा ही ने यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि
बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए। 15 शमौन
पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह
दूसरा शागिर्द इमाम — ए — आज़म का जानने वाला था, इस लिए
वह ईसा के साथ इमाम — ए — आज़म के सहन में दाख़िल हुआ।
16 पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमाम — ए — आज़म
का जानने वाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उस ने दरवाज़े की
निगरानी करने वाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ
अन्दर ले जाने की इजाज़त मिली। 17 उस औरत ने पतरस से पूछा,
“तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?” उस ने जवाब दिया,
“नहीं, मैं नहीं हूँ।” 18 ठन्डा थी, इस लिए ग़ुलामों और पहरेदारों
ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उस के पास खड़े
ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था। 19 इतने
में इमाम — ए — आज़म ईसा की पूछ — ताछ करके उस के
शागिर्दों और तालीमों के बारे में पूछ — ताछ करने लगा। 20 ईसा
ने जवाब में कहा, “मैं ने दुनियाँ में खुल कर बात की है। मैं हमेशा
यहूदी इबादतख़ानों और हैकल में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम
यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैं ने कुछ नहीं कहा। 21
आप मुझ से क्यूँ पूछ रहे हैं? उन से दरयाफ़्त करें जिन्हों ने मेरी बातें
सुनी हैं। उन को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।” 22 “इस
पर साथ खड़े हैकल के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़
मार कर कहा, क्या यह इमाम — ए — आज़म से बात करने का
तरीक़ा है जब वह तुम से कुछ पूछे?” 23 ईसा ने जवाब दिया,
“अगर मैं ने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच
कहा, तो तू ने मुझे क्यूँ मारा?” 24 फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई
हालत में इमाम — ए — आज़म काइफ़ा के पास भेज दिया। 25
शमौन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में
दूसरे उस से पूछने लगे, “तुम भी उस के शागिर्द हो कि नहीं?” 26
फिर इमाम — ए — आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस
आदमी का रिश्तेदार था जिस का कान पतरस ने उड़ा दिया था,
“क्या मैं ने तुम को बाग़ में उस के साथ नहीं देखा था?” 27 पतरस
ने एक बार फिर इन्कार किया, और इन्कार करते ही मुर्ग़ की बाँग
सुनाई दी। 28 फिर यहूदी ईसा को काइफ़ा से ले कर रोमी गवर्नर के
महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी
और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे,
इस लिए वह महल में दाख़िल न हुए, वर्ना वह नापाक हो जाते। 29
चुनाँचे पिलातुस निकल कर उन के पास आया और पूछा, “तुम इस
आदमी पर क्या इल्ज़ाम लगा रहे हो?” 30 उन्हों ने जवाब दिया,
“अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आप के हवाले न करते।”
31 पिलातुस ने अगुवों से कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी

शरई अदालतों में पेश करो।” लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया,
“हमें किसी को सज़ा-ए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” 32 ईसा ने
इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह की मौत मरेगा और
अब उस की यह बात पूरी हुई। 33 तब पिलातुस फिर अपने महल में
गया। वहाँ से उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, “क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?” 34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी
तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में
बताया है?” 35 पिलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ?”
तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया
है। तुम से क्या कुछ हुआ है? 36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस
दुनियाँ की नहीं है। अगर वह इस दुनियाँ की होती तो मेरे ख़ादिम
सख़्त जद्द — ओ — जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न
किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं
है।” 37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी
मक़्सद के लिए पैदा हो कर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही
दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।” 38 पीलातुस
ने पूछा, “सच्चाई क्या है?” फिर वह दुबारा निकल कर यहूदियों
के पास गया। उस ने एलान किया, “मुझे उसे मुज्रिम ठहराने की
कोई वजह नहीं मिली। 39 “लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिस के
मुताबिक़ मुझे ईद — ए — फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक
क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के
बादशाह’ को रिहा कर दूँ?” 40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने
लगे, “नहीं, इस को नहीं बल्कि बर — अब्बा को।” (बर —
अब्बा डाकू था)

19 फिर पिलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए। 2 फ़ौजियों ने
काँटेदार टहनियों का एक ताज बना कर उस के सर पर रख
दिया। उन्हों ने उसे इर्ग़वानी रंग का चोग़ा भी पहनाया। 3 फिर उस
के सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!”
और उसे थप्पड़ मारते थे। 4 एक बार फिर पिलातुस निकल आया
और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर
ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई
वजह नहीं मिली।” 5 फिर ईसा काँटेदार ताज और इर्ग़वानी रंग का
लिबास पहने बाहर आया। पिलातुस ने उन से कहा, “लो यह है वह
आदमी।” 6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाज़िम
चीख़ने लगे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें!” 7 यहूदियों
ने इसरार किया, “हमारे पास शरी'अत है और इस शरी'अत के
मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्यूँकि इस ने अपने आप को
ख़ुदा का फ़र्ज़न्द क़रार दिया है।” 8 यह सुन कर पिलातुस बहुत डर
गया। 9 दुबारा महल में जा कर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए
हो?” 10 पिलातुस ने उस से कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं
करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्लूब
करने का इख़्तियार है?” 11 ईसा ने जवाब दिया, “आप को मुझ पर
इख़्तियार न होता अगर वह आप को ऊपर से न दिया गया होता।
इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिस ने मुझे
दुश्मन के हवाले कर दिया है।” 12 इस के बाद पिलातुस ने उसे
छोड़ने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़ कर कहने लगे,
“अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहन्शाह क़ैसर के दोस्त
साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह क़ैसर की
मुख़ालिफ़त करता है।” 13 इस तरह की बातें सुन कर पिलातुस ईसा
को बाहर ले आया। फिर वह इंसाफ़ की कुर्सी पर बैठ गया। उस
जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह गब्बता
कहलाती थी)। 14 अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस
दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्यूँकि अगले दिन ईद का
आग़ाज़ था। पिलातुस बोल “उठा, लो, तुम्हारा बादशाह!” 15
लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मस्लूब करें!”
पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर
चढ़ाऊँ?” राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवा-ए-शहनशाह के
हमारा कोई बादशाह नहीं है।” 16 फिर पिलातुस ने ईसा को उन के
हवाले कर दिया ताकि उसे मस्लूब किया जाए। 17 वह अपनी
सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिस का नाम
खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुल्गुता) था। 18 वहाँ उन्हों ने उसे
सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्हों ने ईसा के बाएँ और दाएँ
हाथ दो डाकू को मस्लूब किया। 19 पिलातुस ने एक तख़्ती बनवा
कर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था,
'ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह। 20 बहुत से यहूदियों ने यह पढ़
लिया, क्यूँकि ईसा को सलीब पर चढ़ाए जाने की जगह शहर के
क़रीब थी और यह जुमला अरामी, लातिनी और यूनानी ज़बानों में
लिखा था। 21 यह देख कर यहूदियों के राहनुमा इमामों ने ऐतराज़
किया, “यहूदियों का बादशाह न लिखें बल्कि यह कि इस आदमी
ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया”। 22 पिलातुस ने
जवाब दिया, “जो कुछ मैं ने लिख दिया सो लिख दिया।” 23 ईसा
को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उस के कपड़े ले कर चार
हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोग़ा
बेजोड़ था। वह ऊपर से ले कर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े
का था। 24 इस लिए फ़ौजियों ने कहा, “आओ, इसे फाड़ कर
तक़्सीम न करें बल्कि इस पर पर्ची डालें।” यूँ कलाम — ए —
मुक़द्दस की यह पेशीनगोई पूरी हुई, “उन्हों ने आपस में मेरे कपड़े
बाँट लिए और मेरे लिबास पर पर्ची डाला।” फ़ौजियों ने यही कुछ
किया। 25 ईसा की सलीब के क़रीब: उस की माँ, उस की ख़ाला,

क्लियुपास की बीवी मरियम और मरियम मग़दलिनी खड़ी थीं।
26 जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे
प्यारा था तो उस ने कहा, "ऐ ख़ातून, देखें आप का बेटा यह है।"
27 और उस शागिर्द से उस ने कहा, "देख, तेरी माँ यह है।" उस
वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर रखा। 28 इस के
बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा काम मुकम्मल हो चुका है तो
उस ने कहा, "मुझे प्यास लगी है।" (इस से भी कलाम — ए —
मुक़द्दस की एक पेशीनगोई पूरी हुई)। 29 वहाँ सिरके से भरा हुआ
एक बरतन रखा था, उन्होंने सिरके में स्पंज डुबोकर ज़ूफ़े की डाली
पर रख कर उसके मुँह से लगाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा
बोल उठा, "काम मुकम्मल हो गया है।" और सर झुका कर उस ने
अपनी जान ख़ुदा के सपुर्द कर दी। 31 फ़सह की तैयारी का दिन था
और अगले दिन ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था। इस लिए
यहूदी नहीं चाहते थे कि मस्लूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों
पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्हों ने पिलातुस से गुज़ारिश की कि वह
उन की टाँगें तोड़वा कर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32 तब फ़ौजियों
ने आ कर ईसा के साथ मस्लूब किए जाने वाले आदमियों की टाँगें
तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह ईसा के पास
आए तो उन्हों ने देखा कि उसकी मौत हो चुकी है, इस लिए उन्हों
ने उस की टाँगें न तोड़ीं। 34 इस के बजाए एक ने भाले से ईसा का
पहलू छेद दिया। ज़ख़्म से फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला। 35
(जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची
है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उस की
गवाही का मक़्सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ)। 36 यह यूँ हुआ
ताकि कलाम — ए — मुक़द्दस की यह नबुव्वत पूरी हो जाए, "उस
की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।" 37 कलाम — ए — मुक़द्दस
में यह भी लिखा है, "वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्हों ने छेदा
है।" 38 बाद में अरिमतियाह के रहने वाले यूसुफ़ ने पिलातुस से
ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया
शागिर्द था, क्यूँकि वह यहूदियों से डरता था)। इस की इजाज़त
मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। 39 नीकुदेमुस भी
साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने
आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34
क़िलो ख़ुश्बू ले कर आया था। 40 उन्होंने ईसा की लाश को ले
लिया और यहूदी जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उस पर ख़ुश्बू लगा
कर उसे पट्टियों से लपेट दिया। 41 सलीबों के क़रीब एक बाग़ था
और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई
थी। 42 उस के क़रीब होने के वजह से उन्हों ने ईसा को उस में रख
दिया, क्यूँकि फ़सह की तय्यारी का दिन था और अगले दिन ईद की
शुरूआत होने वाली थी।

20 हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मग़दलिनी
सुबह — सवेरे क़ब्र के पास आई। अभी अँधेरा था। वहाँ
पहुँच कर उस ने देखा कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़
हटाया गया है। 2 मरियम दौड़ कर शमौन पतरस और ईसा के प्यारे
शागिर्द के पास आई। उस ने ख़बर दी, "वह ख़ुदावन्द को क़ब्र से ले
गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्हों ने उसे कहाँ रख दिया है।"
3 तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़ चल पड़ा। 4 दोनों
दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज़्यादा तेज़ रफ़्तार था। वह पहले
क़ब्र पर पहुँच गया। 5 उस ने झुक कर अन्दर झाँका तो कफ़न की
पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अन्दर न गया। 6 फिर
शमौन पतरस उस के पीछे पहुँच कर क़ब्र में दाख़िल हुआ। उस ने
भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा
भी जिस में ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया
था और पट्टियों से अलग पड़ा था। 8 फिर दूसरा शागिर्द जो पहले
पहुँच गया था, वह भी दाख़िल हुआ। जब उस ने यह देखा तो वह
ईमान लाया। 9 (लेकिन अब भी वह कलाम — ए — मुक़द्दस की
नबुव्वत नहीं समझते थे कि उसे मुर्दों में से जी उठना है)। 10 फिर
दोनों शागिर्द घर वापस चले गए। 11 लेकिन मरियम रो रो कर क़ब्र
के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उस ने झुक कर क़ब्र में झाँका 12
तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं
जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उस के सिरहाने और दूसरा
उस के पैताने थे। 13 उन्हों ने मरियम से पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यूँ
रो रही है?" उस ने कहा, "वह मेरे ख़ुदावन्द को ले गए हैं, और
मालूम नहीं कि उन्हों ने उसे कहाँ रख दिया है।" 14 फिर उस
ने पीछे मुड़ कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उस ने उसे न
पहचाना। 15 ईसा ने पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यूँ रो रही है, किस को
ढूँड रही है?" उसने बाग़बान समझ कर उस से कहा, मियाँ अगर
तूने उसको यहाँ से उठाया हो तू मुझे बता दे कि उसे कहा रखा है
ताकि मै उसे ले जाऊँ 16 ईसा ने उस से कहा, "मरियम!" उसने
मुड़कर उससे इब्रानी ज़बान में कहा "रब्बोनी ए उस्ताद" 17 ईसा
ने कहा, "मुझे मत छू, क्यूँकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं
गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, मैं अपने बाप और
तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा
के पास।" 18 चुनाँचे मरियम मग़दलिनी शागिर्दों के पास गई और
उन्हें इत्तिला दी, "मैं ने ख़ुदावन्द को देखा है और उस ने मुझ से यह
बातें कहीं।" 19 उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्हों ने
दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्यूँकि वह यहूदियों से डरते थे।
अचानक ईसा उन के दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, "तुम्हारी
सलामती हो," 20 और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया।
ख़ुदावन्द को देख कर वह निहायत ख़ुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा

कहा, "तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह
मैं तुम को भेज रहा हूँ।" **22** फिर उन पर फूँक कर उस ने फ़रमाया,
"रूह — उल — क़ुद्दूस को पा लो। **23** अगर तुम किसी के गुनाहों
को मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएँगे। और अगर तुम उन्हें
मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएँगे।" **24** बारह शागिर्दों
में से तोमा जिस का लक़ब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था।
25 चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, "हम ने ख़ुदावन्द को देखा
है!" लेकिन तोमा ने कहा, मुझे यक़ीन नहीं आता। "पहले मुझे उस
के हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उन में अपनी उंगली
डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उस के पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर
ही मुझे यक़ीन आएगा।" **26** एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा
मकान में जमा थे। इस मर्तबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों
पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उन के दरमियान आ कर खड़ा हुआ।
उस ने कहा, "तुम्हारी सलामती हो!" **27** फिर वह तोमा से मुख़ातिब
हुआ, "अपनी उंगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू
के ज़ख़्म में डाल और बेएतिक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।" **28**
तोमा ने जवाब में उस से कहा, "ऐ मेरे ख़ुदावन्द! ऐ मेरे ख़ुदा!" **29**
फिर ईसा ने उसे बताया, "क्या तू इस लिए ईमान लाया है कि तू ने
मुझे देखा है? मुबारिक़ हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते
हैं।" **30** ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत से ऐसे
ख़ुदाई करिश्मे दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। **31** लेकिन
जितने दर्ज हैं उन का मक़्सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही
मसीह यानी ख़ुदा का फ़र्ज़न्द है और आप को इस ईमान के वसीले
से उस के नाम से ज़िन्दगी हासिल हो।

21 इस के बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर
हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह
यूँ हुआ। **2** कुछ शागिर्द शमौन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो
जुड़वाँ कहलाता था, नतन — एल जो गलील के क़ाना से था,
ज़ब्दी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द। **3** शमौन पतरस ने कहा,
"मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।" दूसरों ने कहा, "हम भी साथ
जाएँगे।" चुनाँचे वह निकल कर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस
पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। **4** सुबह — सवेरे ईसा झील
के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था
कि वह ईसा ही है। **5** उस ने उन से पूछा, "बच्चो, क्या तुम्हें खाने
के लिए कुछ मिल गया?" **6** उस ने कहा, "अपना जाल नाव के
दाएँ हाथ डालो, फिर तुम को कुछ मिलेगा।" उन्हों ने ऐसा किया तो
मछलियों की इतनी बड़ी तहदाद थी कि वह जाल नाव तक न ला
सके। **7** इस पर ईसा के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, "यह तो
ख़ुदावन्द है।" यह सुनते ही कि ख़ुदावन्द है शमौन पतरस अपनी
चादर ओढ़ कर पानी में कूद पड़ा (उस ने चादर को काम करने के
लिए उतार लिया था)। **8** दूसरे शागिर्द नाव पर सवार उस के पीछे
आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के
फ़ासिले पर थे। इस लिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी खींच
खींच कर ख़ुश्की तक लाए। **9** जब वह नाव से उतरे तो देखा कि
लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ
रोटी भी है। **10** ईसा ने उन से कहा, "उन मछलियों में से कुछ
ले आओ जो तुम ने अभी पकड़ी हैं।" **11** शमौन पतरस नाव पर
गया और जाल को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। **12** ईसा ने उन से
कहा, "आओ, खा लो।" किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की
जुरअत न की कि "आप कौन हैं?" क्यूँकि वह तो जानते थे कि यह
ख़ुदावन्द ही है। **13** फिर ईसा आया और रोटी ले कर उन्हें दी और
इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई। **14** ईसा के जी उठने के बाद यह
तीसरी बार था कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ। **15** खाने के
बाद ईसा शमौन पतरस से मुख़ातिब हुआ, "यूहन्ना के बेटे शमौन,
क्या तू इन की निस्बत मुझ से ज़्यादा मुहब्बत करता है?" उस ने
जवाब दिया, "जी ख़ुदावन्द, आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार
करता हूँ।" ईसा बोला, "फिर मेरे भेड़ों को चरा।" **16** तब ईसा
ने एक और मर्तबा पूछा, "शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझ से
मुहब्बत करता है?" उस ने जवाब दिया, "जी ख़ुदावन्द, आप तो
जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।" ईसा बोला, "फिर मेरी
भेड़ों को चरा।" **17** तीसरी दफ़ा ईसा ने उस से पूछा, "शमौन
यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?" तीसरी दफ़ा यह सवाल
सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उस ने कहा, "ख़ुदावन्द, आप
को सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार
करता हूँ।" ईसा ने उस से कहा, "मेरी भेड़ों को चरा। **18** मैं तुझे
सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँध कर
जहाँ जी चाहता घूमता फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू
अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँध कर
तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।" **19** (ईसा की यह बात
इस तरफ़ इशारा था कि पतरस किस क़िस्म की मौत से ख़ुदा को
जलाल देगा)। फिर उस ने उसे बताया, "मेरे पीछे चल।" **20** पतरस
ने मुड़ कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उन के पीछे
चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिस ने शाम के खाने के दौरान ईसा
की तरफ़ सर झुका कर पूछा था, "ख़ुदावन्द, कौन आप को दुश्मन
के हवाले करेगा?" **21** अब उसे देख कर पतरस ने ईसा से सवाल
किया, "ख़ुदावन्द, इस के साथ क्या होगा?" **22** ईसा ने जवाब
दिया, "अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे
क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।" **23** नतीजे में भाइयों में यह
ख़याल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह

बात नहीं की थी। उस ने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह
मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या?” 24 यह वह शागिर्द है
जिस ने इन बातों की गवाही दे कर इन्हें क़लमबन्द कर दिया है।
और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है। 25 ईसा ने इस के
अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उस का हर काम क़लमबन्द
किया जाता तो मेरे ख़याल में पूरी दुनियाँ में यह किताबें रखने की
गुन्जाइश न होती।

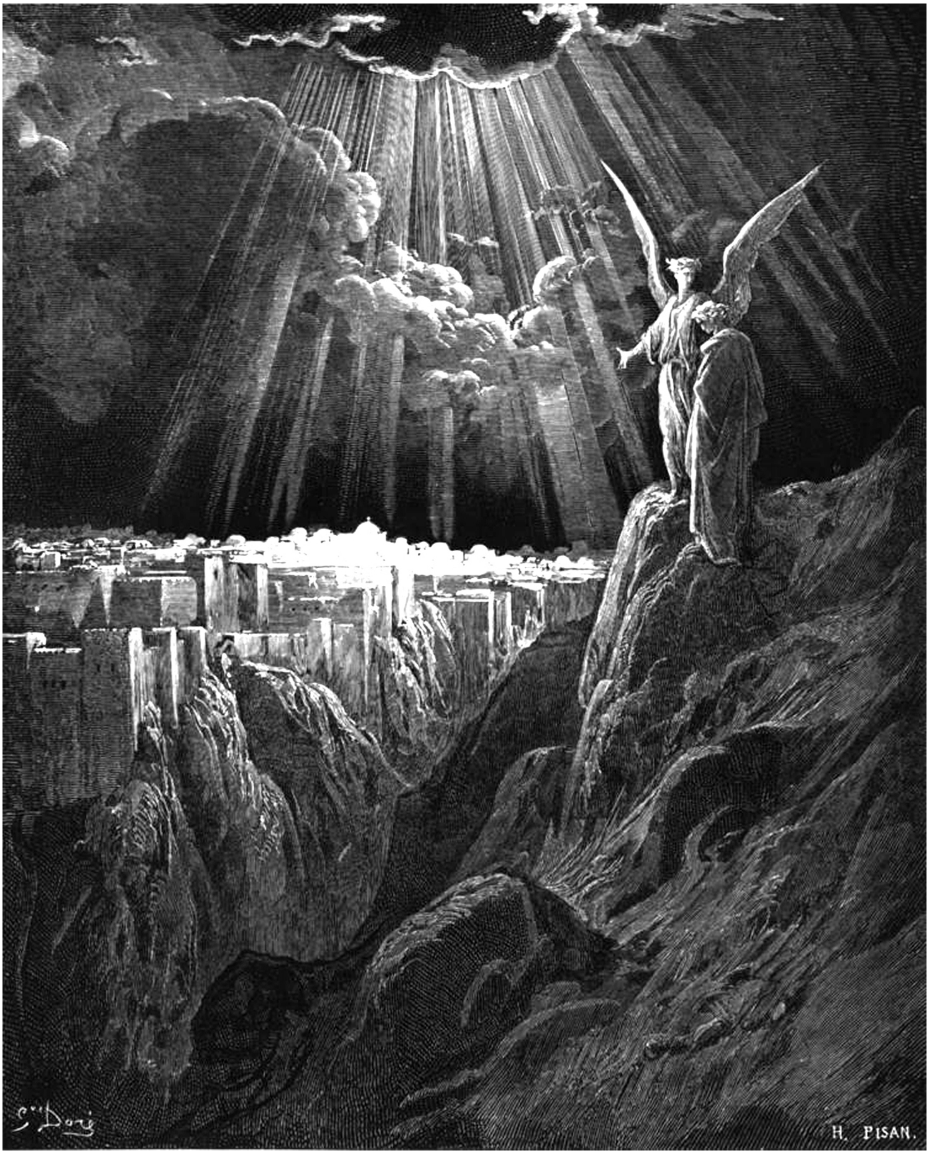

फिर मैंने शहर — ए — मुक़द्दस नए येरूशलेम को आसमान पर से ख़ुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दुल्हन की तरह सजा था जिसने अपने शौहर के लिए सिंगार किया हो। फिर मैंने तख़्त में से किसी को उनको ऊँची आवाज़ से ये कहते सुना, "देख, ख़ुदा का ख़ेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके साथ सुकूनत करेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका ख़ुदा होगा।

मुकाशफ़ा 21:2-3

मुकाशफ़ा

19 इन बातों के बाद मैंने आसमान पर गोया बड़ी जमा'अत
को ऊँची आवाज़ से ये कहते सुना, "हालेलूया! नजात और
जलाल और क़ुदरत हमारे ख़ुदा की है। 2 क्यूँकि उसके फ़ैसले
सहीह और दरुस्त हैं, इसलिए कि उसने उस बड़ी कस्बी का इन्साफ़
किया जिसने अपनी हरामकारी से दुनियाँ को ख़राब किया था, और
उससे अपने बन्दों के ख़ून का बदला लिया।" 3 फिर दूसरी बार
उन्होंने कहा, "हल्लेलुइया! और उसके जलने का धुवाँ हमेशा
उठता रहेगा।" (aiōn g165) 4 और चौबीसों बुज़ुर्गों और चारों
जानदारों ने गिर कर ख़ुदा को सिज्दा किया, जो तख़्त पर बैठा था
और कहा, "आमीन! हल्लेलुइया!" 5 और तख़्त में से ये आवाज़
निकली, "ऐ उससे डरनेवाले बन्दो! हमारे ख़ुदा की तम्जीद करो!
चाहे छोटे हो चाहे बड़े!" 6 फिर मैंने बड़ी जमा'अत की सी आवाज़,
और ज़ोर की सी आवाज़, और सख़्त गरजने की सी आवाज़ सुनी:
"हल्लेलुइया! इसलिए के ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा क़ादिर — ए —
मुतल्लिक़ बादशाही करता है। 7 आओ, हम ख़ुशी करें और निहायत
शादमान हों, और उसकी बड़ाई करें; इसलिए कि बर्रे की शादी आ
पहुँची, और उसकी बीवी ने अपने आपको तैयार कर लिया; 8
और उसको चमकदार और साफ़ महीन कतानी कपड़ा पहनने का
इख़्तियार दिया गया," क्यूँकि महीन कतानी कपड़ों से मुक़द्दस
लोगों की रास्तबाज़ी के काम मुराद हैं। 9 और उसने मुझ से कहा,
"लिख, मुबारिक़ हैं वो जो बर्रे की शादी की दावत में बुलाए गए
हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये ख़ुदा की सच्ची बातें हैं।" 10
और मैं उसे सिज्दा करने के लिए उसके पाँव पर गिरा। उसने मुझ से
कहा, "ख़बरदार! ऐसा न कर। मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का
हमख़िदमत हूँ, जो ईसा की गवाही देने पर क़ाईम हैं। ख़ुदा ही को
सिज्दा कर।" क्यूँकि ईसा की गवाही नबुव्वत की रूह है। 11 फिर
मैंने आसमान को खुला हुआ, देखा, और क्या देखता हूँ कि एक
सफ़ेद घोड़ा है; और उस पर एक सवार है जो सच्चा और बरहक़
कहलाता है, और वो सच्चाई के साथ इन्साफ़ और लड़ाई करता है।
12 और उसकी आँखें आग के शो'ले हैं, और उसके सिर पर बहुत से
ताज हैं। और उसका एक नाम लिखा हुआ है, जिसे उसके सिवा
और कोई नहीं जानता। 13 और वो ख़ून की छिड़की हुई पोशाक
पहने हुए है, और उसका नाम कलाम — ए — ख़ुदा कहलाता है।
14 और आसमान की फ़ौजें सफ़ेद घोड़ों पर सवार, और सफ़ेद और
साफ़ महीन कतानी कपड़े पहने हुए उसके पीछे पीछे हैं। 15 और
क़ौमों के मारने के लिए उसके मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है;
और वो लोहे की 'लाठी से उन पर हुकूमत करेगा, और क़ादिर —
ए — मुतल्लिक़ ख़ुदा के तख़्त ग़ज़ब की मय के हौज़ में अंगूर
रौंदेगा। 16 और उसकी पोशाक और रान पर ये नाम लिखा हुआ है:
"बादशाहों का बादशाह और ख़ुदावन्दों का ख़ुदावन्द।" 17 फिर
मैंने एक फ़रिश्ते को आफ़ताब पर खड़े हुए देखा। और उसने बड़ी
आवाज़ से चिल्ला कर आसमान में के सब उड़नेवाले परिन्दों से
कहा, "आओ, ख़ुदा की बड़ी दावत में शरीक होने के लिए जमा हो
जाओ; 18 ताकि तुम बादशाहों का गोश्त, और फ़ौजी सरदारों का
गोश्त, और ताक़तवरों का गोश्त, और घोड़ों और उनके सवारों का
गोश्त, और सब आदमियों का गोश्त खाओ; चाहे आज़ाद हों चाहे
ग़ुलाम, चाहे छोटे हों चाहे बड़े।" 19 फिर मैंने उस हैवान और
ज़मीन के बादशाहों और उनकी फ़ौजों को, उस घोड़े के सवार और
उसकी फ़ौज से जंग करने के लिए इकट्टे देखा। 20 और वो हैवान
और उसके साथ वो झूठा नबी पकड़ा गया, जिनसे उसने हैवान की
छाप लेनेवालों और उसके बुत की इबादत करनेवालों को गुमराह
किया था। वो दोनों आग की उस झील में ज़िन्दा डाले गए, जो
गंधक से जलती है। (Limnē Pyr g3041 g4442) 21 और बाक़ी उस
घोड़े के सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से निकलती थी क़त्ल
किए गए; और सब परिन्दे उनके गोश्त से सेर हो गए।

20 फिर मैंने एक फ़रिश्ते को आसमान से उतरते देखा, जिसके
हाथ में अथाह गड्ढे की कुंजी और एक बड़ी ज़ंजीर थी।
(Abyssos g12) 2 उसने उस अज़दहा, या'नी पुराने साँप को जो
इब्लीस और शैतान है, पकड़ कर हज़ार बरस के लिए बाँधा, 3 और
उसे अथाह गड्ढे में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर
दी, ताकि वो हज़ार बरस के पूरे होने तक क़ौमों को फिर गुमराह न
करे। इसके बाद ज़रूर है कि थोड़े 'अरसे के लिए खोला जाए।
(Abyssos g12) 4 फिर मैंने तख़्त देखे, और लोग उन पर बैठ गए
और 'अदालत उनके सुपुर्द की गई; और उनकी रूहों को भी देखा
जिनके सिर ईसा की गवाही देने और ख़ुदा के कलाम की वजह से
काटे गए थे, और जिन्होंने न उस हैवान की इबादत की थी न उसके
बुत की, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वो
ज़िन्दा होकर हज़ार बरस तक मसीह के साथ बादशाही करते रहे। 5
और जब तक ये हज़ार बरस पूरे न हो गए बाक़ी मुर्दे ज़िन्दा न हुए।
पहली क़यामत यही है। 6 मुबारिक़ और मुक़द्दस वो है, जो पहली
क़यामत में शरीक हो। ऐसों पर दूसरी मौत का कुछ इख़्तियार नहीं,
बल्कि वो ख़ुदा और मसीह के काहिन होंगे और उसके साथ हज़ार
बरस तक बादशाही करेंगे। 7 जब हज़ार बरस पुरे हो चुकेंगे, तो
शैतान क़ैद से छोड़ दिया जाएगा। 8 और उन क़ौमों को जो ज़मीन
की चारों तरफ़ होंगी, या'नी जूज और माजूज को गुमराह करके
लड़ाई के लिए जमा करने को निकाले; उनका शुमार समुन्दर की रेत
के बराबर होगा। 9 और वो तमाम ज़मीन पर फैल जाएँगी, और
मुक़द्दसों की लश्करगाह और 'अज़ीज़ शहर को चारों तरफ़ से घेर

लेंगी, और आसमान पर से आग नाज़िल होकर उन्हें खा जाएगी।
10 और उनका गुमराह करने वाला इब्लीस आग और गंधक की उस
झील में डाला जाएगा, जहाँ वो हैवान और झूठा नबी भी होगा;
और रात दिन हमेशा से हमेशा तक 'अज़ाब में रहेंगे। (aiōn g165,
Limnē Pyr g3041 g4442) 11 फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त और
उसको जो उस पर बैठा हुआ था देखा, जिसके सामने से ज़मीन और
आसमान भाग गए, और उन्हें कहीं जगह न मिली। 12 फिर मैंने
छोटे बड़े सब मुर्दों को उस तख़्त के सामने खड़े हुए देखा, और
किताब खोली गई, या'नी किताब — ए — हयात; और जिस तरह
उन किताबों में लिखा हुआ था, उनके आ'माल के मुताबिक़ मुर्दों
का इन्साफ़ किया गया। 13 और समुन्दर ने अपने अन्दर के मुर्दों
को दे दिया, और मौत और 'आलम — ए — अर्वाह ने अपने अन्दर
के मुर्दों को दे दिया, और उनमें से हर एक के आ'माल के मुताबिक़
उसका इन्साफ़ किया गया। (Hadēs g86) 14 फिर मौत और 'आलम
— ए — अर्वाह आग की झील में डाले गए। ये आग की झील
आख़री मौत है, (Hadēs g86, Limnē Pyr g3041 g4442) 15 और
जिस किसी का नाम किताब — ए — हयात में लिखा हुआ न
मिला, वो आग की झील में डाला गया। (Limnē Pyr g3041 g4442)

21 फिर मैंने एक नए आसमान और नई ज़मीन को देखा, क्यूँकि
पहला आसमान और पहली ज़मीन जाती रही थी, और
समुन्दर भी न रहा। 2 फिर मैंने शहर — ए — मुक़द्दस नए येरूशलेम
को आसमान पर से ख़ुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दुल्हन
की तरह सजा था जिसने अपने शौहर के लिए सिंगार किया हो। 3
फिर मैंने तख़्त में से किसी को उनको ऊँची आवाज़ से ये कहते सुना,
"देख, ख़ुदा का ख़ेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके
साथ सुकूनत करेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका ख़ुदा
होगा। 4 और उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा; इसके बाद न
मौत रहेगी, और न मातम रहेगा, न आह — ओ — नाला न दर्द;
पहली चीज़ें जाती रहीं।" 5 और जो तख़्त पर बैठा हुआ था, उसने
कहा, "देख, मैं सब चीज़ों को नया बना देता हूँ।" फिर उसने कहा,
"लिख ले, क्यूँकि ये बातें सच और बरहक़ हैं।" 6 फिर उसने मुझ
से कहा, ये बातें पूरी हो गईं। मैं अल्फ़ा और ओमेगा, या'नी शुरू
और आख़िर हूँ। मैं प्यासे को आब — ए — हयात के चश्मे से
मुफ़्त पिलाऊँगा। 7 जो ग़ालिब आए वही इन चीज़ों का वारिस
होगा, और मैं उसका ख़ुदा हूँगा और वो मेरा बेटा होगा। 8 मगर
बुज़दिलों, और बेईमान लोगों, और घिनौने लोगों, और ख़ूनियों,
और हरामकारों, और जादूगरों, और बुत परस्तों, और सब झूठों का
हिस्सा आग और गन्धक से जलने वाली झील में होगा; ये दूसरी
मौत है। (Limnē Pyr g3041 g4442) 9 फिर इन सात फ़रिश्तों में से
जिनके पास प्याले थे, एक ने आकर मुझ से कहा, "इधर आ, मैं
तुझे दुल्हन, या'नी बर्रे की बीवी दिखाऊँ।" 10 और वो मुझे रूह में
एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और शहर — ए — मुक़द्दस
येरूशलेम को आसमान पर से ख़ुदा के पास से उतरते दिखाया। 11
उसमें ख़ुदा का जलाल था, और उसकी चमक निहायत क़ीमती
पत्थर, या'नी उस यशब की सी थी जो बिल्लौर की तरह शफ़्फ़ाफ़
हो। 12 और उसकी शहरपनाह बड़ी और ऊँची थी, और उसके
बारह दरवाज़े और दरवाज़ों पर बारह फ़रिश्ते थे, और उन पर बनी
— इस्राईल के बारह क़बीलों के नाम लिखे हुए थे। 13 तीन दरवाज़े
मशरिक़ की तरफ़ थे, तीन दरवाज़े शुमाल की तरफ़, तीन दरवाज़े
जुनूब की तरफ़, और तीन दरवाज़े मग़रिब की तरफ़। 14 और उस
शाहर की शहरपनाह की बारह बुनियादें थीं, और उन पर बर्रे के
बारह रसूलों के बारह नाम लिखे थे। 15 और जो मुझ से कह रहा
था, उसके पास शहर और उसके दरवाज़ों और उसकी शहरपनाह के
नापने के लिए एक पैमाइश का आला, या'नी सोने का गज़ था। 16
और वो शहर चौकोर वाक़े' हुआ था, और उसकी लम्बाई चौड़ाई के
बराबर थी; उसने शहर को उस गज़ से नापा, तो बारह हज़ार फ़रलाँग
निकला: उसकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर थी। 17 और उसने
उसकी शहरपनाह को आदमी की, या'नी फ़रिश्ते की पैमाइश के
मुताबिक़ नापा, तो एक सौ चवालीस हाथ निकली। 18 और उसकी
शहरपनाह की ता'मीर यशब की थी, और शहर ऐसे ख़ालिस सोने का
था जो साफ़ शीशे की तरह हो। 19 और उस शहर की शहरपनाह की
बुनियादें हर तरह के जवाहर से आरास्ता थीं; पहली बुनियाद यशब
की थी, दूसरी नीलम की, तीसरी शब चिराग़ की, चौथी ज़मुर्रद की,
20 पाँचवीं 'आक़ीक़ की, छटी ला'ल की, सातवीं सुन्हरे पत्थर की,
आठवीं फ़ीरोज़ की, नवीं ज़बरजद की, और बारहवीं याक़ूत की।
21 और बारह दरवाज़े बारह मोतियों के थे; हर दरवाज़ा एक मोती
का था, और शहर की सड़क साफ़ शीशे की तरह ख़ालिस सोने की
थी। 22 और मैंने उसमें कोई मक़्दिस न देखे, इसलिए कि ख़ुदावन्द
ख़ुदा क़ादिर — ए — मुतल्लिक़ और बर्रा उसका मक़्दिस हैं। 23
और उस शहर में सूरज या चाँद की रौशनी की कुछ हाजत नहीं,
क्यूँकि ख़ुदा के जलाल ने उसे रौशन कर रख्खा है, और बर्रा उसका
चिराग़ है। 24 और क़ौमें उसकी रौशनी में चले फिरेंगी, और ज़मीन
के बादशाह अपनी शान — ओ — शौकत का सामान उसमें लाएँगे।
25 और उसके दरवाज़े दिन को हरगिज़ बन्द न होंगे, और रात वहाँ
न होगी। 26 और लोग क़ौमों की शान — ओ — शौकत और
इज़्ज़त का सामान उसमें लाएँगे। 27 और उसमें कोई नापाक या
झूठी बातें घढ़ता है, हरगिज़ दाख़िल न होगा, मगर वही जिनके नाम
बर्रे की किताब — ए — हयात में लिखे हुए हैं।

22 फिर उसने मुझे बिल्लौर की तरह चमकता हुआ आब —
ए — हयात का एक दरीया दिखाया, जो ख़ुदा और बर्रे के

तख़्त से निकल कर उस शहर की सड़क के बीच में बहता था। 2
और दरिया के पार ज़िन्दगी का दरख़्त था। उसमें बारह क़िस्म के
फल आते थे और हर महीने में फलता था, और उस दरख़्त के पत्तों
से क़ौमों को शिफ़ा होती थी। 3 और फिर ला'नत न होगी, और
ख़ुदा और बर्रे का तख़्त उस शहर में होगा, और उसके बन्दे उसकी
इबादत करेंगे। 4 और वो उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके
माथों पर लिखा हुआ होगा। 5 और फिर रात न होगी, और वो
चिराग़ और सूरज की रौशनी के मुहताज न होंगे, क्यूँकि ख़ुदावन्द
ख़ुदा उनको रौशन करेगा और वो हमेशा से हमेशा तक बादशाही
करेंगे। (aiōn g165) 6 फिर उसने मुझ से कहा, "ये बातें सच और
बरहक़ हैं; चुनाँचे ख़ुदावन्द ने जो नबियों की रूहों का ख़ुदा है,
अपने फ़रिश्ते को इसलिए भेजा कि अपने बन्दों को वो बातें दिखाए
जिनका जल्द होना ज़रूर है।" 7 "और देख मैं जल्द आने वाला हूँ।
मुबारिक़ है वो जो इस किताब की नबुव्वत की बातों पर 'अमल
करता है।" 8 मैं वही युहन्ना हूँ, जो इन बातों को सुनता और देखता
था; और जब मैंने सुना और देखा, तो जिस फ़रिश्ते ने मुझे ये बातें
दिखाई, मैं उसके पैर पर सिज्दा करने को गिरा। 9 उसने मुझ से
कहा, ख़बरदार! ऐसा न कर, मैं भी तेरा और तेरे नबियों और इस
किताब की बातों पर 'अमल करनेवालों का हम ख़िदमत हूँ। ख़ुदा
ही को सिज्दा कर। 10 फिर उसने मुझ से कहा, इस किताब की
नबुव्वत की बातों को छुपाए न रख; क्यूँकि वक़्त नज़दीक है, 11
"जो बुराई करता है, वो बुराई ही करता जाए; और जो नजिस है, वो
नजिस ही होता जाए; और जो रास्तबाज़ है, वो रास्तबाज़ी करता
जाए; और जो पाक है, वो पाक ही होता जाए।" 12 "देख, मैं
जल्द आने वाला हूँ; और हर एक के काम के मुताबिक़ देने के लिए
बदला मेरे पास है। 13 मैं अल्फ़ा और ओमेगा, पहला और आख़िर,
इब्तिदा और इन्तिहा हूँ। 14 मुबारिक़ है वो जो अपने जामे धोते
हैं, क्यूँकि ज़िन्दगी के दरख़्त के पास आने का इख़्तियार पाएँगे,
और उन दरवाज़ों से शहर में दाख़िल होंगे। 15 मगर कुत्ते, और
जादूगर, और हरामकार, और ख़ूनी, और बुत परस्त, और झूठी बात
का हर एक पसन्द करने और गढ़ने वाला बाहर रहेगा। 16 मुझ
ईसा ने, अपना फ़रिश्ता इसलिए भेजा कि कलीसियाओं के बारे में
तुम्हारे आगे इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद की अस्ल — ओ —
नस्ल और सुबह का चमकता हुआ सितारा हूँ।" 17 और रूह और
दुल्हन कहती हैं, "आ!" और सुननेवाला भी कहे, "आ!" "आ!"
और जो प्यासा हो वो आए, और जो कोई चाहे आब — ए —
हयात मुफ़्त ले। 18 मैं हर एक आदमी के आगे, जो इस किताब
की नबुव्वत की बातें सुनता है, गवाही देता हूँ: अगर कोई आदमी
इनमें कुछ बढ़ाए, तो ख़ुदा इस किताब में लिखी हुई आफ़तें उस पर
नाज़िल करेगा। 19 और अगर कोई इस नबुव्वत की किताब की
बातों में से कुछ निकाल डाले, तो ख़ुदा उस ज़िन्दगी के दरख़्त और
मुक़द्दस शहर में से, जिनका इस किताब में ज़िक्र है, उसका हिस्सा
निकाल डालेगा। 20 जो इन बातों की गवाही देता है वो ये कहता है,
"बेशक, मैं जल्द आने वाला हूँ।" आमीन! ऐ ख़ुदावन्द ईसा आ!
21 ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़ल मुक़द्दसों के साथ रहे। आमीन।

66 Verses

उर्दू at AionianBible.org

The Bible is a library of 66 books in the Protestant Canon written by 40 different men over a span of 1,500 years from 1435 BC to 65 AD with one consistent message. From the first page through the last, Jesus. Genesis promised our deliverer is coming, Jesus. Moses said our better prophet is coming, Jesus. Isaiah prophesied our Messiah will be a suffering servant, Jesus. John announced our Anointed One is here, Jesus. Jesus himself testified he is our Lord God, Yahweh. The gospels agree our conqueror of death has risen, Jesus. The Apostles witnessed our victor ascend to his throne in Heaven, Jesus. And Revelation promises Jesus' return for our final judgment. Are you ready? Read the Bible cover to cover at AionianBible.org and answer these questions. How did I get here? Why am I here? How do I determine right or wrong? How can I escape condemnation? What is my destiny? Begin with the primer verses below.

पैदाइश **9:8** और ख़ुदा ने नूह और उसके बेटों से कहा, **9:9** देखो, मैं खुद तुमसे और तुम्हारे बाद तुम्हारी नसल से, **9:10** और सब
जानदारों से जो तुम्हारे साथ हैं, क्या परिन्दे क्या चौपाए क्या ज़मीन के जानवर, या'नी ज़मीन के उन सब जानवरों के बारे में जो कश्ती से
उतरे, 'अहद करता हूँ **9:11** मैं इस 'अहद को तुम्हारे साथ क़ाईम रखूँगा कि सब जानदार तूफ़ान के पानी से फिर हलाक न होंगे, और न
कभी ज़मीन को तबाह करने के लिए फिर तूफ़ान आएगा **9:12** और ख़ुदा ने कहा कि जो अहद मैंने अपने और तुम्हारे बीच और सब
जानदारों के बीच जो तुम्हारे साथ हैं, नसल — दर — नसल हमेशा के लिए करता हूँ, उसका निशान यह है कि **9:13** मैं अपनी कमान को
बादल में रखता हूँ, वह मेरे और ज़मीन के बीच 'अहद का निशान होगी

ख़ुरु **14:13** तब मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत, चुपचाप खड़े होकर ख़ुदावन्द की नजात के काम को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए
करेगा। क्यूँकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो उनको फिर कभी हमेशा तक न देखोगे। **14:14** ख़ुदावन्द तुम्हारी तरफ़ से जंग करेगा
और तुम ख़ामोश रहोगे।"

अह **20:26** और तुम मेरे लिए पाक बने रहना, क्यूँकि मैं जो ख़ुदावन्द हूँ पाक हूँ; और मैंने तुम को और क़ौमों से अलग किया है ताकि तुम
मेरे ही रहो।

गिन **6:24** 'ख़ुदावन्द तुझे बरकत दे और तुझे महफ़ूज़ रख्खें। **6:25** "ख़ुदावन्द अपना चेहरा तुझ पर जलवागर फ़रमाए, और तुझ पर
मेहरबान रहे। **6:26** "ख़ुदावन्द अपना चेहरा तेरी तरफ़ मुतवज्जिह करे, और तुझे सलामती बख़्शे।

इस्त **18:18** मैं उनके लिए उन ही के भाइयों में से तेरी तरह एक नबी खड़ा करूँगा, और अपना कलाम उसके मुँह में डालूँगा, और जो
कुछ मैं उसे हुक्म दूँगा वही वह उनसे कहेगा। **18:19** और जो कोई मेरी उन बातों की जिनकी वह मेरा नाम लेकर कहेगा न सुने, तो मैं
उनका हिसाब उनसे लूँगा।

यशो **1:7** तू सिर्फ़ मज़बूत और निहायत दिलेर हो जा कि एहतियात रख कर उस सारी शरी'अत पर 'अमल करे जिसका हुक्म मेरे बन्दे मूसा
ने तुझ को दिया; उस से न दहिने मुड़ना न बायें ताकि जहाँ कहीं तू जाये तुझे ख़ूब कामयाबी हासिल हो। **1:8** शरी'अत की यह किताब तेरे
मुँह से न हटे, बल्कि तुझे दिन और रात इसी का ध्यान हो ताकि जो कुछ उस में लिखा है उस सब पर तू एहतियात करके 'अमल कर सके;
क्यूँकि तब ही तुझे कामयाबी की राह नसीब होगी और तू ख़ूब कामयाब होगा। **1:9** क्या मैनें तुझको हुक्म नहीं दिया? इसलिए मज़बूत हो
जा और हौसला रख; ख़ौफ़ न खा और बेदिल न हो, क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा जहाँ जहाँ तू जाए तेरे साथ रहेगा।"

क़ुजा **2:7** और वह लोग ख़ुदावन्द की इबादत यशू'अ के जीते जी और उन बुज़ुर्गों के जीते जी करते रहे, जो यशू'अ के बाद ज़िन्दा रहे
और जिन्होंने ख़ुदावन्द के सब बड़े काम जो उसने इस्राईल के लिए किए देखे थे।

रूत 1:16 रूत ने कहा, "तू मिन्नत न कर कि मैं तुझे छोड़ूं और तेरे पीछे से लौट जाऊँ; क्यूँकि जहाँ तू जाएगी मै जाऊँगी और जहाँ तू रहेगी मैं रहूँगी, तेरे लोग मेरे लोग और तेरा ख़ुदा मेरा ख़ुदा होगा। 1:17 जहाँ तू मरेगी मैं मरूँगी और वहीं दफ़्न भी हूँगी; ख़ुदावन्द मुझ से ऐसा ही बल्कि इस से भी ज़्यादा करे, अगर मौत के अलावा कोई और चीज़ मुझ को तुझ से जुदा न कर दे।"

1 समु 16:7 तब ख़ुदावन्द ने समुएल से कहा कि "तू उसके चेहरा और उसके क़द की ऊँचाई को न देख इसलिए कि मैंने उसे ना पसंद किया है, क्यूँकि ख़ुदावन्द इंसान की तरह नज़र नहीं करता इसलिए कि इंसान ज़ाहिरी सूरत को देखता है, पर ख़ुदावन्द दिल पर नज़र करता है।"

2 समु 7:22 इसलिए तू ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा, बुज़ुर्ग है, क्यूँकि जैसा हमने अपने कानों से सुना है उसके मुताबिक़ कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावह कोई ख़ुदा नहीं।

1 सला 2:3 और जो मूसा की शरी'अत में लिखा है, उसके मुताबिक़ ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की हिदायत को मानकर उसके रास्तों पर चल; और उसके क़ानून पर और उसके फ़रमानों और हुक्मों और शहादतों पर 'अमल कर, ताकि जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू जाए, सब में तुझे कामयाबी हो,

2 सला 22:19 चूँकि तेरा दिल नर्म है, और जब तू ने वह बात सुनी जो मैंने इस मक़ाम और इसके बशिन्दों के हक़ में कही कि वह तबाह हो जाएँगे और ला'नती भी ठहरेंगे, तो तू ने ख़ुदावन्द के आगे 'आजिज़ी की और अपने कपड़े फाड़े और मेरे आगे रोया; इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली, ख़ुदावन्द फ़रमाता है।

1 तवा 29:17 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं यह भी जानता हूँ कि तू दिल को जाँचता है, और रास्ती में तेरी ख़ुशनूदी है। मैंने तो अपने दिल की रास्ती से यह सब कुछ रज़ामंदी से दिया, और मुझे तेरे लोगों को जो यहाँ हाज़िर हैं, तेरे सामने ख़ुशी ख़ुशी देते देख कर ख़ुशी हासिल हुई।

2 तवा 7:14 तब अगर मेरे लोग जो मरे नाम से कहलाते हैं खाकसार बनकर दुआ करें और मेरे दीदार के तालिब हों और अपनी बुरी रास्तों से फिरें तो मैं आसमान पर से सुनकर उनका गुनाह मु'आफ़ करूँगा और उनके मुल्क को बहाल कर दूँगा।

एज्रा 7:10 इसलिए कि 'एज्रा आमादा हो गया था कि ख़ुदावन्द की शरी'अत का तालिब हो, और उस पर 'अमल करे और इस्राईल में आईन और अहकाम की तालीम दे।

नहे 6:3 इसलिए मैंने उनके पास कासिदों से कहला भेजा कि मैं बड़े काम में लगा हूँ और आ नहीं सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास आने से ये काम क्यूँ बन्द रहे?

आस्त 4:14 क्यूँकि अगर तू इस वक़्त ख़ामोशी अख्तियार करे तो छुटकारा और नजात यहूदियों के लिए किसी और जगह से आएगी, लेकिन तू अपने बाप के ख़ान्दान के साथ हलाक हो जाएगी। और क्या जाने कि तू ऐसे ही वक़्त के लिए बादशाहत को पहुँची है?"

अय्यू 19:25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ाने वाला ज़िन्दा है। और आख़िर कार ज़मीन पर खड़ा होगा।

ज़बूर 23:1 ख़ुदावन्द मेरा चौपान है, मुझे कमी न होगी। 23:2 वह मुझे हरी हरी चरागाहों में बिठाता है; वह मुझे राहत के चश्मों के पास ले जाता है; 23:3 वह मेरी जान को बहाल करता है। वह मुझे अपने नाम की ख़ातिर सदाकत की राहों पर ले चलता है। 23:4 बल्कि चाहे मौत के साये की वादी में से मेरा गुज़र हो, मैं किसी बला से नहीं डरूंगा, क्यूँकि तू मेरे साथ है; तेरे 'असा और तेरी लाठी से मुझे तसल्ली है। 23:5 तू मेरे दुश्मनों के सामने मेरे आगे दस्तरख़्वान बिछाता है; तूने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा प्याला लबरेज़ होता है। 23:6 यक़ीनन भलाई और रहमत उम्र भर मेरे साथ साथ रहेंगी: और मैं हमेशा ख़ुदावन्द के घर में सकूनत करूँगा।

अम्सा 3:5 सारे दिल से ख़ुदावन्द पर भरोसा कर, और अपनी समझ पर इत्मिनान न कर। 3:6 अपनी सब राहों में उसको पहचान, और वह तेरी रहनुमाई करेगा।

वाइज़ 3:10 मैंने उस सख़्त दुख को देखा, जो ख़ुदा ने बनी आदम को दिया है कि वह मशक्क़त में मुब्तिला रहें। 3:11 उसने हर एक चीज़ को उसके वक़्त में ख़ूब बनाया और उसने अबदियत को भी उनके दिल में जागुज़ीन किया है; इसलिए कि इंसान उस काम को जो ख़ुदा शुरू' से आख़िर तक करता हैं दरियाफ़्त नहीं कर सकता।

गज़लुल 2:4 वह मुझे मयख़ाने के अंदर लाया, और उसकी मुहब्बत का झंडा मेरे ऊपर था।

यसा 9:6 इसलिए हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ और हम को एक बेटा बख़्शा गया, और सल्तनत उसके कंधे पर होगी, उसका नाम 'अजीब सलाहकार ख़ुदा — ए — क़ादिर अब्दियत का बाप, सलामती का शहज़ादा होगा। 9:7 उसकी सल्तनत के इक़बाल और सलामती की कुछ इन्तिहा न होगी, वह दाऊद के तख़्त और उसकी ममलुकत पर आज से हमेशा तक हुक्मरान रहेगा और 'अदालत और सदाक़त से उसे क़याम बख़्शेगा रब्ब — उल — अफ़्वाज की ग़य्यूरी ये करेगी।

यर्म 1:4 तब ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया, 1:5 "इससे पहले कि मैंने तुझे बत्न में ख़ल्क़ किया, मैं तुझे जानता था और तेरी पैदाइश से पहले मैंने तुझे ख़ास किया, और क़ौमों के लिए तुझे नबी ठहराया।" 1:6 तब मैंने कहा, हाय, ख़ुदावन्द ख़ुदा! देख, मैं बोल नहीं सकता, क्यूँकि मैं तो बच्चा हूँ। 1:7 लेकिन ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, यूँ न कह कि मैं बच्चा हूँ; क्यूँकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूँगा तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे फ़रमाऊँगा तू कहेगा। 1:8 तू उनके चेहरों को देखकर न डर क्यूँकि ख़ुदावन्द फ़रमाता है मैं तुझे छुड़ाने को तेरे साथ हूँ। 1:9 तब ख़ुदावन्द ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया देख मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाल दिया। 1:10 देख, आज के दिन मैंने तुझे क़ौमों पर, और सल्तनतों पर मुक़र्रर किया कि उखाड़े और ढाए, और हलाक करे और गिराए, और ता'मीर करे और लगाए।

नोहा 3:21 मैं इस पर सोचता रहता हूँ, इसीलिए मैं उम्मीदवार हूँ। 3:22 ये ख़ुदावन्द की शफ़क़त है, कि हम फ़ना नहीं हुए, क्यूँकि उसकी रहमत ला ज़वाल है। 3:23 वह हर सुबह ताज़ा है; तेरी वफ़ादारी 'अज़ीम है

हिज़ि 36:26 और मैं तुम को नया दिल बख़्शूँगा और नई रूह तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और तुम्हारे जिस्म में से शख़्त दिल को निकाल डालूँगा और गोश्त का दिल तुम को 'इनायत करूँगा। 36:27 और मैं अपनी रूह तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और तुम सेअपने क़ानून की पैरवी कराऊँगा और तुम मेरे हुक्मों पर 'अमल करोगे और उनको बजा लाओगे।

दानि 3:16 सदरक और मीसक और 'अबदनजू ने बादशाह से 'अर्ज़ किया कि "ऐ नबूकदनज़र, इस हुक्म में हम तुझे जवाब देना ज़रूरी नहीं समझते। 3:17 देख, हमारा ख़ुदा जिसकी हम इबादत करते हैं, हम को आग की जलती भट्टी से छुड़ाने की क़ुदरत रखता है, और ऐ बादशाह वही हम को तेरे हाथ से छुड़ाएगा। 3:18 और नहीं, तो ऐ बादशाह तुझे मा'लूम हो कि हम तेरे मा'बूदों की इबादत नहीं करेंगे, और उस सोने की मूरत को जो तूने खड़ी की है सिज्दा नहीं करेंगे।

होसी 6:6 क्यूँकि मैं क़ुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ और ख़ुदा शनासी को सोख़्तनी क़ुर्बानियों से ज़्यादा चाहता हूँ।

यूए 2:28 'और इसके बाद मैं हर फ़र्द — ए — बशर पर अपना रूह नाज़िल करूँगा, और तुम्हारे बेटे बेटियाँ नबुव्वत करेंगे; तुम्हारे बूढ़े ख़्वाब और जवान रोया देखेंगे। 2:29 बल्कि मैं उन दिनों में ग़ुलामों और लौंडियों पर अपना रूह नाज़िल करूँगा। 2:30 और मैं ज़मीन — ओ — आसमान में 'अजायब ज़ाहिर करूँगा, या'नी ख़ून और आग और धुंवें के खम्बे। 2:31 इस से पहले कि ख़ुदावन्द का ख़ौफ़नाक रोज़ — ए — अज़ीम आए, सूरज तारीक और चाँद ख़ून हो जाएगा। 2:32 और जो कोई ख़ुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा, क्यूँकि कोह — ए — सिय्यून और येरूशलेम में, जैसा ख़ुदावन्द ने फ़रमाया है बच निकलने वाले होंगे, और बाक़ी लोगों में वह जिनको ख़ुदावन्द बुलाता है।

आमू 5:24 लेकिन 'अदालत को पानी की तरह और सदाक़त को बड़ी नहर की तरह जारी रख।

अब्द 1:15 क्यूँकि सब क़ौमों पर ख़ुदावन्द का दिन आ पहुँचा है। जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से किया जाएगा। तेरा किया तेरे सिर पर आएगा।

यूना 2:6 मैं पहाड़ों की गहराई तक ग़र्क़ हो गया ज़मीन के रास्ते हमेशा के लिए मुझ पर बंद हो गए; तो भी ऐ ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा तूने मेरी जान पाताल से बचाई। 2:7 जब मेरा दिल बेताब हुआ, तो मै ने ख़ुदावन्द को याद किया; और मेरी दुआ तेरी मुक़द्दस हैकल में तेरे सामने पहुँची 2:8 जो लोग झूटे मा'बूदों को मानते हैं, वह शफ़क़त से महरूम हो जाते है। 2:9 मै हम्द करता हुआ तेरे सामने क़ुर्बानी पेश करूँगा; मैं अपनी नज़्रें अदा करूँगा नजात ख़ुदावन्द की तरफ़ से है।"

मीका 6:8 ऐ इंसान, उसने तुझ पर नेकी ज़ाहिर कर दी है; ख़ुदावन्द तुझ से इसके सिवा क्या चाहता है कि तू इन्साफ़ करे और रहमदिली को 'अज़ीज़ रख्खे, और अपने ख़ुदा के सामने फ़रोतनी से चले?

नाहूम 1:2 ख़ुदावन्द ग़य्यूर और इन्तक़ाम लेनेवाला ख़ुदा है; हाँ ख़ुदावन्द इन्तक़ाम लेने वाला और क़हहार है; ख़ुदावन्द अपने मुख़ालिफ़ों से इन्तक़ाम लेता है और अपने दुश्मनों के लिए क़हर को क़ायम रखता है। 1:3 ख़ुदावन्द क़हर करने में धीमा और क़ुदरत में बढ़कर है, और मुजरिम को हरगिज़ बरी न करेगा। ख़ुदावन्द की राह गिर्दबाद और आँधी में है, और बादल उसके पाँव की गर्द हैं।

हबक़् 3:17 अगरचे अंजीर का दरख़्त न फूले, और डाल में फल न लगें, और ज़ैतून का फल ज़ाय' हो जाए, और खेतों में कुछ पैदावार न हो, और भेड़ख़ाने से भेड़ें जाती रहें, और तवेलों में जानवर न हों, 3:18 तोभी मैं ख़ुदावन्द से ख़ुश रहूँगा, और अपनी नजात बख़्श ख़ुदा से ख़ुश वक़्त हूँगा। 3:19 ख़ुदावन्द ख़ुदा, मेरी ताक़त है; वह मेरे पैर हिरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में चलाता है।

सफ़न 3:17 ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा, जो तुझ में है, क़ादिर है, वही बचा लेगा; वह तेरी वजह से शादमान होकर ख़ुशी करेगा; वह अपनी मुहब्बत में मसरूर रहेगा; वह गाते हुए तेरे लिए शादमानी करेगा।

हज्जी 1:4 "क्या तुम्हारे लिए महफ़ूज़ घरों में रहने का वक़्त है, जब कि यह घर वीरान पड़ा है? 1:5 और अब रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: तुम अपने चाल चलन पर ग़ौर करो। 1:6 तुम ने बहुत सा बोया, पर थोड़ा काटा। तुम खाते हो, पर आसूदा नहीं होते; तुम पीते हो, लेकिन प्यास नहीं बुझती। तुम कपड़े पहनते हो, पर गर्म नहीं होते; और मज़दूर अपनी मज़दूरी सूराख़दार थैली में जमा' करता है। 1:7 "रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि अपने चाल चलन पर ग़ौर करो।

ज़कर 12:10 और मैं दाऊद के घराने और येरूशलेम के बाशिन्दों पर फ़ज़ल और मुनाजात की रूह नाज़िल करूँगा, और वह उस पर जिसको उन्होंने छेदा है नज़र करेंगे और उसके लिए मातम करेंगे जैसा कौई अपने एकलौते के लिए करता है और उसके लिए तल्ख़ काम होंगे जैसे कोई अपने पहलौठे के लिए होता है।

मला 4:2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम की ता'ज़ीम करते हो, आफ़ताब — ए — सदाक़त तालू'अ होगा, और उसकी किरनों में शिफ़ा होगी; और तुम गावख़ाने के बछड़ों की तरह कूदो — फाँदोगे। 4:3 और तुम शरीरों को पायमाल करोगे, क्यूँकि उस रोज़ वह तुम्हारे पाँव तले की राख होंगे, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है।

मत्ती 28:18 ईसा ने पास आ कर उन से बातें की और कहा "आस्मान और ज़मीन का कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है। 28:19 पस तुम जा कर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ और उन को बाप और बेटे और रूह — उल — क़ुद्दूस के नाम से बपतिस्मा दो। 28:20 और उन को ये ता'लीम दो, कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुम को हुक्म दिया; और देखो, मैं दुनिया के आख़िर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।" (aiōn g165)

मरक़ुस 1:14 फिर यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद ईसा गलील में आया और ख़ुदा की ख़ुशख़बरी का ऐलान करने लगा। 1:15 और उसने कहा कि "वक़्त पूरा हो गया है और ख़ुदा की बादशाही नज़दीक आ गई है, तौबा करो और ख़ुशख़बरी पर ईमान लाओ।" 1:16 गलील की झील के किनारे — किनारे जाते हुए, शमौन और शमौन के भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते हुए देखा; क्यूँकि वो मछली पकड़ने वाले थे। 1:17 और ईसा ने उन से कहा, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।" 1:18 वो फ़ौरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

लूक़ा 4:18 "ख़ुदावन्द का रूह मुझ पर है, इसलिए कि उसने मुझे ग़रीबों को ख़ुशख़बरी देने के लिए मसह किया; उसने मुझे भेजा है क़ैदियों को रिहाई और अन्धों को बीनाई पाने की ख़बर सूनाऊँ, कुचले हुओं को आज़ाद करूँ।

यूहन्ना 3:16 "क्यूँकि ख़ुदा ने दुनियाँ से ऐसी मुहब्बत रख्खी कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़्श दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक न हो, बल्कि हमेशा की ज़िन्दगी पाए। (aiōnios g166) 3:17 क्यूँकि ख़ुदा ने बेटे को दुनियाँ में इसलिए नहीं भेजा कि दुनियाँ पर सज़ा का हुक्म करे, बल्कि इसलिए कि दुनियाँ उसके वसीले से नजात पाए।

आमाल 1:7 उसने उनसे कहा, "उन वक़्तों और मी'आदों का जानना, जिन्हें बाप ने अपने ही इख़्तियार में रख्खा है, तुम्हारा काम नहीं। 1:8 लेकिन जब रूह — उल — क़ुद्दूस तुम पर नाज़िल होगा तो तुम ताक़त पाओगे; और येरूशलेम और तमाम यहूदिया और सामरिया में, बल्कि ज़मीन के आख़ीर तक मेरे गवाह होगे।"

रोमियो 11:32 इसलिए कि ख़ुदा ने सब को नाफ़रमानी में गिरफ़्तार होने दिया ताकि सब पर रहम फ़रमाए। (eleēsē g1653) 11:33 वाह! ख़ुदा की दौलत और हिक्मत और इल्म क्या ही अज़ीम है उसके फ़ैसले किस क़दर पहुँच से बाहर हैं और उसकी राहें क्या ही बे'निशान हैं। 11:34 ख़ुदावन्द की अक़्ल को किसने जाना? या कौन उसका सलाहकार हुआ? 11:35 या किसने पहले उसे कुछ दिया है, जिसका बदला उसे दिया जाए? 11:36 क्यूँकि उसी की तरफ़ से, और उसी के वसीले से और उसी के लिए सब चीज़ें हैं; उसकी बड़ाई हमेशा तक होती रहे आमीन। (aiōn g165)

1 कुरिन्थियों 6:9 क्या तुम नहीं जानते कि बदकार ख़ुदा की बादशाही के वारिस न होंगे धोखा न खाओ न हरामकार ख़ुदा की बादशाही के वारिस होंगे न बुतपरस्त, न ज़िनाकार, न अय्याश, न लौंडे बाज़, 6:10 न चोर, न लालची, न शराबी, न गालियाँ बकने वाले, न ज़ालिम, 6:11 और कुछ तुम में ऐसे ही थे भी, 'मगर तुम ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम से और हमारे ख़ुदा के रूह से धूल गए और पाक हुए और रास्तबाज़ भी ठहरे।

2 कुरिन्थियों 5:17 इसलिए अगर कोई मसीह में है तो वो नया मख़लूक़ है पूरानी चीज़ें जाती रहीं; देखो वो नई हो गईं। 5:18 और वो सब चीज़ें ख़ुदा की तरफ़ से हैं जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल मिलाप की ख़िदमत हमारे सुपुर्द की। 5:19 मतलब ये है कि ख़ुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया और उन की तक़्सीरों को उनके ज़िम्मे न लगाया और उसने मेल मिलाप का पैग़ाम हमें सौंप दिया। 5:20 पस हम मसीह के एल्ची हैं और गोया हमारे वसीले से ख़ुदा इल्तिमास करता है; हम मसीह की तरफ़ से मिन्नत करते हैं कि ख़ुदा से मेल मिलाप कर लो। 5:21 जो गुनाह से वाक़िफ़ न था; उसी को उसने हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि हम उस में हो कर ख़ुदा के रास्तबाज़ हो जाएँ।

गलातियों 1:6 मैं ताअ'ज्जुब करता हूँ कि जिसने तुम्हें मसीह के फ़ज़ल से बुलाया, उससे तुम इस क़दर जल्द फिर कर किसी और तरह की ख़ुशख़बरी की तरफ़ माइल होने लगे, 1:7 मगर वो दूसरी नहीं; अलबत्ता कुछ ऐसे हैं जो तुम्हें उलझा देते और मसीह की ख़ुशख़बरी को बिगाड़ना चाहते हैं।

इफिसियों 2:1 और उसने तुम्हें भी ज़िन्दा किया जब अपने क़ुसूरों और गुनाहों की वजह से मुर्दा थे। 2:2 जिनमें तुम पहले दुनियाँ की रविश पर चलते थे, और हवा की 'अमलदारी के हाकिम या'नी उस रूह की पैरवी करते थे जो अब नाफ़रमानी के फ़रज़न्दों में तासीर करती है। (aiōn g165) 2:3 इनमें हम भी सबके सब पहले अपने जिस्म की ख़्वाहिशों में ज़िन्दगी गुज़ारते और जिस्म और 'अक़्ल के इरादे पुरे करते थे, और दूसरों की तरह फ़ितरत ग़ज़ब के फ़र्ज़न्द थे। 2:4 मगर ख़ुदा ने अपने रहम की दौलत से, उस बड़ी मुहब्बत की वजह से जो उसने हम से की, 2:5 कि अगर्चे हम अपने गुनाहों में मुर्दा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया आपको ख़ुदा के फ़ज़ल ही से नजात मिली है 2:6 और मसीह ईसा में शामिल करके उसके साथ जिलाया, और आसमानी मुक़ामों पर उसके साथ बिठाया। 2:7 ताकि वो अपनी उस महरबानी से जो मसीह ईसा में हम पर है, आनेवाले ज़मानो में अपने फ़ज़ल की अज़ीम दौलत दिखाए। (aiōn g165) 2:8 क्यूँकि तुम को ईमान के वसीले फ़ज़ल ही से नजात मिली है; और ये तुम्हारी तरफ़ से नहीं, ख़ुदा की बाख़्शिश है, 2:9 और न आ'माल की वजह से है, ताकि कोई फ़ख़्र न करे। 2:10 क्यूँकि हम उसकी कारीगरी हैं, और ईसा मसीह में उन नेक आ'माल के वास्ते पैदा हुए जिनको ख़ुदा ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया था।

फिलिप्पियों 3:7 लेकिन जितनी चीज़ें मेरे नफ़े' की थी उन्हीं को मैंने मसीह की ख़ातिर नुक़्सान समझ लिया है। 3:8 बल्कि मैंने अपने ख़ुदावन्द मसीह 'ईसा की पहचान की बड़ी ख़ूबी की वजह से सब चीज़ों का नुक़्सान उठाया और उनको कूड़ा समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 3:9 और उस में पाया जाऊँ, न अपनी उस रास्तबाज़ी के साथ जो शरी'अत की तरफ़ से है, बल्कि उस रास्तबाज़ी के साथ जो मसीह पर ईमान लाने की वजह से है और ख़ुदा की तरफ़ से ईमान पर मिलती है;

कुलुस्सियों 1:15 ख़ुदा को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो ख़ुदा की सूरत और कायनात का पहलौठा है। 1:16 क्यूँकि ख़ुदा ने उसी में सब कुछ पैदा किया, चाहे आस्मान पर हो या ज़मीन पर, आँखों को नज़र आए या न नज़र आएँ, चाहे शाही तख़्त, क़ुव्वतें, हुक्मरान या इख़्तियार वाले हों। सब कुछ मसीह के ज़रिए और उसी के लिए पैदा हुआ। 1:17 वही सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब कुछ क़ाईम रहता है। 1:18 और वह बदन यानी अपनी जमाअत का सर भी है। वही शुरूआत है, और चूँकि पहले वही मुर्दों में से जी उठा इस लिए वही उन में से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में पहले हो। 1:19 क्यूँकि ख़ुदा को पसन्द आया कि मसीह में उस की पूरी मामूरी सुकूनत करे 1:20 और वह मसीह के ज़रिए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, चाहे वह ज़मीन की हों चाहे आस्मान की। क्यूँकि उस ने मसीह के सलीब पर बहाए गए ख़ून के वसीले से सुलह — सलामती क़ाईम की।

1 थिस्सलुनीकियों **4:1** ग़रज़ ऐ भाइयों!, हम तुम से दरख़्वास्त करते हैं और ख़ुदावन्द ईसा में तुम्हें नसीहत करते हैं कि जिस तरह तुम ने हम से मुनासिब चाल चलने और ख़ुदा को ख़ुश करने की ता'लीम पाई और जिस तरह तुम चलते भी हो उसी तरह और तरक़्क़ी करते जाओ। **4:2** क्यूँकि तुम जानते हो कि हम ने तुम को ख़ुदावन्द ईसा की तरफ़ से क्या क्या हुक्म पहुँचाए। **4:3** चुनाँचे ख़ुदा की मर्ज़ी ये है कि तुम पाक बनो, या'नी हरामकारी से बचे रहो। **4:4** और हर एक तुम में से पाकीज़गी और इज़्ज़त के साथ अपने ज़र्फ़ को हासिल करना जाने। **4:5** न बुरी ख़्वाहिश के जोश से उन क़ौमों की तरह जो ख़ुदा को नहीं जानतीं

2 थिस्सलुनीकियों **3:6** ऐ भाइयों! हम अपने ख़ुदावन्द 'ईसा मसीह के नाम से तुम्हें हुक्म देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से किनारा करो जो बे क़ाइदा चलता है और उस रिवायत पर अमल नहीं करता जो उस को हमारी तरफ़ से पहुँची। **3:7** क्यूँकि आप जानते हो कि हमारी तरह किस तरह बनना चाहिए इसलिए कि हम तुम में बे क़ाइदा न चलते थे। **3:8** और किसी की रोटी मुफ़्त न खाते थे, बल्कि मेहनत और मशक़्क़त से रात दिन काम करते थे ताकि तुम में से किसी पर बोझ न डालें। **3:9** इसलिए नहीं कि हम को इख़्तियार न था बल्कि इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे वास्ते नमूना ठहराएँ ताकि तुम हमारी तरह बनो **3:10** और जब हम तुम्हारे पास थे उस वक़्त भी तुम को ये हुक्म देते थे; कि जिसे मेहनत करना मन्ज़ूर न हो वो खाने भी न पाए।

1 तीमुथियुस **2:1** पस मैं सबसे पहले ये नसीहत करता हूँ, कि मुनाजातें, और दू'आएँ और, इल्तिजाएँ और शुक्रगुज़ारियाँ सब आदमियों के लिए की जाएँ, **2:2** बादशाहों और सब बड़े मरतबे वालों के वास्ते इसलिए कि हम कमाल दीनदारी और सन्जीदगी से चैन सुकून के साथ ज़िन्दगी गुजारें। **2:3** ये हमारे मुन्जी ख़ुदा के नज़दीक 'उम्दा और पसन्दीदा है। **2:4** वो चाहता है कि सब आदमी नजात पाएँ, और सच्चाई की पहचान तक पहुंचें। **2:5** क्यूँकि ख़ुदा एक है, और ख़ुदा और इंसान के बीच में दर्मियानी भी एक या'नी मसीह ईसा जो इंसान है।

2 तीमुथियुस **2:8** 'ईसा मसीह को याद रख जो मुर्दों में से जी उठा है और दाऊद की नस्ल से है मेरी उस ख़ुशख़बरी के मुवाफ़िक़। **2:9** जिसके लिए मैं बदकार की तरह दुःख उठाता हूँ यहाँ तक कि क़ैद हूँ मगर ख़ुदा का कलाम क़ैद नहीं। **2:10** इसी वजह से मैं नेक लोगों की ख़ातिर सब कुछ सहता हूँ ताकि वो भी उस नजात को जो मसीह 'ईसा में है अबदी जलाल समेत हासिल करें। **(aiōnios g166)**

तीतुस **2:11** क्यूँकि ख़ुदा का वो फ़ज़ल ज़ाहिर हुआ है, जो सब आदमियों की नजात का ज़रिया है, **2:12** और हमें तालीम देता है ताकि बेदीनी और दुनियावी ख़्वाहिशों का इन्कार करके इस मौजूदा जहान में परहेज़गारी और रास्तबाज़ी और दीनदारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें; **(aiōn g165)** **2:13** और उस मुबारिक़ उम्मीद या'नी अपने बुज़ुर्ग ख़ुदा और मुन्जी ईसा मसीह के जलाल के ज़ाहिर होने के मुन्तज़िर रहें। **2:14** जिस ने अपने आपको हमारे लिए दे दिया, ताकि फ़िदया होकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाले, और पाक करके अपनी ख़ास मिल्कियत के लिए ऐसी उम्मत बनाए जो नेक कामों में सरगर्म हो।

फिलेमोन **1:3** फ़ज़ल और इत्मीनान हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें हासिल होता रहे। **1:4** मैं तेरी उस मुहब्बत का और ईमान का हाल सुन कर, जो सब मुक़द्दसों के साथ और ख़ुदावन्द ईसा पर है' **1:5** हमेशा अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ, और अपनी दु'आओं में तुझे याद करता हूँ। **1:6** ताकि तेरे ईमान की शिराकत तुम्हारी हर ख़ूबी की पहचान में मसीह के वास्ते मु' अस्सिर हो। **1:7** क्यूँकि ऐ भाई! मुझे तेरी मुहब्बत से बहुत ख़ुशी और तसल्ली हुई, इसलिए कि तेरी वजह से मुक़द्दसों के दिल ताज़ा हुए हैं।

इब्रानियों **1:1** पुराने ज़माने में ख़ुदा ने बाप — दादा से हिस्सा — ब — हिस्सा और तरह — ब — तरह नबियों के ज़रिए कलाम करके, **1:2** इस ज़माने के आख़िर में हम से बेटे के ज़रिए कलाम किया, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस ठहराया और जिसके वसीले से उसने आलम भी पैदा किए। **(aiōn g165)** **1:3** वो उसके जलाल की रोशनी और उसकी ज़ात का नक़्श होकर सब चीज़ों को अपनी क़ुदरत के कलाम से संभालता है। वो गुनाहों को धोकर 'आलम — ए — बाला पर ख़ुदा की दहनी तरफ़ जा बैठा,

याक़ूब **1:16** ऐ, मेरे प्यारे भाइयों धोखा न खाना। **1:17** हर अच्छी बख़्शिश और कामिल इनाम ऊपर से है और नूरों के बाप की तरफ़ से मिलता है जिस में न कोई तब्दीली हो सकती है और न गरदिश के वजह से उस पर साया पड़ता है। **1:18** उसने अपनी मर्ज़ी से हमें कलाम — ऐ — हक़ के वसीले से पैदा किया ताकि उसकी मुख़ालिफ़त में से हम एक तरह के फल हो।

1 पतरस **3:18** इसलिए कि मसीह ने भी या'नी रास्तबाज़ ने नारास्तों के लिए, गुनाहों के बा'इस एक बार दुःख उठाया ताकि हम को ख़ुदा के पास पहुँचाए; वो जिस्म के ऐ'तबार से मारा गया, लेकिन रूह के ऐ'तबार से तो ज़िन्दा किया गया।

2 पतरस **1:3** क्यूँकि ख़ुदा की इलाही क़ुदरत ने वो सब चीज़ें जो ज़िन्दगी और दीनदारी के मुता'ल्लिक़ हैं, हमें उसकी पहचान के वसीले से 'इनायत की, जिसने हम को अपने ख़ास जलाल और नेकी के ज़रिए से बुलाया। **1:4** जिनके ज़रिए उसने हम से क़ीमती और निहायत

बड़े वा'दे किए; ताकि उनके वसीले से तुम उस ख़राबी से छूटकर, जो दुनिया में बुरी ख़्वाहिश की वजह से है, ज़ात — ए — इलाही में शरीक हो जाओ।

1 यूहन्ना 2:1 ऐ मेरे बच्चों! ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ तुम गुनाह न करो; और अगर कोई गुनाह करे, तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है, या'नी ईसा मसीह रास्तबाज़; 2:2 और वही हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा है, और न सिर्फ़ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।

2 यूहन्ना 1:7 क्यूँकि बहुत से ऐसे गुमराह करने वाले दुनिया में निकल खड़े हुए हैं, जो 'ईसा मसीह के मुजस्सिम होकर आने का इक़रार नहीं करते। गुमराह करनेवाला मुख़ालिफ़ — ए — मसीह यही है।

3 यूहन्ना 1:4 मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई ख़ुशी नहीं कि मैं अपने बेटो को हक़ पर चलते हुए सुनूँ।

यहूदाह 1:3 ऐ प्यारों! जिस वक़्त मैं तुम को उस नजात के बारे में लिखने में पूरी कोशिश कर रहा था जिसमें हम सब शामिल हैं, तो मैंने तुम्हें ये नसीहत लिखना ज़रूर जाना कि तुम उस ईमान के वास्ते मेहनत करो जो मुक़द्दसों को एक बार सौंपा गया था। 1:4 क्यूँकि कुछ ऐसे शख़्स चुपके से हम में आ मिले हैं, जिनकी इस सज़ा का ज़िक्र पाक कलाम में पहले से लिखा गया था: ये बेदीन हैं, और हमारे ख़ुदा के फ़ज़ल को बुरी आदतों से बदल डालते हैं, और हमारे वाहिद मालिक और ख़ुदावन्द ईसा मसीह का इन्कार करते हैं।

मुकाशफ़ा 3:19 मैं जिन जिन को 'अज़ीज़ रखता हूँ, उन सब को मलामत और हिदायत करता हूँ; पस सरगर्म हो और तौबा कर। 3:20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोलेगा, तो मैं उसके पास अन्दर जाकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वो मेरे साथ। 3:21 जो ग़ालिब आए मैं उसे अपने साथ तख़्त पर बिठाऊँगा, जिस तरह मैं ग़ालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख़्त पर बैठ गया। 3:22 जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है।"

रीडर्स गाईड

उर्दू at AionianBible.org/Readers-Guide

The Aionian Bible republishes public domain and Creative Common Bible texts that are 100% free to copy and print. The original translation is unaltered and notes are added to help your study. The notes show the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of afterlife destinies.

Who has the authority to interpret the Bible and examine the underlying Hebrew and Greek words? That is a good question! We read in 1 John 2:27, *"As for you, the anointing which you received from him remains in you, and you do not need for anyone to teach you. But as his anointing teaches you concerning all things, and is true, and is no lie, and even as it taught you, you remain in him."* Every Christian is qualified to interpret the Bible! Now that does not mean we will all agree. Each of us is still growing in our understanding of the truth. However, it does mean that there is no infallible human or tradition to answer all our questions. Instead the Holy Spirit helps each of us to know the truth and grow closer to God and each other.

The Bible is a library with 66 books in the Protestant Canon. The best way to learn God's word is to read entire books. Read the book of Genesis. Read the book of John. Read the entire Bible library. Topical studies and cross-referencing can be good. However, the safest way to understand context and meaning is to read whole Bible books. Chapter and verse numbers were added for convenience in the 16th century, but unfortunately they can cause the Bible to seem like an encyclopedia. The Aionian Bible is formatted with simple verse numbering, minimal notes, and no cross-referencing in order to encourage the reading of Bible books.

Bible reading must also begin with prayer. Any Christian is qualified to interpret the Bible with God's help. However, this freedom is also a responsibility because without the Holy Spirit we cannot interpret accurately. We read in 1 Corinthians 2:13-14, *"And we speak of these things, not with words taught by human wisdom, but with those taught by the Spirit, comparing spiritual things with spiritual things. Now the natural person does not receive the things of the Spirit of God, for they are foolishness to him, and he cannot understand them, because they are spiritually discerned."* So we cannot understand in our natural self, but we can with God's help through prayer.

The Holy Spirit is the best writer and he uses literary devices such as introductions, conclusions, paragraphs, and metaphors. He also writes various genres including historical narrative, prose, and poetry. So Bible study must spiritually discern and understand literature. Pray, read, observe, interpret, and apply. Finally, *"Do your best to present yourself approved by God, a worker who does not need to be ashamed, properly handling the word of truth."* 2 Timothy 2:15. *"God has granted to us his precious and exceedingly great promises; that through these you may become partakers of the divine nature, having escaped from the corruption that is in the world by lust. Yes, and for this very cause adding on your part all diligence, in your faith supply moral excellence; and in moral excellence, knowledge; and in knowledge, self-control; and in self-control patience; and in patience godliness; and in godliness brotherly affection; and in brotherly affection, love. For if these things are yours and abound, they make you to be not idle nor unfruitful to the knowledge of our Lord Jesus Christ,"* 2 Peter 1:4-8.

लगत

उर्दू at AionianBible.org/Glossary

The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven special words to help us better understand the extent of God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies. The original translation is unaltered and a note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. Compare the meanings below to the Strong's Concordance and Glossary definitions.

Abyssos g12
Greek: proper noun, place
Usage: 9 times in 3 books, 6 chapters, and 9 verses
Meaning:
Temporary prison for special fallen angels such as Apollyon, the Beast, and Satan.

aïdios g126
Greek: adjective
Usage: 2 times in Romans 1:20 and Jude 6
Meaning:
Lasting, enduring forever, eternal.

aiōn g165
Greek: noun
Usage: 127 times in 22 books, 75 chapters, and 102 verses
Meaning:
A lifetime or time period with a beginning and end, an era, an age, the completion of which is beyond human perception, but known only to God the creator of the aiōns, Hebrews 1:2. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

aiōnios g166
Greek: adjective
Usage: 71 times in 19 books, 44 chapters, and 69 verses
Meaning:
From start to finish, pertaining to the age, lifetime, entirety, complete, or even consummate. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Koine Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

eleēsē g1653
Greek: verb, aorist tense, active voice, subjunctive mood, 3rd person singular
Usage: 1 time in this conjugation, Romans 11:32
Meaning:
To have pity on, to show mercy. Typically, the subjunctive mood indicates possiblity, not certainty. However, a subjunctive in a purpose clause is a resulting action as certain as the causal action. The subjunctive in a purpose clause functions as an indicative, not an optative. Thus, the grand conclusion of grace theology in Romans 11:32 must be clarified. God's mercy on all is not a possibility, but a certainty. See ntgreek.org.

Geenna g1067
Greek: proper noun, place
Usage: 12 times in 4 books, 7 chapters, and 12 verses
Meaning:
Valley of Hinnom, Jerusalem's trash dump, a place of ruin, destruction, and judgment in this life, or the next, though not eternal to Jesus' audience.

Hadēs g86
Greek: proper noun, place
Usage: 11 times in 5 books, 9 chapters, and 11 verses
Meaning:
Synonomous with Sheol, though in New Testament usage Hades is the temporal place of punishment for deceased unbelieving mankind, distinct from Paradise for deceased believers.

Limnē Pyr g3041 g4442
Greek: proper noun, place
Usage: Phrase 5 times in the New Testament
Meaning:
Lake of Fire, final punishment for those not named in the Book of Life, prepared for the Devil and his angels, Matthew 25:41.

Sheol h7585
Hebrew: proper noun, place
Usage: 66 times in 17 books, 50 chapters, and 64 verses
Meaning:
The grave or temporal afterlife world of both the righteous and unrighteous, believing and unbelieving, until the general resurrection.

Tartaroō g5020
Greek: proper noun, place
Usage: 1 time in 2 Peter 2:4
Meaning:
Temporary prison for particular fallen angels awaiting final judgment.

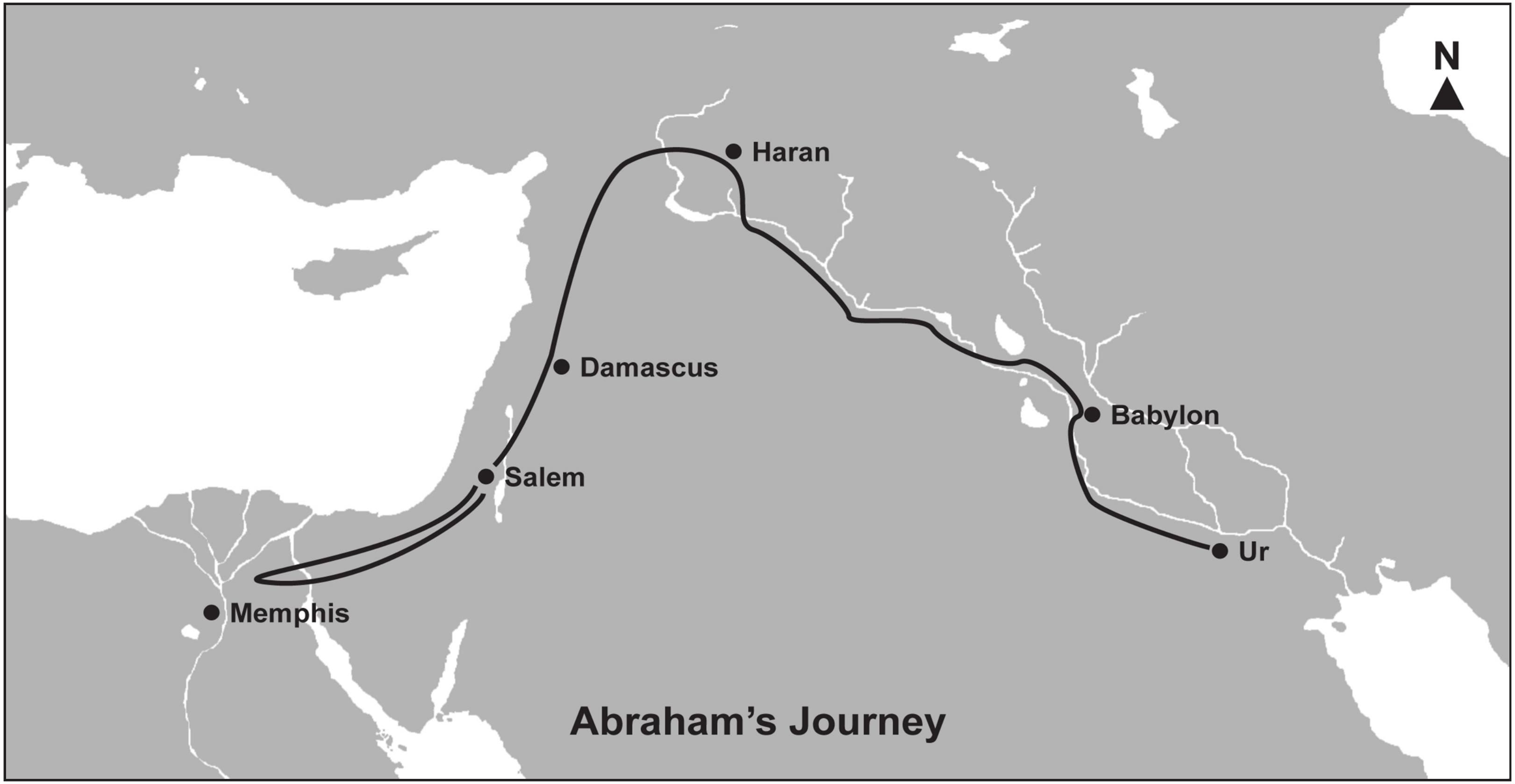

यह ईमान का काम था कि अब्रहाम ने ख़ुदा की सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़ कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। - इब्रानियों 11:8

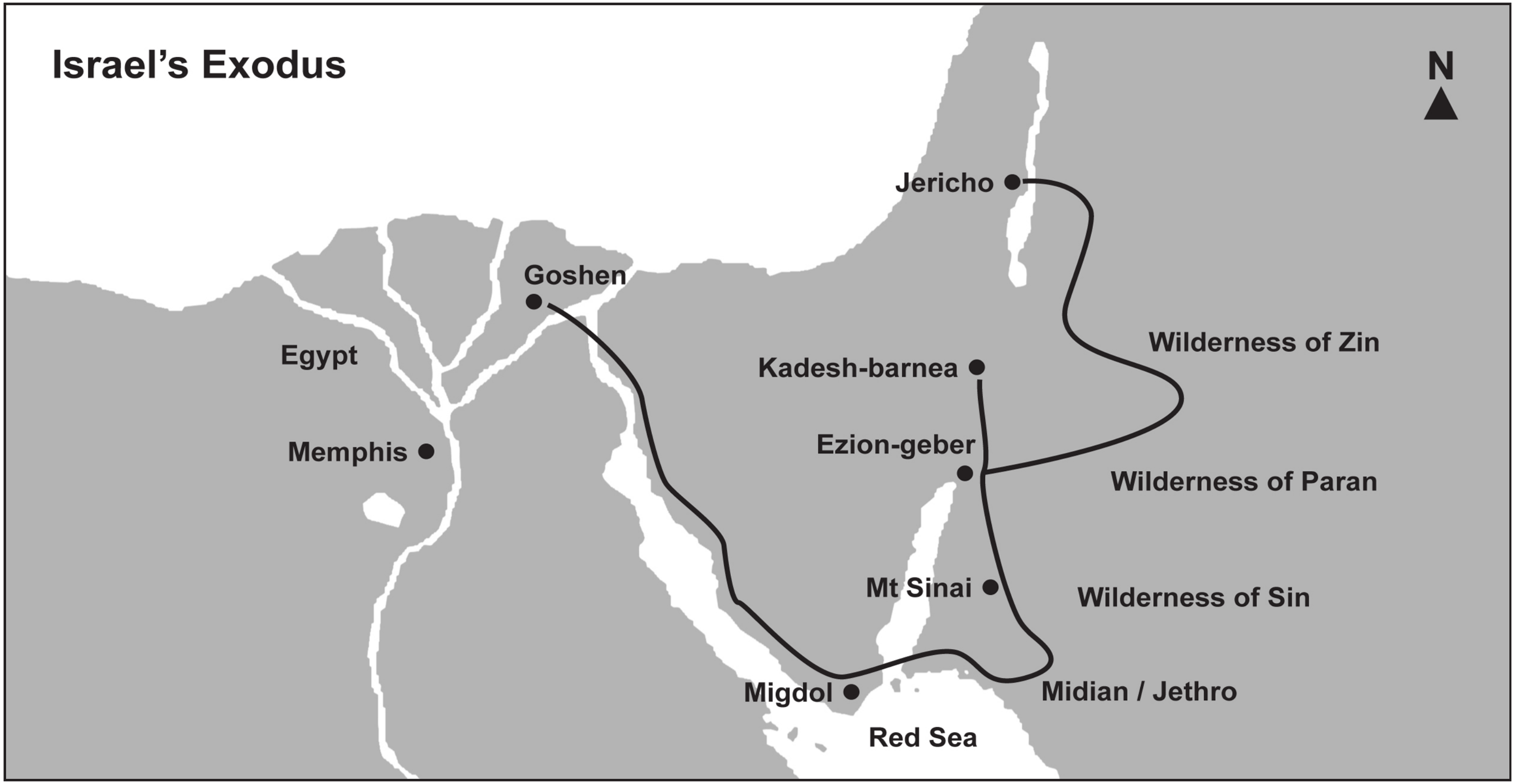

और जब फ़िर'औन ने उन लोगों को जाने की इजाज़त दे दी तो ख़ुदा इनको फ़िलिस्तियों के मुल्क के रास्ते से नहीं ले गया, अगरचे उधर से नज़दीक पड़ता; क्यूँकि ख़ुदा ने कहा, ऐसा न हो कि यह लोग लड़ाई — भिड़ाई देख कर पछताने लगें और मिस्र को लौट जाएँ। - ख़ुरु 13:17

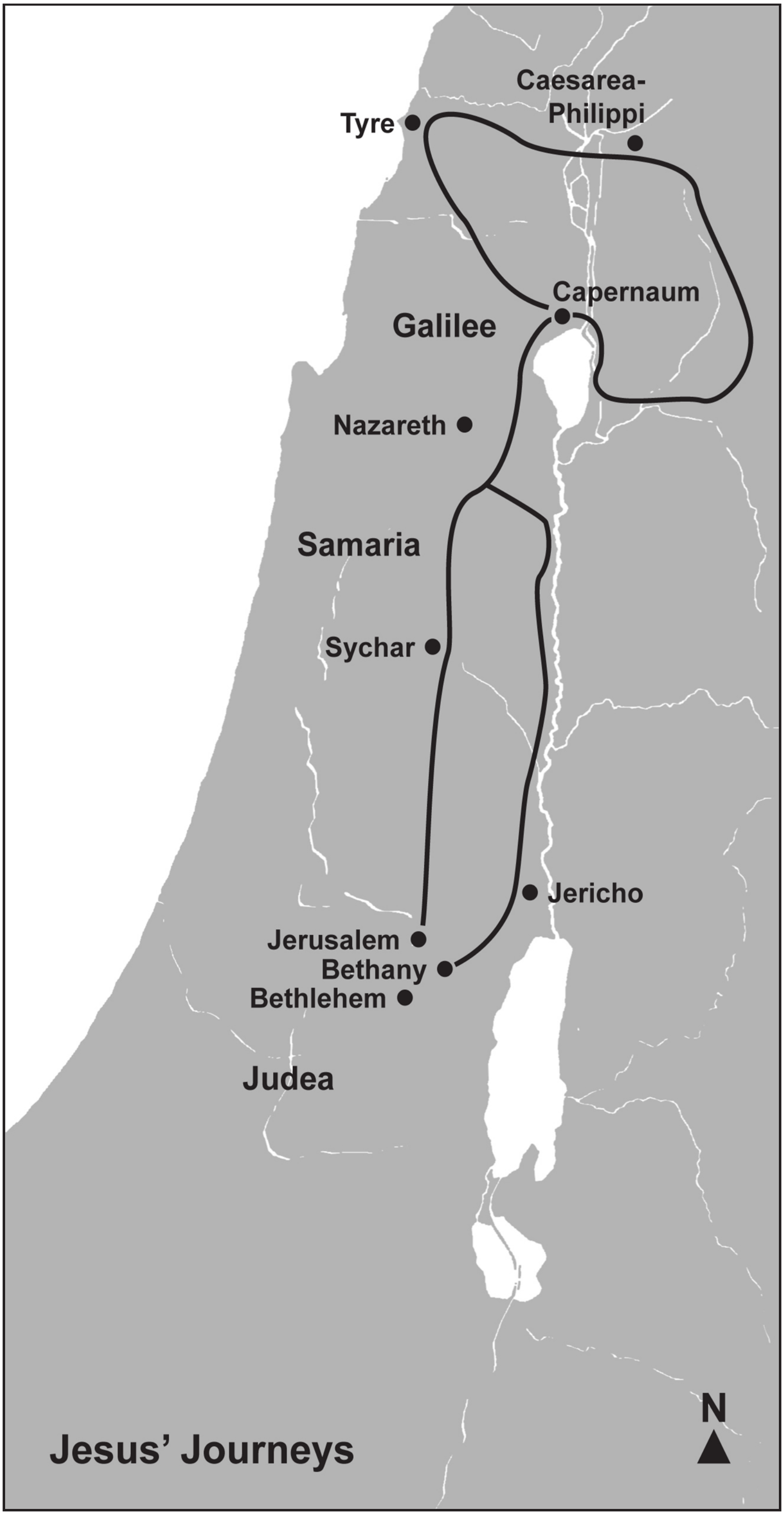

क्यूँकि इब्न — ए आदम भी इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान बहुतेरों के बदले फ़िदया में दे। - मरकुस 10:45

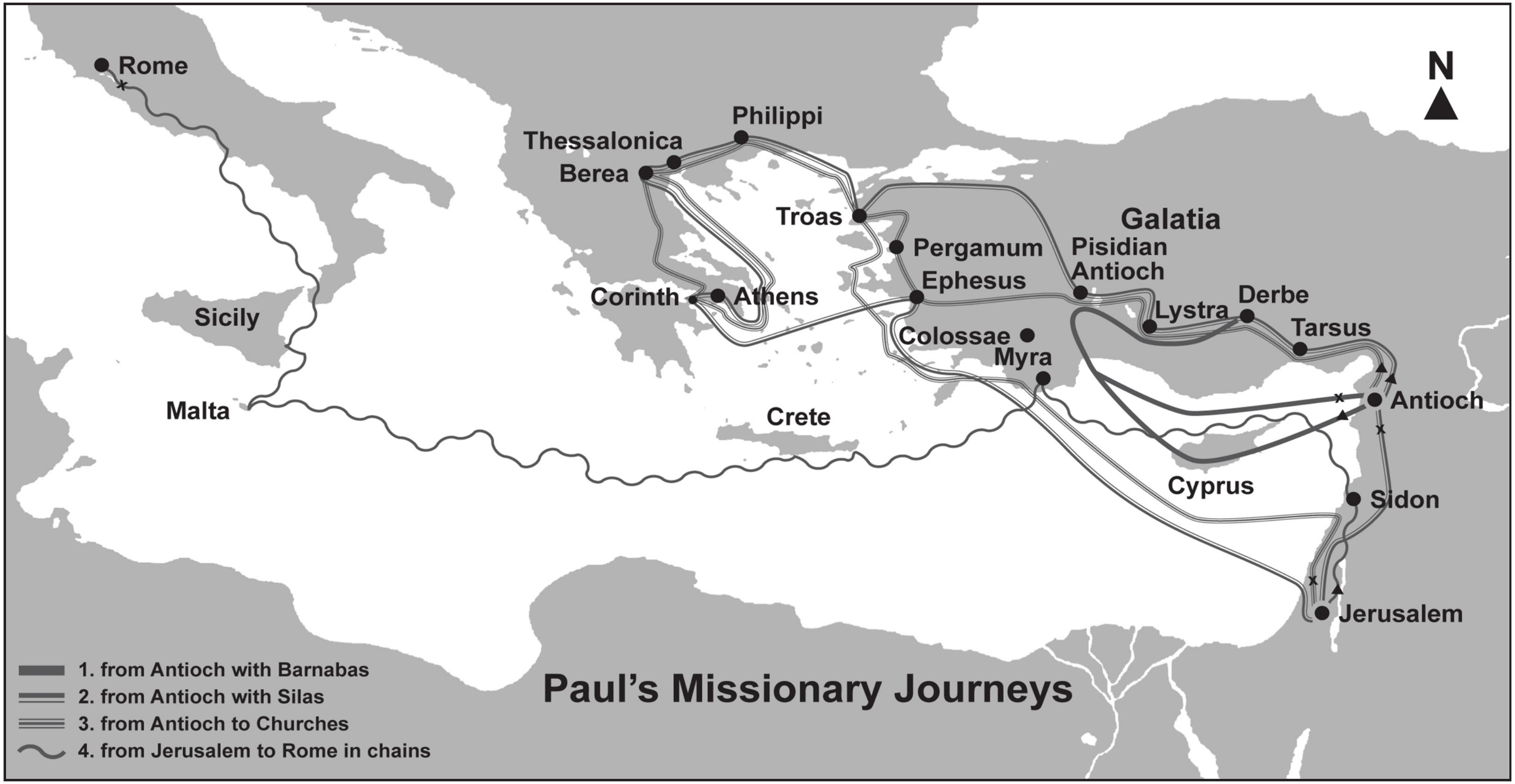

पौलुस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का बन्दा है और रसूल होने के लिए बुलाया गया और ख़ुदा की उस ख़ुशख़बरी के लिए अलग किया गया। - रोमियो 1:1

Creation 4004 B.C.

Adam and Eve created	4004
Tubal-cain forges metal	3300
Enoch walks with God	3017
Methuselah dies at age 969	2349
God floods the Earth	2349
Tower of Babel thwarted	2247
Abraham sojourns to Canaan	1922
Jacob moves to Egypt	1706
Moses leads Exodus from Egypt	1491
Gideon judges Israel	1245
Ruth embraces the God of Israel	1168
David installed as King	1055
King Solomon builds the Temple	1018
Elijah defeats Baal's prophets	896
Jonah preaches to Nineveh	800
Assyrians conquer Israelites	721
King Josiah reforms Judah	630
Babylonians capture Judah	605
Persians conquer Babylonians	539
Cyrus frees Jews, rebuilds Temple	537
Nehemiah rebuilds the wall	454
Malachi prophecies the Messiah	416
Greeks conquer Persians	331
Seleucids conquer Greeks	312
Hebrew Bible translated to Greek	250
Maccabees defeat Seleucids	165
Romans subject Judea	63
Herod the Great rules Judea	37

(The Annals of the World, James Uusher)

Jesus Christ born 4 B.C.

New Heavens and Earth

	Christ returns for his people
1956	Jim Elliot martyrd in Ecuador
1830	John Williams reaches Polynesia
1731	Zinzendorf leads Moravian mission
1614	Japanese kill 40,000 Christians
1572	Jesuits reach Mexico
1517	Martin Luther leads Reformation
1455	Gutenberg prints first Bible
1323	Franciscans reach Sumatra
1276	Ramon Llull trains missionaries
1100	Crusades tarnish the church
1054	The Great Schism
997	Adalbert marytyrd in Prussia
864	Bulgarian Prince Boris converts
716	Boniface reaches Germany
635	Alopen reaches China
569	Longinus reaches Alodia / Sudan
432	Saint Patrick reaches Ireland
397	Carthage ratifies Bible Canon
341	Ulfilas reaches Goth / Romania
325	Niceae proclaims God is Trinity
250	Denis reaches Paris, France
197	Tertullian writes Christian literature
70	Titus destroys the Jewish Temple
61	Paul imprisoned in Rome, Italy
52	Thomas reaches Malabar, India
39	Peter reaches Gentile Cornelius
33	Holy Spirit empowers the Church

(Wikipedia, Timeline of Christian missions)

Resurrected 33 A.D.

<table>
<tr><td colspan="3">What are we?</td><td colspan="2">Genesis 1:26 - 2:3</td></tr>
<tr><td colspan="3">How are we sinful?</td><td colspan="2">Romans 5:12-19</td></tr>
<tr><td colspan="3" rowspan="3">Where are we?</td><td colspan="2"></td></tr>
<tr><td colspan="2">Innocence</td></tr>
<tr><td>Eternity Past</td><td>Creation 4004 B.C.</td></tr>
<tr><td rowspan="12">Who are we?</td><td rowspan="3">God</td><td>Father</td><td rowspan="3">John 10:30

God’s perfect fellowship</td><td rowspan="7">Genesis 1:31

God’s perfect fellowship with Adam in The Garden of Eden</td></tr>
<tr><td>Son</td></tr>
<tr><td>Holy Spirit</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Mankind</td><td>Living</td><td rowspan="9">Genesis 1:1

No Creation
No people</td></tr>
<tr><td>Deceased believing</td></tr>
<tr><td>Deceased unbelieving</td></tr>
<tr><td rowspan="6">Angels</td><td>Holy</td></tr>
<tr><td>Imprisoned</td><td rowspan="5">Genesis 1:31

No Fall
No unholy Angels</td></tr>
<tr><td>Fugitive</td></tr>
<tr><td>First Beast</td></tr>
<tr><td>False Prophet</td></tr>
<tr><td>Satan</td></tr>
<tr><td colspan="3">Why are we?</td><td colspan="2">Romans 11:25-36, Ephesian 2:7</td></tr>
</table>

Mankind is created in God's image, male and female He created us

Sin entered the world through Adam and then death through sin

When are we? ▼

<table>
<tr><td colspan="4">Fallen</td><td>Glory</td></tr>
<tr><td>Fall to sin
No Law</td><td>Moses' Law
1500 B.C.</td><td>Christ
33 A.D.</td><td>Church Age
Kingdom Age</td><td>New Heavens
and Earth</td></tr>
<tr><td colspan="4">1 Timothy 6:16
Living in unapproachable light</td><td rowspan="7">Acts 3:21
Philippians 2:11
Revelation 20:3

God's perfectly restored fellowship with all Mankind praising Christ as Lord in the Holy City</td></tr>
<tr><td colspan="2">John 8:58
Pre-incarnate</td><td>John 1:14
Incarnate</td><td>Luke 23:43
Paradise</td></tr>
<tr><td colspan="2">Psalm 139:7
Everywhere</td><td colspan="2">John 14:17
Living in believers</td></tr>
<tr><td colspan="4">Ephesians 2:1-5
Serving the Savior or Satan on Earth</td></tr>
<tr><td colspan="4">Luke 16:22
Blessed in Paradise</td></tr>
<tr><td colspan="4">Luke 16:23, Revelation 20:5,13
Punished in Hades until the final judgment</td></tr>
<tr><td colspan="4">Hebrews 1:14
Serving mankind at God's command</td></tr>
<tr><td colspan="4">2 Peter 2:4, Jude 6
Imprisoned in Tartarus</td><td rowspan="4">Matthew 25:41
Revelation 20:10

Lake of Fire prepared for the Devil and his Angels</td></tr>
<tr><td colspan="3" rowspan="3">1 Peter 5:8, Revelation 12:10

Rebelling against Christ
Accusing mankind</td><td>Revelation 20:13
Thalaasa</td></tr>
<tr><td>Revelation 19:20
Lake of Fire</td></tr>
<tr><td>Revelation 20:2
Abyss</td></tr>
</table>

For God has bound all over to disobedience in order to show mercy to all

मुक़र्रर

उर्दू at AionianBible.org/Destiny

The Aionian Bible shows the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of after-life destinies. The underlying Hebrew and Greek words typically translated as *Hell* show us that there are not just two after-life destinies, Heaven or Hell. Instead, there are a number of different locations, each with different purposes, different durations, and different inhabitants. Locations include 1) Old Testament *Sheol* and New Testament *Hadēs*, 2) *Geenna*, 3) *Tartaroō*, 4) *Abyssos*, 5) *Limnē Pyr*, 6) *Paradise*, 7) *The New Heaven*, and 8) *The New Earth*. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The key observation is that fallen angels will be present at the final judgment, 2 Peter 2:4 and Jude 6. Traditionally, we understand the separation of the Sheep and the Goats at the final judgment to divide believing from unbelieving mankind, Matthew 25:31-46 and Revelation 20:11-15. However, the presence of fallen angels alternatively suggests that Jesus is separating redeemed mankind from the fallen angels. We do know that Jesus is the helper of mankind and not the helper of the Devil, Hebrews 2. We also know that Jesus has atoned for the sins of all mankind, both believer and unbeliever alike, 1 John 2:1-2. Deceased believers are rewarded in Paradise, Luke 23:43, while unbelievers are punished in Hades as the story of Lazarus makes plain, Luke 16:19-31. Yet less commonly known, the punishment of this selfish man and all unbelievers is before the final judgment, is temporal, and is punctuated when Hades is evacuated, Revelation 20:13. So is there hope beyond Hades for unbelieving mankind? Jesus promised, *"the gates of Hades will not prevail,"* Matthew 16:18. Paul asks, *"Hades where is your victory?"* 1 Corinthians 15:55. John wrote, *"Hades gives up,"* Revelation 20:13.

Jesus comforts us saying, *"Do not be afraid,"* because he holds the keys to *unlock* death and Hades, Revelation 1:18. Yet too often our *Good News* sounds like a warning to *"be afraid"* because Jesus holds the keys to *lock* Hades! Wow, we have it backwards! Hades will be evacuated! And to guarrantee hope, once emptied, Hades is thrown into the Lake of Fire, never needed again, Revelation 20:14.

Finally, we read that anyone whose name is not written in the Book of Life is thrown into the Lake of Fire, the second death, with no exit ever mentioned or promised, Revelation 21:1-8. So are those evacuated from Hades then, *"out of the frying pan, into the fire?"* Certainly, the Lake of Fire is the destiny of the Goats. But, do not be afraid. Instead, read the Bible's explicit mention of the purpose of the Lake of Fire and the identity of the Goats, *"Then he will say also to those on the left hand, 'Depart from me, you cursed, into the consummate fire which is prepared for... the devil and his angels,'"* Matthew 25:41. Bad news for the Devil. Good news for all mankind!

Faith is not a pen to write your own name in the Book of Life. Instead, faith is the glasses to see that the love of Christ for all mankind has already written our names in Heaven. Jesus said, *"You did not choose me, but I chose you," John 15:16*. Though unbelievers will suffer regrettable punishment in Hades, redeemed mankind will never enter the Lake of Fire, prepared for the devil and his angels. And as God promised, all mankind will worship Christ together forever, Philippians 2:9-11.

पस तुम जा कर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ और उन को बाप और बेटे और रूह — उल — क़ुद्दूस के नाम से बपतिस्मा दो। - मत्ती 28:19